35

हिन्दी-शेक्सपियर

Hindi Shakespear
V. 6.

षष्ठ भाग



गंगाप्रसाद, एम. ए.

हिन्दी-शेक्सपियर

छठा भाग

लेखक

गंगाप्रसाद एम० ए०

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, प्रयाग

१९१४

मूल्य ॥)

Printed and published by Apurva Krishna Bose, at the Indian Press, Allahabad.

The eye of Genius glistens to admire
How memory hails the sound of Shakespeare's lyre.
One tear I'll shed to form a crystal shrine
Of all that's grand, immortal and divine.
Let princes o'er their subject kingdoms rule,
'Tis shakspeare's province to command the soul!

—*L. Buonaparte.*

विषय-सूची

—:०:—

———

Moti Lal Kaul
Dec. '48

शेक्सपियर और बेकन

(छठे भाग की जीवनी)

पिछले पाँच भागों में हम शेक्सपियर के जीवन और ग्रन्थों के विषय में बहुत कुछ लिख चुके हैं। यहाँ अपने पाठकों के सूचनार्थ एक और विषय संक्षेप से लिखते हैं। आशा है कि यह भी उनको अप्रिय न होगा।

थोड़े दिनों से पाश्चात्य देशों में एक विचित्र लहर उठ रही है, जिसका नाम हम ऐतिहासिक संदेह रख सकते हैं। इससे हमारा तात्पर्य्य यह है कि पाश्चात्य विद्वान् प्रायः ऐतिहासिक पुरुषों के अस्तित्व पर शंका कर रहे हैं। बहुतों का मत है कि ईसा मसीह ने कभी संसार में जन्म नहीं लिया और जो काम उसके जीवन से सम्बद्ध माने जाते हैं वे अन्य पुरुषों ने उसके नाम के साथ मिला दिये हैं। बहुत से मानते हैं कि महात्मा बुद्ध का नाम कल्पनामात्र ही है और शाक्यमुनि नाम का कोई पुरुष नहीं था। बहुत से विद्वानों का सिद्धान्त है कि रामायण कोई ऐतिहासिक ग्रन्थ नहीं, किन्तु उपन्यास मात्र है। इसी प्रकार

विचित्रबुद्धि पुरुष बैठे बिठाये नये नये सिद्धान्त अपने विलक्षण मस्तिष्क से निकाला करते हैं।

महाकवि शेक्सपियर भी वैसी ही कल्पनाओं से नहीं बच सका और यद्यपि आज तक कोई मनुष्य शेक्सपियर के अस्तित्व से इनकार नहीं कर सका परन्तु ६३ वर्ष से बहुत से लोग यह मानने लगे हैं कि जो नाटक इस महाकवि के बनाये प्रसिद्ध हैं उन सब का वास्तविक बनाने वाला फ़ान्सिस बेकन था, जो १५६१ ईसवी में उत्पन्न हुआ और १६२६ ईसवी में मरा। इस शंका का सब से पहला करने वाला जोज़िफ़ हार्ट था जिसने १८४८ ईसवी में 'रोमांस आफ़ याटिंग' (Romance of Yachting) नामी पुस्तक में शेक्सपियर की महत्ता पर शंका की। ७ अगस्त १८५२ ईसवी के चेम्बर्स जर्नल नामक पत्र में इसी विषय पर एक और लेख निकला। जनवरी १८५६ ई० के 'पटनम्समंथली' (Patnam's Monthly) नामक दूसरे पत्र में मिस डेलिया नामक बेकनवंशीया कुमारी ने एक लेख में बड़ी विचित्र युक्तियों से यह दिखाया कि यह सब नाटक शेक्सपियर के नहीं, किन्तु बेकन के लिखे हुए हैं। इस सिद्धान्त का प्रचार करने वाली सब से बड़ी यही कुमारी थी, जो पागल होकर २ सितम्बर १८५९ ईसवी में मर गई। परन्तु इसके पश्चात् अमेरिका वालों ने इस सिद्धान्त को बड़ी गम्भीर-दृष्टि से देखा और १८६६ ई० में नेथेनियल होम्स नामक एक वकील ने बेकन के पक्ष में एक बहुत

बड़ी पुस्तक लिखी। १८८७ ई० में मिस्टर इग्नेशियस डौनेली ने, जो मिनेसोटा का रहनेवाला था, 'दीग्रेट क्रुष्टो ग्राम' नामक पुस्तक में सिद्ध किया कि न केवल शेक्सपियर के नाटक ही किन्तु मार्लो के नाटक, मौण्टेन के लेख और बर्टन का 'एनोटमी और मेलंकली भी बेकन के लिखे हुए हैं। इन सबका उत्तर लन्दन के प्रसिद्ध पत्र 'दी टाइम्स' में दिसम्बर १९०१ और जनवरी १९०२ में निकल चुका है।

१८८५ ई० में इन सिद्धान्तों का प्रचार करने के लिए एक सभा लन्दन में स्थापित हुई, जिसने बेकोनियाना नामक एक पत्र निकालना आरम्भ किया। १८९२ में चिकागो से भी इसी नाम का एक त्रैमासिक पत्र निकला। कहते हैं कि इस विषय की अब तक इस ६३ वर्ष के भीतर ५०० से अधिक पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। परन्तु बहुत से प्रमाण इस बात के हैं कि लार्ड बेकन इन नाटकों को नहीं लिख सकता था।

फ़्रांसिस बेकन एलीज़िबिथ के समय का बहुत बड़ा फ़िलासफ़र और गद्य-लेखक हो गया है। वह बड़ा विद्वान् था और उसके ग्रन्थों में बहुत सी ऐसी बातें पाई जाती हैं जिनका वर्णन शेक्सपियर ने भी किया है। इसके अतिरिक्त बेकन कुछ ऐसे ग्रन्थों का भी अपने पत्रों में वर्णन करता है जो उसके नाम से प्रचलित नहीं हैं। इन्हीं के आधार पर लोगों का विचार है कि ये विचित्र नाटक बेकन ने लिखे। दूसरी बात यह है कि बहुत

से विद्वान् जब इन नाटकों की विचारशील बातों को शेक्सपियर के उस जीवन के साथ संयुक्त करते हैं जब वह लूसी के पार्क में खरगोश पकड़ते पाया गया और उस पर मार पड़ी तो उनको लज्जा के मारे विश्वास नहीं आता और वे झट यह स्वीकार कर लेते हैं कि जिस मस्तिष्क से ऐसे ऐसे रत्न निकले वह कदापि स्ट्रेटफ़ोर्ड का खरगोश-चोर न था। और जहाँ इसी कारण से बहुत से विद्वानों ने शेक्सपियर की घृणित घटनाओं से इनकार कर दिया है वहाँ बेकन का सहारा पाकर बहुत से लोग उधर चले गये हैं। परन्तु हमारे विचार में इन दोनों की भूल है। संसार में हम बहुत से मनुष्य देखते हैं जिनके भिन्न भिन्न अवस्था के कार्यों में पूर्व पश्चिम का भेद है। इसके अति-रिक्त बेकन-सिद्धान्त तो ऐसा निर्मूल है कि उसमें कल्पना के सिवा और कुछ भी नहीं। इस पर हनरी अविंक्क ने एक अच्छा लेख लिखा है, जिसकी कुछ युक्तियाँ हम भी यहाँ उद्धृत करेंगे।

सबसे पहले इस बात के बहुत से प्रमाण हैं कि शेक्सपियर अपने प्रारम्भिक जीवन में दूसरों के नाटकों को काट छाँट कर नाट्य-समाओं की प्रार्थना पर समयानुकूल बना दिया करता था और इस काम में वह इतना प्रवीण और इसलिए प्रसिद्ध हो गया था कि कई बड़े नाटक-लेखक उससे डाह करने लगे थे और जब तब उसको बुरा भला भी कहते थे। उनमें से एक ग्रीन (Green) था जिसने उसे "काग" की उपमा दी है जो

"हमारे पर लगाकर उड़ने लगा है" और शेक्सपियर के बदले उसे शेक्स-सीन (नाटकीय अङ्कों का बिगाड़ने वाला) लिखा है। यहाँ दो बातें सिद्ध हैं। (१) शेक्सपियर की कीर्ति उस समय इतनी बढ़ती जाती थी कि बड़े बड़े लेखक भी चौंक गये थे, (२) जिसकी ओर ग्रीन ने संकेत किया है वह बेकन नहीं किन्तु शेक्सपियर है जिसके लिए शेक्स-सीन शब्द का प्रयोग किया गया है। इसके सिवा समकालीन लेखक बेन जौनसन का उसको "एवन-मराल" कहना सिद्ध करता है कि यदि बेकन इन नाटकों का लेखक होता तो कम से कम बेन जौनसन आदि मनुष्य अवश्य इस बात को जानते, क्योंकि इनका सम्बन्ध शेक्सपियर के साथ बहुत निकट का था। जो लोग शेक्सपियर की अयोग्यता के कारण बेकन को यह सब यश देना चाहते हैं उनको यह भी ध्यान रखना चाहिए कि यद्यपि कभी कभी शेक्सपियर बेकन से मिला करता था, परन्तु उसकी उससे परम मित्रता नहीं थी। ऐसी अवस्था में कैसे सम्भव था कि बेकन अपने अपूर्व लेखों को गुप्त रीति से शेक्स-पियर के हवाले कर देता। और अगर शेक्सपियर ऐसा ही अयोग्य था तो बेकन जैसे विद्वान् पुरुष का शेक्सपियर जैसे नीच पुरुष से कैसे मेल हुआ और उसने क्यों इसे अपना स्थानापन्न नियत किया। यदि बेकन शेक्सपियर से मिलता था तो केवल इसलिए कि दोनों साहित्य के प्रेमी थे। इसके सिवा उनमें कोई सम्बन्ध नहीं था।

सबसे बड़ा और अच्छा प्रमाण बेकन-सिद्धान्त के विरुद्ध यह है कि यद्यपि बेकन बड़ा विद्वान् और फ़िलासेफ़र था परन्तु उसे नाट्य-शास्त्र का कुछ भी ज्ञान नहीं था। सम्भव है कि बेकन शेक्सपियर से भी उच्च विचारों को प्रकट कर सके परन्तु यह कैसे सम्भव है कि उन विचारों को नाट्य-विद्या जाने बिना नाट्य-शाला के योग्य नाटकों का रूप दे सके। हमने 'शेक्सपियर का नाट्य' नामक लेख में बहुत कुछ यह दिखलाने की कोशिश की है कि शेक्सपियर बड़ा प्रवीण नाट्य-कार था। उसके नाटकों से यह बात भली प्रकार प्रकट होती है कि नाट्य-शाला के नियमों का उसे भली प्रकार बोध था। और जो बातें उसे सूझी हैं वह नाट्य-कार के सिवा अन्य को सूझ नहीं सकती थीं। वह नाटक और नाट्य विद्या से इतनी उपमायें लेता है कि हम चकित रह जाते हैं और मानना पड़ता है कि इन नाटकों का निर्माता बड़ा भारी नाट्य-कार है। "कोरियोलेनस" में लिखा है—

"It is a part that I shall blush in acting."

"यह वह पार्ट है जिसके खेलने में मुझे लज्जा होगी"

"You have put me now to such a part, which never I shall discharge to the life."

"आपने मुझे वह पार्ट दिया है जिसे मैं आयु पर्यन्त नहीं खेल सकता"। बेकननाट्य-कार न था। भला उसे यह बातें कैसे सूझ सकती थीं। फिर "द्वितीय रिचार्ड" में देखिए।

" As in a theatre, the eyes of Men
After a well-graced actor leaves the stage.
Are idly bent on him that enters next,
Thinking his prattle to be tedious :
Even so, or with much more contempt, men's eyes
Did Scowl on gentle Richard."

"जिस प्रकार एक उत्तम नाट्य-कार के रङ्गभूमि से चले जाने के पश्चात् दूसरे की ओर लोग रुचि के साथ नहीं देख सकते, इसी प्रकार अथवा इससे भी अधिक घृणा से लोग सुयोग्य रिचार्ड की ओर देखने लगे।"

बेकन जैसा इतिहास-वेत्ता रिचार्ड के इस अपमान को नाट्य-सम्बन्धी शब्दों में कभी प्रकट न करता !

बेकन वकील भी था। अब देखिए, शेक्सपियर नाट्य-सम्बन्धो सूचनाओं में कभी अशुद्धि नहीं करता ; परन्तु क़ानूनी बातों में उससे प्रायः चूक हो जाती है।

बेकन कभी अपनी कविता के लिए प्रसिद्ध नहीं हुआ। शेक्सपियर सदा से प्रसिद्ध है। अपनी मृत्यु से पहिले बेकन ने इंजील के भजनों का पद्य में अनुवाद किया है जिस से विदित होता है कि उसकी कविता और इस महाकवि की कविता में आकाश पाताल का भेद है।

बहुतसी अन्य त्रुटियाँ भी शेक्सपियर के नाटकों में ऐसी पाई जाती हैं जो एक नाट्य-कार या नाटक-लेखक के लिए तो

बुरी नहीं हैं, परन्तु एक ऐतिहासिक अथवा भूगोल-वेत्ता के लिए सचमुच लज्जाप्रद हैं। रोम के देवतों का नाम डूइड लोगों के साथ संयुक्त कर दिया गया है और राजा जौन के समय में तोपों का वर्णन है। यह बड़ी ऐतिहासिक अशुद्धि है। फिर देखिए, वैलिण्टायन वैरोना से मिलान को समुद्र-यान द्वारा जाता है और 'तूफ़ान' में प्रोस्पैरो मिलान के फाटक पर ही जहाज़ में सवार होता है। वेकन जैसा भूगोल-वेत्ता कभी यह भूल न करेगा। इसलिए शेक्सपियर के गुण और दोष दोनों यह बता रहे हैं कि ये शेक्सपियर के ही गुण और दोष हैं न कि किसी अन्य के। बेकन-सिद्धान्त के प्रचारक चाहे कितना ही प्रयत्न क्यों न करें परन्तु जो यश शेक्सपियर को प्राप्त हुआ है उससे वे उसे वञ्चित नहीं कर सकते।

सम्भव है कि बहुत से पाठकों को हमारा शेक्सपियर-बेकन लेख रुचिकर न हो। परन्तु इससे उनको यह विदित हो जायगा कि पाश्चात्य देशों में साहित्यसम्बन्धी वादानुवाद किस प्रकार हुआ करते हैं और उनसे हम अपना देशीय साहित्य सुधारने में क्या क्या शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

हिन्दी-शेकसपियर

छठा भाग

विण्डसर की हँसमुख स्त्रियाँ

(Merry Wives of Windsor.)

विण्डसर* में पेज और फ़ोर्ड नामी दो धनी भद्र पुरुष रहते थे, जिन की स्त्रियाँ बड़ी रूपवती थीं। परन्तु पेज की पुत्री ऐनी अतीव सुन्दरी थी और उसके विवाह की लालसा कई पुरुषों के मन में थी। उनमें से एक का नाम डाक्टर केअस था, जो एक फ़रांसीसी वैद्य था। दूसरा स्लेण्डर शैलो नामी गाँव के एक मुखिया का भतीजा था। ऐनी का तीसरा चाहने वाला फैण्टन था, जिसे ऐनी भी चाहती थी। परन्तु उसके मां बाप अर्थात् पेज और उसकी स्त्री फ़ैण्टन को अपना दामाद बनाना स्वीकार नहीं

* विण्डसर इँग्लिस्तान में एक स्थान का नाम है।

करते थे। उन्होंने .फैण्टन से स्पष्ट कह दिया था कि तुम हमारे घर न आया करो और हम कदापि अपनी कन्या का विवाह तुम्हारे साथ नहीं करेंगे। यद्यपि बिना उनकी राज़ी के भी यह विवाह हो सकता था, परन्तु जब कभी .फैण्टन ऐनी से इस सम्बन्ध में वार्तालाप करता था तो ऐनी यही कह देती थी कि आप मेरे पिताजी को प्रसन्न कीजिए। एक दिन निराश हो कर .फैण्टन ने ठण्डी साँस लेकर ऐनी से कहा—

"प्यारी ऐनी! मुझे दीखता है कि कभी तुम्हारे पिताजी मुझ से .खुश न होंगे। इसलिए तुम उनके आसरे पर मत छोड़ो।"

ऐनी—हाय! फिर क्या हो?

.फैण्टन—तुम स्वयं ही कार्य्यवाही करो। तुम्हारे पिताजी मुझ से नाराज़ हैं। वे कहते हैं कि तुम बड़े धनी घराने के थे। तुमने सब धन लुटा दिया। इसलिए केवल धन-प्राप्ति के लिए ऐनी से विवाह करना चाहते हो। तुम्हें ऐनी से कुछ प्रेम नहीं है।

ऐनी—शायद उनका कथन ठीक हो।

.फैण्टन—नहीं प्रिये! नहीं! जो कुछ मुझ में दोष हैं उनको तुमसे न छिपाऊँगा। सच बात यह है कि पहले पहल मैंने धन के लिए ही विवाह की इच्छा की थी, परन्तु मन चलाते ही मैं तुम पर इतना आसक्त हो

गया हूँ कि तुम्हारे प्रेम को धन से भी अधिक समझता हूँ।

ऐनी—.फैण्टन ! भले .फैण्टन ! मेरे पिताजी से फिर प्रार्थना करो। सम्भव है कि वह मानही जायँ। यदि वह न मानेंगे तो कुछ और उपाय किया जायगा।

जब यह बातें हो रही थीं उसी समय स्लैण्डर शैलो के साथ वहाँ आगया। उसके साथ एक वृद्धा स्त्री क्किली भी थी जिसका हाल हम आगे चल कर लिखेंगे। यहाँ यही कह देना काफ़ी है कि यह डाकृर केअस की दासी थी और प्रेमासक्त स्त्री पुरुषों के बीच में पत्र पहुँचाया करती थी। डाकृर केअस इसी के द्वारा ऐनी को संदेसा पहुँचाया करता था और ऐनी की माता डाकृर केअस से राज़ी होने के कारण इसे घर में आने दिया करती थी। ऐनी का बाप स्लेण्डर से राज़ी था। इस प्रकार एक घर में तीन मत थे। लड़की यह चाहती थी कि जिस प्रकार हो सके .फैण्टन से विवाह हो जाय। पिता उसका स्लेण्डर को दामाद बनाना चाहता था। माता केअस को अपनी कन्या देना चाहती थी।

स्लेण्डर धनी पुरुष था। उसकी वार्षिक आय ३०० पौण्ड थी, परन्तु उसमें बुद्धि नहीं थी। ऐनी का पिता पेज उसे केवल धनी देख कर ही अपनी बेटी देना चाहता था, जिस प्रकार आज

कल भारतवर्ष के लोग केवल धनियों के साथ बिना उनके गुणों का विचार किये हुए अपनी पुत्रियाँ ब्याह देते हैं।

जब ये लोग वहाँ आये तो शैलो ने क्विकली से कहा "क्विकली! ऐनी को बुलाओ। मेरा भतीजा उससे कुछ बातें करना चाहता है।"

ऐनी ने स्लेण्डर को देखकर अपने जी में कहा—"यह मेरे पिता का प्रस्ताव है। हाय तीन सौ पौण्ड के लिए दोष भी लोगों को गुण प्रतीत होते हैं।" जब वह उनके निकट आई तो शैलो ने कहा—

"ऐनी! मेरा भतीजा तुम से प्रेम करता है"।

स्लेण्डर—"हाँ, मुझे ऐनी सब स्त्रियों से अधिक प्यारी हैं।

शैलो—वह तुमको सहधर्मिणी बनाना चाहता है।

स्लेण्डर—सहधर्मिणी! हाँ, जो मेरा धर्म है वह इसका होगा।

शैलो—वह आप को १५० पौण्ड देगा!

ऐनी—श्रीमन्, आप उसको स्वयं कहने दीजिए।

शैलो—बहुत अच्छा! बहुत अच्छा! (स्लेण्डर से) लड़के! चल, ऐनी तुझे बुलाती है।

ऐनी—कहिए स्लेण्डर जी!

स्लेण्डर—भली ऐनी!

ऐनी—क्या आज्ञा?

स्लेण्डर—मुझे तो कुछ कहना नहीं है। तुम्हारे पिता और मेरे चचा ने विवाह का प्रस्ताव किया है। यदि होजाय तो हरि-इच्छा! वही मेरी अपेक्षा अधिक कह सकते हैं। देखो तुम्हारे पिताजी आते हैं।

इस समय पेज और उसकी स्त्री वहाँ पर आ गये। और पेज ने .फैण्टन को देखकर क्रोध से कहा—

".फैण्टन! यह बुरी बात है। तुम मेरे घर क्यों आते हो। कई बार मैं कह चुका हूँ कि ऐनी को वर मिल गया।

.फैण्टन—पेज! क्रोध न कीजिए। शान्त हूजिए!

पेज की स्त्री—.फैण्टन! मेरी बेटी के समीप न आया करो।

पेज—वह आप के लिए नहीं है।

फैण्ट०—अजी सुनिए तो सही!

पेज ने .फैण्टन की बात न सुनी और स्लेण्डर तथा शैलो के साथ वार्तालाप करता हुआ बाहर चला गया। क्विकली के संकेत पर .फैण्टन ने पेज की स्त्री से कहा।

"मिसिस पेज *! मुझे आपकी कन्या से सच्चा प्रेम है। आप चाहे कितनी ही मुझ से घृणा करें मैं इस प्रेम को त्याग नहीं सकता। आप मेरे ऊपर दया कीजिए"।

---

* अँगरेज़ी नियम यह है कि पेज की स्त्री मिसिस पेज और फ़ोर्ड की स्त्री मिसिस फ़ोर्ड। अर्थात् पति के नाम के पहले मिसिस लगा देते हैं।

पेनी—पूज्य माताजी, मेरा विवाह इस मूर्ख (स्लेण्डर) से न कीजिए।

पेज की स्त्री—नहीं नहीं। मैं तेरे लिए एक उत्तम वर ढूँढूँगी।

मिसिस पेज का तात्पर्य यहाँ डाक्टर केअस से था। परन्तु वह अपने विचार से अपने पति को सूचित नहीं करती थी।

इन उपर्युक्त पुरुषों के अतिरिक्त विण्डसर में एक और मनुष्य रहता था जिसका नाम सर जौन फ़ौल्स्टाफ़ था। यह फ़ौल्स्टाफ़ बहुत मोटा था। परन्तु उसमें बुद्धि नहीं थी। उसके पास धन भी नहीं था परन्तु उसके साथी प्रायः इधर उधर से लूट मार कर लाया करते थे और उसी से उसका निर्वाह होता था। वह बहुधा एक सराय में रहा करता था, जहाँ पथिकों को मद्य पिलाकर नशे की दशा में वह उनकी सम्पत्ति हरण कर लेता था। इस प्रकार छोटे छोटे झगड़े नित्य प्रति वहाँ हुआ करते थे। एक दिन फ़ौल्स्टाफ़ ने पेज और फ़ोर्ड की स्त्रियों के विषय में सुना कि वे रूपवती होने के अतिरिक्त धनवती भी हैं और उनके पति का रुपया उन्हीं के स्वत्व में रहता है। इस पर फ़ौल्स्टाफ़ के मुँह में पानी भर आया और उसने इन दोनों स्त्रियों से प्रेम करके धन-प्राप्ति की इच्छा की, क्योंकि प्रायः असती स्त्रियां अपने मित्रों को बहुत धन लुटा दिया करती हैं।

इस इच्छा की पूर्त्ति के लिए फ़ौलस्टाफ़ ने केअस की दासी क्किली को गाँठना चाहा। क्किली वास्तव में इन बातों में बड़ी निपुण थी और स्वयं भी यह चाहती थी कि इस प्रकार के कार्य्यों से अपना निर्वाह किया करे और आँख के अंधों और गाँठ के पूरों को लूटा करे। क्किली ने फ़ौलस्टाफ़ से कुछ इनाम लेकर उसके पत्र मिसिस फ़ोर्ड और मिसिस पेज तक पहुँचाने का भार अपने ऊपर ले लिया और उद्योग करने लगी। परन्तु इसके साथ ही क्किली का प्रयोजन केवल धनोपार्जन था। वह व्यर्थ किसी स्त्री को बहकाना नहीं चाहती थी।

मिसिस पेज ने फ़ोलस्टाफ़ का पत्र पढ़ा, जिसमें लिखा हुआ था—

"यह न पूछो कि मैं तुमसे क्यों स्नेह करता हूँ, क्योंकि प्रेम किसी कारण से नहीं होता। तुम यदि युवती नहीं हो तो क्या चिन्ता, क्योंकि मैं भी तो युवक नहीं हूँ। प्रेम तो है। तुम हँसमुख हो। और मैं भी हँसमुख हूँ। यहाँ इतना ही कहना काफ़ी है कि मैं तुम पर आसक्त हूँ। मैं यह नहीं कह सकता कि मुझ पर दया करो, क्योंकि मैं वीर हूँ और वीरों को ऐसा कहना अनुचित है। हां, यही प्रार्थना है कि मुझ से प्रेम करो।

तुम्हारा सच्चा और दिन रात
चाहनेवाला
जौन फ़ौलस्टाफ़"

मिसिस पेज पत्र को देखते ही क्रोध में भर गई और कहने लगी कि देखो मेरी युवावस्था में भी ऐसे प्रेम-पत्र मेरे पास नहीं आये थे। फिर यह कौन मूर्ख है जो इस प्रकार मुझ से परिचय जताता है। वह फ़ौलस्टाफ़ को जानती थी। दो चार बार उससे बातचीत भी हो चुकी थी। परन्तु यह जान कर कि फ़ौलस्टाफ़ उसे कुदृष्टि से देखता है बड़ा क्रोध आया और कहने लगी कि ऐसे दुष्टों को दण्ड देने के लिए अँगरेज़ी पार्लीमेंट की ओर से नियम होने चाहिएं।

इतने में मिसिस फ़ोर्ड वहां पर आगई और कहने लगी "मिसिस पेज! मैं तुम्हारे घर को जारही थी।"

मिसिस पेज—और सत्य जानो मैं तुम्हारे घर आरही थी।

मिसिस फ़ोर्ड—देखो, मेरे पास एक पत्र आया है!

मिसिस पेज—आहा! यह तो मेरे ही पत्र के समान है। अक्षर अक्षर मिलता है। भेद केवल इतना है कि मेरे पत्र में पेज लिखा है और तुम्हारे में फ़ोर्ड। प्रतीत होता है कि उसने बहुत से पत्र छपवा लिये हैं जिसको चाहे उसके पास भेज देता है। मैं सत्य कहती हूँ कि संसार में पवित्र पुरुषों का नाम तक नहीं मिलता।

मि० फ़ोर्ड—यह तो वैसाही पत्र है। और एकही हाथ के लिखे हुए हैं। भला यह दुष्ट हमारे विषय में क्या समझता है?

मि० पेज—मुझे स्वयं सोच है। उसने मेरा कौन सा काम ऐसा देखा जिससे उसे इस दुष्टता की आशा हुई। हमको अवश्य उससे बदला लेना चाहिए।

मि० फ़ोर्ड—हाँ जी यह ठीक है। अगर मेरे पति जी इस पत्र को देख पावें तो उनके मन में मेरी ओर से सन्देह हो जाय।

अब इन दोनों ने चालाकी से .फ़ौलस्टाफ़ को दण्ड देने के लिए यह विचार किया कि किसी प्रकार धोखा देकर उसे अपने घर बुलाना चाहिए। इसलिए उन्होंने क्विकली के द्वारा .फ़ौलस्टाफ़ के पास एक संदेसा भेज दिया।

जब क्विकली फ़ौलस्टाफ़ के पास लौट कर गई तो उसने कहा "प्रणाम! महाशय!"

फ़ौलस्टाफ़—बहुत बहुत प्रणाम। कहो क्या है?

क्वि०—महाशय! मिसिस फ़ोर्ड ने मुझे भेजा है—निकट आ कर सुनिए। गुप्त बात है—मैं डाक्टर केअस के पास रहती हूँ।

.फ़ौल्०—कहिए मिसिस फ़ोर्ड ने क्या कहा है?

क्वि०—अजी निकट आइए।

.फ़ौल्०—कहो। यहाँ कोई नहीं सुनता। ये सब अपने ही आदमी हैं।

क्वि०—सारांश यह है कि मिसिस .फ़ोर्ड पर तुमने ऐसा जादू फैलाया है जैसा किसी बड़े से बड़े पुरुष ने भी

न फैलाया हो। मैंने ऐसे ऐसे सुन्दर युवक देखे हैं जिनके चमकीले वस्त्रों के सामने आँख नहीं ठहरती। परन्तु उन पर भी स्त्रियाँ ऐसी जल्दी नहीं रीझतीं जैसी आप पर।

फ़ौल्०—(फूल कर) तो फिर उसने क्या कहा है ?

क्कि०—उसको आपका पत्र मिला था जिसके लिए वह आपकी कृतज्ञ है। अब उसने कहला भेजा है कि मेरा पति आज दस और ग्यारह बजे के बीच में बाहर जायगा।

फ़ौल्०—दस और ग्यारह के बीच में ?

क्कि०—हाँ, उसी समय आप उससे भेंट कर सकते हैं। क्योंकि फ़ोर्ड उसी समय घर से जायगा। बिचारी स्त्री को वह तंग करता है।

फ़ौल्०—दस और ग्यारह के बीच में ! अच्छा, कह देना, मैं अवश्य आऊँगा।

क्कि०—एक संदेसा और है। मिसिस पेज ने आपके पत्र के उत्तर में कहला भेजा है कि मैं आपसे बहुत प्रसन्न हूँ। परन्तु मुझे शोक है कि मेरा पति सदा यहीं रहता है। हाँ कभी न कभी तो समय मिलेगा ही। जान पड़ता है कि फ़ौल्स्टाफ़ ! तुम्हारी आँखों में जादू है।

फ़ौ०—नहीं नहीं। सच्चे और हार्दिक प्रेम से अधिक कुछ गुण नहीं है।

क्किली—ईश्वर आप का भला करे! मि० पेज ने कहला भेजा है कि आप अपने छोटे नौकर को उसके पास भेज दें। वह आप दोनों के बीच में आया जाया करेगा। मि० पेज बड़ी हँसमुख स्त्री है। विण्डसर भर में ऐसी कोई स्त्री नहीं जो उसके समान .खुश हो। उसका पति उसे बड़े प्रेम से रखता है। वह अपनी नींद सोती है। अपनी भूख खाती है। अपनी प्यास पीती है। घर का हिसाब किताब उसी के पास रहता है।

.फ़ौल्स्टाफ़—बहुत अच्छा!

.फ़ौल्स्टाफ़ ने अपना नौकर रौबिन क्किली के साथ कर दिया और उसे बहुत कुछ इनाम दिया।

परन्तु जब फ़ौल्स्टाफ़ यहाँ मन के लड्डू बाँध रहा था उसी समय लोग उसके विरुद्ध .फ़ोर्ड को भड़का रहे थे। उनमें सब से मुख्य फ़ौल्स्टाफ़ का ही नौकर पिस्टल था, जिसको किसी कारण फ़ौल्स्टाफ़ ने घर से निकाल दिया था। उसने .फ़ोर्ड से जाकर कहा कि सर जौन फ़ौल्स्टाफ़ आपकी स्त्री से गुप्त स्नेह रखता है।

फ़ोर्ड०—मुझे आशा नहीं है।

पिस्टल०—आशा से क्या होता है। मैं सच कहता हूँ।

फ़ोर्ड०—मेरी स्त्री तो युवती नहीं है।

पिस्टल०—अरे वह तो बड़ी छोटी, युवती वृद्धा, धनी निर्धन सभी प्रकार की स्त्रियों से प्रेम करता है। फ़ोर्ड! सचेत हो! जौन से सचेत हो!

फ़ोर्ड—क्या मेरी स्त्री को चाहता है।

पिस्ट०—हाँ तेरी स्त्री को और पेज की स्त्री को। देखना हो तो देख, नहीं तो पछताना पड़ेगा।

यह कह कर पिस्टल तो चला गया और फ़ोर्ड ने पेज से कहा—

"तुमने सुना कि इस दुष्ट ने क्या कहा!"

पेज—हाँ! और क्या तुमने नहीं सुना कि उसने मुझ से क्या कहा।

फ़ोर्ड—क्या तुम इसकी बात को सच जानते हो?

पेज—नहीं नहीं! सरजौन ऐसा नहीं है। इन मूर्खों को उसने निकाल दिया है। इसीलिए वे इसके विरुद्ध लोगों को भड़काते फिरते हैं।

फ़ोर्ड—क्या यह इसी के नौकर थे?

पेज—हाँ! थे!

फ़ोर्ड—मैं उसको दण्ड दूँगा। मुझे यह बात अच्छी नहीं मालूम होती।

पेज—अगर वह मेरी स्त्री के पास आवे तो मैं उसे स्वयं उसके पास भेज दूँ। मैं जानता हूँ कि वह झड़कने

के सिवा उससे और कुछ न कहेगी ! मुझे अपनी स्त्री का विश्वास है ।

फ़ोर्ड—अपनी स्त्री पर मुझे भी विश्वास है । परन्तु मैं ऐसा करने को तैयार नहीं हूँ । अति-विश्वास उचित नहीं ।

अब फ़ोर्ड ने यह विचार किया कि भेस बदल कर फ़ौलस्टाफ़ के पास जाना चाहिए और उस से अपनी स्त्री का कुछ भेद जानना चाहिए । इसलिए अपना नाम ब्रुक रखकर वह वहाँ गया । और कहने लगा—"आप की जय हो ।"

फ़ौलस्टाफ़—आपकी भी जय हो ! क्या आप मुझ से बात करेंगे ।

फ़ोर्ड—जी हाँ ! मैं यहाँ का एक भद्र पुरुष हूँ । मैंने बहुत कुछ व्यय किया है । मेरा नाम ब्रुक है ।

फ़ौ०—श्रीमन् ब्रुक ! मैं आप से अधिक परिचित होना चाहता हूँ !

फ़ोर्ड—सर जौन ! मैं आप से कुछ लेने नहीं आया । क्योंकि स्पष्ट बात यह है कि मेरी आर्थिक दशा आप से अच्छी है । और इसी धन के ज़ोर से मैं बिना जाने बूझे यहाँ तक आगया हूँ । कहावत है कि धन के सामने सब मार्ग खुल जाते हैं ।

फ़ौल०—रुपया बड़ी चीज़ है ।

फ़ोर्ड—मेरी थैली में कुछ रुपया है जिसके बोझ से मैं दबा जाता हूँ। सो आप आधा या सब लेकर मुझे हलका कीजिए!

फ़ौल्०—मैं नहीं समझता कि मेरा इस पर क्या अधिकार है।

फ़ोर्ड०—यदि आप सुनें तो मैं अभी आपको बताये देता हूँ।

फ़ौल्०—कहिए महाशय ब्रुक! मैं आपकी सेवा करने का उद्योग करूँगा।

फ़ोर्ड—मैंने सुना है कि आप बड़े विद्वान् हैं। और मैं आप को बहुत दिनों से जानता हूँ। यद्यपि आप मुझे नहीं जानते। मैं आप से ऐसी बात कहूँगा जिससे मेरी त्रुटियाँ मालूम हों, पर मैं चाहता हूँ कि आप एक आँख से मेरी त्रुटियाँ देखें और दूसरी से अपनी। जिससे मेरी त्रुटियाँ बहुत बड़ी न मालूम हों। क्योंकि आप भली प्रकार जानते हैं कि इस प्रकार के दोष बहुत से लोगों में पाये जाते हैं।

फ़ौल्०—कहिए!

फ़ोर्ड—यहाँ एक स्त्री है, जिसके पति का नाम फ़ोर्ड है।

फ़ौल्०—अच्छा!

फ़ोर्ड—मैं बहुत दिनों से उसे चाहता हूँ। और बहुत रुपया ख़र्च कर चुका हूँ। कई बार अच्छी अच्छी चीज़ें उसके लिए भेजीं और नौकरों द्वारा भी बहुत कुछ

व्यय किया। परन्तु इन सब कष्टों के बदले कुछ न मिला। मुझे उसकी प्राप्ति नहीं हुई!

फ़ौल्०—क्या कभी वह तुम से नहीं बोली?

फ़ोर्ड—कभी नहीं!

फ़ौल्०—तो फिर तुम्हारा प्रेम कैसा?

फ़ोर्ड—जैसा और की भूमि में बनाया हुआ मकान! क्योंकि वह केवल इसलिए छोड़ना पड़ता है कि भूमि के चुनाव में भूल हुई!

फ़ौल्०—मुझ से क्या चाहते हो?

फ़ोर्ड—यद्यपि मुझे दिखलाने को वह एक सती स्त्री है परन्तु मैंने सुना है कि अन्य पुरुषों से वह प्रेम रखती है। आप मुझे बड़े सज्जन, शीलयुक्त, सुन्दर और मनोहर मालूम होते हैं!

फ़ौल्०—अजी नहीं!

फ़ोर्ड०—यह ठीक है! यह रुपया रक्खा हुआ है। आप इच्छानुसार व्यय कीजिए। मैं आपका दास हूँ। केवल यही प्रार्थना है कि इस मिसिस फ़ोर्ड के सतीत्व पर आक्रमण किया जाय। यदि वह अन्य पुरुषों की बात मानेगी तो आपकी अवश्य मानेगी!

फ़ौलस्टाफ़—यह तो ठीक नहीं जान पड़ता कि उद्योग मैं करूँ और उसका फल आप भोगें।

फ़ोर्ड—आप मेरा तात्पर्य्य नहीं समझे। इस समय वह बड़ी सती बनती है। और मेरी बात नहीं मानती। मेरा प्रयोजन यह है कि यदि वह आपके वश में हो जाय तो उसकी पवित्रता नष्ट हो जायगी, फिर वह मुझे झट स्वीकार कर लेगी। इस समय वह एक ऐसे पवित्र और तेजोमय मणि के तुल्य है कि मैं उसकी ओर नहीं देख सकता!

फ़ौल०—महाशय ब्रुक! पहले तो मैं आपका रुपया लिये लेता हूँ। फिर आप से प्रतिज्ञा करता हूँ कि आपकी मनोकामना सिद्ध होगी।

फ़ोर्ड—भले मित्र!

फ़ौल०—महाशय ब्रुक! आप सफल होंगे!

फ़ोर्ड—यदि आप को रुपये की आवश्यकता हो तो और ले लेना!

फ़ौल्स्टाफ़—यदि रुपया है तो मिसिस फ़ोर्ड की भी कमी नहीं है। मुझे उसने बुलाया है सो मैं आज दस ग्यारह बजे के बीच में जाऊँगा। क्योंकि उस समय उसका दुष्ट पति घर से बाहर चला जायगा! उसी समय तुम मेरे पास आना।

फ़ोर्ड—क्या आप फ़ोर्ड को जानते हैं।

फ़ौल्स्टाफ़०—मैं उस दुष्ट को नहीं जानता। मैंने सुना है कि

उसके पास गठरी भर रुपया है। इसीलिए मैंने उसे गाँठा है कि कुछ रुपया मिल जाय।

फ़ोर्ड०—यदि आप फ़ोर्ड को पहचानते तो अच्छा होता क्योंकि यदि वह कहीं मार्ग में मिल जाय और आप न पहचान सकें तो बड़ी दुर्गति होगी।

फ़ौल्०—मैं ऐसे मूर्खों से नहीं डरता। वह मेरा क्या करेगा। एक थप्पड़ में उसकी आँखें निकाल लूँगा। आज रात को आओ। मैं उस दुष्ट से बाहर लड़ता रहूँगा और तुम उसके घर में घुस जाना।

यह बातें करके फ़ोर्ड वहाँ से चल दिया। परन्तु उसे यह जानकर बड़ा खेद हुआ कि जो कुछ पिस्टल कहता था वह सब ठीक था। वह पछताने लगा कि मैंने ऐसी दुष्ट और कुटिला स्त्री से क्यों विवाह किया। वह कहने लगा कि पेज मूर्ख है जो अपनी स्त्री को अच्छी जानता है। अब इसका कुछ उपाय करना चाहिए। अब उसने इरादा किया कि दस और ग्यारह बजे के बीच में घर आकर अपनी स्त्री और फ़ौल्स्टाफ़ दोनों को दण्ड दूँगा।

शाम हुई और फ़ौल्स्टाफ़ के आने का समय निकट आया। मिसिस फ़ोर्ड और मिसिस पेज दोनों फ़ोर्ड के घर में बैठी बातचीत कर रही थीं। अन्त में कुछ वाद-विवाद के पश्चात् यह निश्चित हुआ कि एक पीपा, जिसमें

धुलने के कपड़े रक्खे जाया करते थे—तैयार रक्खा जाय। और मिसिस .फोर्ड ने अपने नौकरों को बुलाकर कहा—"देखो निकट के घर में बैठे रहो। जिस समय मैं पुकारूँ चुपके से चले आओ और इस पीपे को लेजा कर टेम्स नदी की निकटस्थ खाईं में इसके कपड़ों को फेंक आओ।"

जब वे लोग वहाँ से चले गये तो फ़ौल्स्टाफ़ के नौकर रौबिन ने आकर कहा।

"मेरा स्वामी घर के पिछले द्वार पर खड़ा हुआ है।"

अब मिसिस पेज तो वहाँ से चली गई और .फौल्स्टाफ़ घर में घुस आया और कहने लगा "हे मेरे बहुमूल्य रत्न! आज मैंने तुझे पा लिया। आज मेरी मनोकामना पूरी हुई। अब यदि मैं मर भी जाऊँ तो भी कुछ चिन्ता नहीं।"

मिसिस फ़ोर्ड०—प्यारे सर जौन!

.फौल०—मिसिस फ़ोर्ड, मुझे बहुत बातें नहीं आतीं। पर यदि तुम्हारा पति मर जाय तो मैं तुम को अपनी पत्नी बनाना चाहता हूँ।

मिसिस फ़ोर्ड—मैं तुम्हारी पत्नी! भला मैं किस योग्य हूँ?

फ़ौल०—वाह! फ़्रांस के राजमहल में भी ऐसी सुन्दर स्त्री नहीं है। तुम्हारी आँखें मणि के समान चमकती हैं। तुम्हारी भौएं कैसी मनोहारिणी हैं। मैं तुझे प्यार करता हूँ और तेरे सिवा किसी को नहीं।

मि० .फोर्ड—महाशय! मुझे धोखा मत देना। मैंने सुना है कि मिसिस पेज से तुम्हारा स्नेह है।

.फौल्०—नहीं! नहीं!

मि० .फोर्ड—ईश्वर जानता है कि मुझे तुम से कितना स्नेह है और एक दिन तुमको भी मालूम हो जायगा।

जब ये बातें हो रही थीं उसी समय मिसिस पेज ने आकर द्वार खटखटाया। .फौलस्टाफ़ डर के मारे किवाड़ के भीतर हो गया और मिसिस पेज आकर कहने लगी।

"मिसिस .फोर्ड तुमने क्या किया। आज तुम्हारी बदनामी हो गई! तुम बरबाद हो गईं!"

मि० .फोर्ड—क्या बात है?

मि० पेज—ऐसा अच्छा पति पाकर भी तुमने उसे धोखा दिया!

मि० .फोर्ड—कैसा धोखा?

मि० पेज—कैसा धोखा! मुझे बहकाती हो। मैं तुम्हें ऐसा नहीं जानती थी।

मि० .फोर्ड—बात क्या है?

मि० पेज—अरे भोली स्त्री! देख, तेरा पति पुलिस के साथ अपने घर की खोज में आ रहा है। उसे ज्ञात हुआ है कि तुमने किसी मनुष्य को यहाँ छिपा रक्खा है।

मि० .फोर्ड—क्या? क्या?

मि० पेज—यदि यहाँ कोई न हो तो अच्छा है। परन्तु इस में सन्देह नहीं कि तुम्हारे पति के साथ नगर का नगर उस संदिग्ध मनुष्य की खोज में चला आ रहा है। यदि तुम निरपराधी हो तो बहुत अच्छी बात है और मैं ख़ुश हूँ। पर यदि कोई हो तो उसे शीघ्र ही निकाल दो। चकित मत हो। अपने नाम में बट्टा न लगाओ।

मि० फ़ोर्ड०—बहिन! एक आदमी तो अवश्य है परन्तु मुझे अपनी बदनामी का इतना डर नहीं है जितना उसकी जान का है। यदि मेरे हज़ार पौंड ख़र्च हो जायँ और यह भले प्रकार बाहर निकल जाय तो भी अच्छा हो।

मि० पेज०—तुमने मुझे धोखा दिया। अब तुम उसे घर में नहीं छिपा सकतीं। देखो तुम्हारा पति तो दरवाज़े पर आ गया। यदि वह छोटे क़द का आदमी हो तो उसे इस पीपे में बिठलादो और उसके ऊपर से मैले कपड़े रखदो। जिससे किसी को कुछ सन्देह न हो।

मि० फ़ोर्ड०—हाय! अब मैं क्या करूँ! वह तो इतना बड़ा है कि इसमें नहीं समा सकता।

इतने में फ़ौलस्टाफ निकल कर बाहर आया और घबराकर कहने लगा।

"मैं घुसा जाता हूँ। मैं घुसा जाता हूँ! मैं पीपे में घुसा जाता हूँ। किसी प्रकार मुझे बाहर निकाल दो।"

मिसि० पेज—अरे सर जौन फ़ौलस्टाफ़ ! क्या यह तुम्हारे ही पत्र थे।

फ़ौलस्टाफ़—मैं तुम्हें चाहता हूँ और तुम्हारे सिवा किसी को नहीं। मुझे बैठ जाने दो। इस समय अधिक बातें नहीं हो सकतीं।

जब फ़ौलस्टाफ़ पीपे में बैठ गया तब उसके ऊपर से मैले कपड़े ठूँस दिये गये और मिसिस फ़ोर्ड ने अपने नौकरों द्वारा उसे धोबिन के घर भेज दिया कि उसकी खाई में डाल दिया जाय जैसी पहले से उनको शिक्षा दी जा चुकी थी।

इतने में फ़ोर्ड पुलिस के लोगों सहित घर में आगया और लोग इधर उधर फ़ौलस्टाफ़ को देखने लगे। पेज ने कहा—

"महाशय फ़ोर्ड ! क्यों सन्देह करते हो। यहाँ कोई नहीं है।

फ़ोर्ड—अजी ऊपर देखिए। अवश्य कोई मिलेगा।

डाक्टर केअस—यह तो अच्छा तमाशा है। हमारे फ़्रांस के पति ऐसे नहीं होते।

फ़ोर्ड—यहाँ तो मिलता नहीं। सम्भव है कि उस दुष्ट ने डींग मारी हो !

केअस—यहाँ कोई नहीं है।

पेज—धिक् धिक् फ़ोर्ड ! क्या तुमको लज्जा नहीं आती ! तुम्हें किसने बहका दिया।

फ़ोर्ड—पेज महाशय ! यह मेरा दोष है ओर मैं ही भोगता हूँ।

केअस—आपकी स्त्री बड़ी धर्मात्मा है !

यहाँ ये लोग फ़ौलस्टाफ़ को ढूँढ़ते रहे वहाँ फ़ोर्ड के नौकरों ने कपड़ों सहित उसे खाई में डाल दिया जहाँ से निकल कर वह बड़ी कठिनाई से घर आया। ऐसी विपत्ति उस पर आज तक कभी नहीं पड़ी थी। उसके कपड़े ख़राब हो गये थे, उसके सिर में कुछ चोट भी आई थी। पर यह अच्छा हुआ कि उसके प्राण बच गये। जैसे तैसे वह घर आया। दूसरे दिन क्विकली उसके समीप आई क्योंकि मिसिस पेज ओर मिसिस फ़ोर्ड ने सिखा कर उसे भेजा था।

क्विकली—मुझे मिसिस फ़ोर्ड ने आप के पास भेजा है।

फ़ौल्०—मिसिस फ़ोर्ड ! चल हट ! मिसिस फ़ोर्ड से मेरा पेट भर गया।

क्विकली—हाय ! हाय ! यह तो उसका दोष नहीं था। उसको पश्चात्ताप है कि उसके नौकरों से भूल हुई !

फ़ौल्०—भूल तो मुझ से भी हुई कि ऐसी मूर्खा स्त्री का विश्वास किया !

क्विकली—अजी उसे स्वयं बड़ा शोक हो रहा है; आप चल कर देखेंगे तो मालूम होगा। आज उसका पति आखेट को जारहा है। इसीलिए आज आपको उसने आठ ओर नौ बजे के बीच में बुलाया है। आप शीघ्र

उत्तर दीजिए। वह आज आपको कल की हानि का प्रत्युपकार कर देगी।

फ़ौल्स्टाफ़—अच्छा मैं आऊँगा; उससे कह दो।

किकली—मैं कह दूँगी।

जब किकली वहाँ से चली गई तब मिस्टर फ़ोर्ड फ़ौल्स्टाफ़ के पास आया; जिसे देखकर उसने कहा—

"मिस्टर ब्रुक! क्या आप यह पूछने आये हैं कि मिसिस फ़ोर्ड और मुझ में कैसी बीती।"

फ़ोर्ड—हाँ महाशय, यही मेरा प्रयोजन है।

फ़ौल्स्टाफ़—ब्रुक महाशय! मैं आप से झूठ नहीं बोलूँगा। मैं कल नियत समय पर वहाँ गया था।

फ़ोर्ड—तो क्या हुआ?

फ़ौल्स्टाफ़—बड़ी बुरी बात हुई।

फ़ोर्ड—क्या उसका विचार पलट गया!

फ़ौल्स्टाफ़—नहीं नहीं! उसका दुष्ट पति आगया और अपने घर को खोजने लगा?

फ़ोर्ड—क्या उस समय आप वहीं थे?

फ़ौल्०—हाँ वहीं!

फ़ोर्ड—क्या उसने तुम्हें पकड़ लिया।

फ़ौल्०—मैं कहता हूँ। ईश्वर ने अच्छा किया कि मिसिस पेज आगई और उसने फ़ोर्ड के आने की सूचना दी।

बस मैं कपड़ों के पीपे में बैठ गया और उसके नौकर मुझे खाईं में डाल आये।

फ़ोर्ड—फिर आप वहाँ कितनी देर पड़े रहे?

फ़ौलस्टाफ़—अजो महाशय! मैंने आप के लिए बहुत कष्ट सहे। थोड़ी देर पीछे मैं वहाँ से उठ के आया!

फ़ोर्ड—मुझे आप के इस कष्ट पर बड़ा दुःख होता है! अब आप मेरे लिए फिर उपाय न करेंगे?

फ़ौलस्टाफ़—अजी, अभी तो टेम्स में ही डाला गया हूँ। मैं तो ईटना* में कूदने को तैयार हूँ। आज उसका पति आखेट को जारहा है, सो मैं आठ और नौ बजे के बीच में वहाँ जाऊँगा।

उस समय आठ बज चुके थे, इसलिए फ़ौलस्टाफ़ ने फ़ोर्ड के घर को प्रस्थान कर दिया। जब वहाँ पहुँचा तो मिसिस फ़ोर्ड से कहने लगा—

"मिसिस फ़ोर्ड! आप के दुःख ने मुझे बेहाल कर दिया। मैं जानता हूँ कि तुम मुझे बहुत प्यार करती हो। क्या अब तुम्हें निश्चय है कि तुम्हारा पति चला गया?"

मि० फ़ोर्ड—हाँ! जौन! आज वह आखेट को गया है।

अभी ये बातें होही रही थीं कि मिसिस पेज ने आकर द्वार पर दस्तक दी। फ़ौलस्टाफ़ फिर पहले दिन की भाँति भीतर छिप गया और मिसिस पेज ने आकर कहा—

---

* ईटना सिसली में ज्वालामुखी पर्वत है।

"क्या घर में कोई और है ?"

मि० फ़ोर्ड—नहीं ! नहीं !

मि० पेज—ठीक बताओ ।

मि० फ़ोर्ड—ठीक कहती हूँ ।

मि० पेज—अच्छा हुआ कि कोई नहीं है ।

मि० फ़ोर्ड—क्यों ?

मि० पेज—अरे देख ! कल की भाँति तेरा पति फिर लोगों को लारहा है । और समस्त स्त्री जाति को कोस रहा है । मैंने ऐसा संदिग्धात्मा कोई नहीं देखा । अच्छा हुआ कि वह मोटा आदमी यहाँ नहीं है ।

मि० फ़ोर्ड—क्या वह उसके विषय में कुछ कह रहा है ?

मि० पेज—हाँ ! हाँ ! वह शपथ खाकर कह रहा है कि कल तुमने अपने साथी को पीपे में बिठाल कर निकाल दिया । वह अभी मेरे पति से कह रहा है कि फ़ौलस्टाफ़ यहाँ अवश्य छिपा है । परन्तु मुझे हर्ष है कि वह मनुष्य इस समय यहाँ नहीं है ।

मि० फ़ोर्ड—मेरा पति यहाँ से कितनी दूर है ?

मि० पेज—गली में है ।

मि० फ़ोर्ड—हाय अब मैं क्या करूँ ? वह तो यहीं है !

मि० पेज०—फिर क्या है । अब तुम मारी गईं । और उसके प्राण बचने तो असम्भव ही हैं । कैसी स्त्री हो ! तुम्हें

लज्जा नहीं आती। यदि उसके प्राण बचाने हों तो घर से निकाल दो!

मि० फ़ोर्ड—क्या उसे पीपे में बिठाल दूँ।

फ़ैाल्स्टाफ़ (बाहर आकर)—नहीं! नहीं! मैं पीपे में न घुसूँगा। क्या इतनी देर में भाग नहीं सकता?

मि० पेज—नहीं। कदापि नहीं। तीन आदमी बन्दूक़ लिये द्वारों पर खड़े हैं।

फ़ैाल्०—अब क्या करूँ? क्या धुआँकश में घुस जाऊँ?

मि० फ़ोर्ड—नहीं! वहाँ तो वह अपनी बन्दूक़ रक्खा करता है। पकड़े जाओगे!

फ़ैाल्—तो मैं बाहर निकला जाता हूँ।

मि० पेज—इस दशा में तो मारे जाओगे। भेस बदल लो!

मि० फ़ोर्ड—भेस क्या बदला जाय?

मि० पेज—क्या किया जाय? यदि किसी मोटी स्त्री के कपड़े होते तो उनको पहन कर निकल जाता!

फ़ैाल्स्टाफ़—कुछ सोचिए। कुछ सोचिए। आज मेरी जान बच जाय!

मि० फ़ोर्ड—मेरी दासी की एक चाची ब्रण्टफ़ोर्ड नामी इतनी ही मोटी थी। उसके कपड़े ऊपर कोठे पर रक्खे हैं।

मि० पेज—ठीक ठीक! सर जौन, जल्दी जाकर पहन लो!

फ़ौल्स्टाफ़ ने जल्दी से बुड्ढ़ी ब्रण्टफ़ोर्ड का भेस धारण कर लिया और मिसिस फ़ोर्ड ने अपने नौकरों द्वारा गत दिवस की भाँति कपड़ों का पीपा बाहर भिजवाया।

इतने में फ़ोर्ड, पेज और बहुत से आदमी वहाँ पर आगये और फ़ोर्ड ने आतेही पीपे के कपड़े निकाल डाले। इस समय वह क्रोध में भरा हुआ था और अपनी भार्य्या को अन्यान्य अपशब्द कह रहा था। उसकी स्त्री ने बहुत कुछ कहा कि "हैं! हैं! आज तुम क्या कर रहे हो।" परन्तु उसने एक न सुनी। जब सब कपड़े देख चुका और किसी मनुष्य का पता न लगा तब वह कहने लगा—

"पेज महाशय! मैं सच कहता हूँ कि कल इसी में बैठ कर वह दुष्ट यहाँ से चला गया। मुझे ठीक सूचना मिली है कि वह यहीं है। अजी इसी घर में है।

मि० फ़ोर्ड—अगर तुम यहाँ किसी आदमी को पाजाओ तो मक्खी की तरह मार डालना।

पेज—यहाँ कोई नहीं है।

शैलो०—फ़ोर्ड! यह ठीक नहीं है। तुम व्यर्थ संदेह करते हो।

फ़ोर्ड—वह यहाँ नहीं है।

पेज—अजी तुम्हारे मन के सिवा कहीं नहीं है।

फ़ोर्ड—अजो आज और खोज कीजिए, यदि इस समय न मिला तो कभी फिर न कहूँगा।

इस समय मि० पेज और फ़ौल्स्टाफ कोठे पर थे। मि० फ़ोर्ड ने आवाज़ दी कि तुम दोनों नीचे उतर आओ क्योंकि पति जी ऊपर किसी मनुष्य की खोज में आरहे हैं। मिस्टर .फोर्ड इस बुड्ढी स्त्री अर्थात् ब्रण्टफ़ोर्ड से बड़ा नाराज़ था। और उसे घर में नहीं आने देता था इस लिए जब उसने सुना कि मेरे कहने पर भी ब्रण्टफ़ोर्ड मेरे घर में आगई तो वह आग भभूका हो गया और उसे (अर्थात् .फौल्स्टाफ़ को) .खूब मारा।

मि०पेज—हैं हैं .फोर्ड! क्या करते हो। बिचारी बुढ़िया मर जायगी।

मि० .फोर्ड०—नहीं नहीं। वह इसी के योग्य है।

मारपीट कर .फोर्ड तो आदमियों को लेकर कोठे पर चढ़ गया और .फौल्स्टाफ़ बुढ़िया के भेस में मार खा कर घर आ गया। इस समय मि० .फोर्ड को निश्चित हो गया कि मेरा पति मेरे सतीत्व पर संदेह करता है। इस लिए उसने और मि० पेज ने अपने अपने पतियों से .फौल्स्टाफ़ के पत्रों और अपने कामों को क्रमशः कह दिया। इस पर सब लोगों में बड़ी हँसी हुई और मिस्टर फ़ोर्ड को अपनी स्त्री की ओर से कुछ भी शङ्का न रही।

परन्तु इस तमाशे की समाप्ति यहीं न हुई। अब की बार पुरुषों ने भी अपनी स्त्रियों की सम्मति से इस विचित्र तमाशे में

हिस्सा लेना चाहा। बड़े वादविवाद के पश्चात् यह निश्चित हुआ कि .फौलस्टाफ़ को फिर बुलाना चाहिए और उसे सबके सामने लज्जित करना चाहिए। परन्तु अब .फौल्स्टाफ. का .फोर्ड के घर में आना कठिन था। वह दो बार भुगत चुका था, इस लिए निर्लज्ज पुरुष के लिए भी फिर वहाँ जाने का साहस करना दुस्तर था। यह जानकर यह बात ठहरी कि विण्डसर नगर के बाहर मैदान में एक पीपल है; जिसके लिए प्रसिद्ध है कि रात के समय वहाँ एक सींगोंवाला भूत आया करता है। इस लिए .फौल्स्टाफ़ वहाँ पर भूत के भेस में बुलाया जावे और कह दिया जाय कि ऐसी दशा में कोई उसे पकड़ने का साहस न करेगा। जब वह वहाँ पर आवे तब पेज की पुत्री ऐनी और छोटे छोटे लड़के चमकीले वस्त्र पहन कर किसी गुप्त जगह से वहाँ पर आजायँ और कोलाहल मचावें। .फौल्स्टाफ़ इन को परियाँ समझ कर भागने लगेगा। उसी समय पेज और .फोर्ड वहाँ पर आकर उसे पकड़ लेवें।

इस उपर्युक्त तमाशे के अतिरिक्त पेज इस समय एक और कार्य्य भी सिद्ध करना चाहता था। हम ऊपर बता चुके हैं कि उसकी इच्छा अपनी बेटी ऐनी को स्लेण्डर के साथ ब्याहने की थी। इस बात को घर के लोग स्वीकार नहीं करते थे। इस लिए उसने विचार किया कि यदि स्लेण्डर उसी भीड़ भाड़ में जिसका वर्णन ऊपर किया गया है ऐनी को पकड़ कर ले जाय और झट विवाह कर ले तो कोई फिर कुछ न कहेगा। इस प्रयोजन के

लिए उसने अपनी पुत्री के श्वेत वस्त्रों के पर लगा दिये जिनको देखकर स्लेण्डर परियों के रूप में उसे पहचान सके।

मिसिस पेज अपने पति की बात समझ गई और इस लिए उसने ऐनी को हरे वस्त्र पहनने की सम्मति दी, जिससे डाक्टर केअस उसे पहचान कर अपने साथ ले जा सके।

ऐनी ने वैसे तो माता और पिता दोनों की बात मान ली, परन्तु उसे करना कुछ और ही था। वह स्लेण्डर या केअस किसी को नहीं चाहती थी। उसका मन फ़ेण्टन में लगा हुआ था। इस लिए उसने दो लड़कों को हरे और श्वेत वस्त्र पहना दिये और अपने प्यारे को इसकी सूचना दे दी। इस समय स्लेण्डर, केअस और फ़ेण्टन अलग अलग तीन पुरोहितों को अपने घरों पर तैयार कर आये थे कि जिस समय हम ऐनी को लावें उसी घड़ी विवाहसंस्कार हो जाय।

यहाँ एक बात और कह देनी चाहिए। जिस समय मिसिस फ़ोर्ड और मिसिस पेज ने फ़ौलस्टाफ़ के बुलाने का विचार ठीक कर लिया तो उन्होंने क्विकली के हाथ उसको निमंत्रण भेजा। जब क्विकली वहाँ पहुँची तो फ़ौलस्टाफ़ ने पूछा—

"कहाँ से आई हो?"

क्वि०—मि० पेज और मि० फ़ोर्ड ने भेजा है।

फ़ौलस्टाफ़—भाड़ में जायँ वे दोनों। मैं उनके लिए बहुत कुछ अपमान सह चुका।

किकली—और क्या तुम समझते हो उनका निरादर नहीं हुआ ? बिचारी मिसिस .फोर्ड पर तो इतनी मार पड़ी कि उस का शरीर नीला पड़ गया।

.फौ०—अरे मुझ पर भी तो बहुत मार पड़ी थी ! मैं तो दम साध गया नहीं तो न जाने क्या दुर्गति होती।

किक०—जो हुआ सो हुआ। देखो, मि० .फोर्ड ने यह पत्र भेजा है। उसमें लिखा हुआ है कि आप अब किस प्रकार वहाँ चलें।

.फौलस्टाफ़ एक तो मूर्ख था दूसरे उसके दुराचार ने उसकी बुद्धि भ्रष्ट कर रक्खी थी। कहते भी हैं कि—

कामातुराणां न भयं न लज्जा।

पत्र को पढ़ते ही उसकी बाछें खुल गईं। फिर एक बार मुँह में पानी भर आया और वह किकली से कहने लगा।

"अच्छा मैं आऊँगा। यह तीसरी बार है। कहते हैं कि तीसरी बार मनोकामना सिद्ध हो ही जाती है"।

इतने में .फोर्ड भी ब्रुक के भेस में वहाँ पर पहुँच गया जिसे देखकर .फौलस्टाफ़ ने उस को भी उस रात नियत पीपल तले जाने की सम्मति दी। और गत दिवस की अपनी कहानी सुनाई।

जिस समय .फौलस्टाफ़ सिर पर सींग लगाये भूत के भेस में पीपल तले पहुँचा तो पहले मिसिस .फोर्ड और मिसिस पेज से भेंट हुई। जब कुछ बातें चोटें होने लगीं तो संकेत पाकर

ऐनी श्रौर उस के साथी परियों के रूप में कोलाहल मचाते हुए एक खाई से निकले। किसी के कपड़े काले थे किसी के पीले, किसी के श्वेत, किसी के हरे।

इन को देख कर मिसिस फ़ोर्ड श्रौर मिसिस पेज ने "परी, परी" कहना आरम्भ किया श्रौर .फौलस्टाफ़ बिचारा इतना घबराया कि वहीं भूमि पर पट लेट गया! परियाँ वहाँ पर आने लगीं श्रौर मशालों से इधर उधर देखने लगीं। जब वह फ़ौलस्टाफ़ के पास आईं तो उनमें से एक कहने लगी—

"अरे यह आदमी पवित्र है या अपवित्र"। दूसरी ने उत्तर दिया।

"इसकी उँगलियों को मशाल दिखाश्रो। यदि यह शुद्ध होगा तो चुप पड़ा रहेगा। यदि अशुद्ध होगा तो जलकर चिल्ला उठेगा"।

अब तो उन्होंने उसकी उँगलियाँ जलाईं श्रौर जब वह चीख़ने लगा तो कहने लगीं "अरे कोई पापी है! कोई पापी है"।

फिर उन्होंने उसे नोचना आरम्भ किया। .फौलस्टाफ़ रोने पीटने लगा इतने में पेज, फ़ोर्ड श्रौर अनेक पुरुष आगये जिन्होंने उसे पकड़ लिया। मिसिस पेज कहने लगी—

"कहिए सर जौन! क्या आपको विण्डसर की स्त्रियाँ पसन्द हैं"।

अब तो .फौलस्टाफ़ समझ गया श्रौर कहने लगा—

"अरे मुझे लोगों ने गधा बना लिया"।

फ़ोर्ड—"अजी गधा नहीं बैल ! अपने सींग तो देखो"।

फ़ौलस्टाफ़ अपने किये पर बड़ा लज्जित हुआ। परन्तु उसी समय एक और बड़ा तमाशा हुआ। स्लेण्डर और केअस श्वेत और हरी परियों को अपने साथ लेगये जो वास्तव में दो लड़के थे। उन्होंने इनको ऐनी समझा था। इसलिए विवाह संस्कार के समय जब उनको मालूम हुआ कि यह लड़के हैं तो वे बड़े घबराये और पेज और उसकी स्त्री से कहने लगे—"हमको धोखा हुआ हमने तो लड़कों से विवाह कर लिया"।

जब फ़ोर्ड और पेज इस अद्भुत घटना पर चकित होरहे थे उसी समय फ़ेण्टन और ऐनी भी अपना विवाह करके वहाँ पर आगये और ऐनी ने कहा—

"पिता जी, क्षमा कीजिए। माता जी, क्षमा कीजिए"।

पेज—अरे तू स्लेण्डर के साथ क्यों नहीं गई।

मि० पेज—अरे तू डाक्टर के साथ क्यों नहीं गई।

फ़ेण्टन—क्षमा कीजिए। आप इसे ऐसों के साथ व्याहते थे जहाँ इसका प्रेम नहीं था। अब इसका अपराध क्षमा कीजिए।

ऐनी के मा बाप ने अपनी पुत्री के विवाह की ख़बर सुन कर इसी पर सन्तोष किया और फ़ेण्टन पेज का दामाद हुआ।

निष्फल प्रेम Love's

(Labours Lost)

फ्रांस में नैवर नामी एक स्थान है। जहाँ बहुत दिन हुए फर्डीनण्ड नामी एक भद्र पुरुष राज करता था। एक समय उसके मन में यह समाई कि ब्रह्मचर्यव्रत धारण करके तीन वर्ष तक विद्या के उपार्जन में अपना जीवन व्यतीत करे। इस प्रयोजन के लिए उसने वे कठिन से कठिन नियम बनाये जो एक ब्रह्मचारी के लिए आवश्यक हैं और अपने तीन दरबारियों को भी अपने साथ यथार्थ ब्रह्मचर्य्य व्रत धारण करने के लिए कहा। इनका नाम बाइरन, लोंगविल और डूमेन था। व्रत धारण करने के समय उनसे एक प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर कराये गये कि हम कभी अमुक नियमों का उल्लङ्घन नहीं करेंगे। लोंगविल ने हस्ताक्षर करते हुए कहा—

"मैं प्रतिज्ञा कर चुका! यह तीन वर्ष का व्रत है। चाहे शरीर दुर्बल हो जाय, परन्तु आत्मा उन्नति करेगा।"

डूमेन—महाराजाधिराज ! आज मैं सांसारिक वैभव को विषयी पुरुषों के लिए त्यागता हूँ। मेरा जीवन अब दार्शनिक विद्या के उपार्जन में व्यतीत होगा। राग, धन तथा वैभव के लिए तो मैं मृतवत् हूँ !

बाइरन्—राजन् ! मेरी भी यही प्रतिज्ञा है। श्रीमन्, मैंने अभी यही व्रत किया है कि तीन वर्ष विद्याप्राप्ति करूँ। परन्तु अन्य भी नियम हैं जिनकी प्रतिज्ञा मैंने नहीं की। जैसे स्त्रीदर्शन न करना, सप्ताह में एक दिन उपवास करना, रात में तीन घंटे से अधिक न सोना और दिन में आँख न लगाना। ये ऐसे कठिन व्रत हैं कि जिनका पालन मेरे लिए दुस्तर है। अब तक मैं दोपहर तक सोया करता था। स्त्रीदर्शन न करना, स्वाध्याय करना, उपवास करना और कम सोना—ये सब कैसे हो सकेंगे ?

राजा—तो तुम्हारा व्रत ही क्या हुआ ?

बाइरन—श्रीमन् ! मैंने तो केवल स्वाध्याय का प्रण किया है।

लोंगविल—नहीं बाइरन ! एक व्रत के अन्तर्गत सब व्रत आजाते हैं।

बाइरन—तो मेरा व्रत हास्य मात्र था। भला स्वाध्याय से क्या लाभ है ?

राजा—स्वाध्याय से हमको उस ज्ञान की प्राप्ति होती है जो अन्यथा नहीं आ सकता।

बाइरन—आपका तात्पर्य उन वस्तुओं के ज्ञान से है जो साधारण बुद्धि के परे हैं।

राजा—हाँ ! स्वाध्याय का पवित्र उद्देश यही है।

बाइरन—साधु ! साधु ! मैं अवश्य स्वाध्याय करूँगा। क्योंकि मुझे वे बातें मालूम होंगी जिनके जानने का निषेध किया गया है। अर्थात् ऐसी जगह खाना खाना सीखूँगा जहाँ खाना वर्जित है। या ऐसे स्थान पर किसी स्त्री का दर्शन करना जहाँ साधारण दृष्टि से कोई स्त्री दिखाई नहीं देती।

राजा—इन बातों से स्वाध्याय में बाधा पड़ेगी। हमको झूठे सुखों से घृणा करनी चाहिए।

बाइरन—सुख तो सभी झूठे हैं और सब से झूठे वे सुख हैं जिनके आदि और अन्त—दोनों में कष्ट हो। जैसे पुस्तकों का पढ़ना ! हम सत्य के प्रकाश के लिए पुस्तकें पढ़ते हैं। परन्तु यह प्रकाश हमारे नेत्रों के प्रकाश को हर लेता है। इससे तो अपने नेत्रों को किसी मृगनयनी की ओर जमाने से अधिक लाभ हो सकता है।

राजा—इसने विद्या के विरोध में कैसी विद्वत्ता ख़र्च की है ? बाइरन ! अब घर जाओ।

बाइरन—नहीं राजन् ! मैंने आप के साथ रहने की प्रतिज्ञा

की है। मैं इसका यथार्थ पालन करूँगा। देखूँ और क्या नियम हैं।

राजा—पढ़ो।

बाइरन—"कोई स्त्री मेरे दरबार से पाँच कोस के भीतर न आने पावे।" क्या इस नियम का नगर में ढँढ़ोरा हो चुका?

लोंग०—चार दिन हुए।

बाइरन—नियम-उल्लङ्घन का दण्ड क्या? अरे इसमें तो लिखा है कि "उसकी जीभ काट ली जायगी।" यह किसका प्रस्ताव था?

लोंग०—मेरा।

बाइरन—क्यों?

लोंग०—जिससे कि वे डर जायँ।

बाइरन—अबलाओं पर ऐसी कठोरता! देखो, इसी नियम में यह भी लिखा है "यदि इन तीन बरसों में कोई मनुष्य किसी स्त्री से बातचीत करता पकड़ा जायगा तो उसको सभा की इच्छानुसार दण्ड दिया जायगा"! क्यों महाराज (राजा की ओर देखकर) इसको तो स्वयं आपही तोड़ देंगे। क्योंकि आप जानते हैं फ़्रांसनरेश की रूपवती कन्या एक्विटन देश के छुटकारे के लिए आप से प्रार्थना करने को आरही है। इसलिए यह नियम व्यर्थ बनाया गया। या राजकुमारी का यहाँ आना वृथा होगा।

राजा—अरे ! इसका तो ध्यानही नहीं रहा था । परन्तु राजकुमारी यहाँ विशेष कार्य्यवश आरही है। इसलिए उसे आज्ञा मिल सकती है।

बाइरन—यदि ऐसा ही है तो आवश्यकता के वशीभूत हो कर हम तीन वर्ष में तीन हज़ार बार नियमोल्लङ्घन करेंगे, क्योंकि प्रत्येक मनुष्य की भिन्न भिन्न आवश्यकतायें हैं, और उन आवश्यकताओं के कारण ही लोग नियमों को तोड़ते हैं !

बाइरन ने इसके पश्चात् प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर कर दिये। परन्तु उसी समय कौस्टार्ड नामक एक गँवार राजा के सम्मुख लाया गया, जिसको कर्म्मचारियों ने राज-आज्ञा के विरुद्ध एक स्त्री जैकिण्टा के साथ कुत्सित व्यवहार करते पकड़ा था। राजा ने उसी समय उसको हवालात कर दी और हुक्म दिया कि सात दिन तक इसको सिवा पानी के और कुछ न दिया जाय ; यही इसका दण्ड है ।

जिस कर्म्मचारी ने कौस्टार्ड और जैकिण्टा को पकड़ा था उसका नाम आर्मैडो था, जो हस्पानिया का रहनेवाला था ! यद्यपि इस पुरुष ने एक आदमी को स्त्री से व्यवहार करने के अपराध में पकड़ लिया था परन्तु वास्तविक बात यह है कि वह स्वयं जैकिण्टा पर मोहित था और कौस्टार्ड के पकड़ने की असली वजह यही थी !

उपर्युक्त घटना के दूसरे दिन फ्रांस की राजकुमारी अपनी सहेलियों—रोज़ालिन, मैरिया, और कैथरायन तथा एक राजमंत्री बोइट नामी के साथ नैवर के राज में आ उपस्थित हुई। उसके आगमन की सूचना राजा को दी गई, राजा अपने साथियों—बाइरन, लोंगविल और डूमेन—के साथ दरबार के बाहर ही राजकुमारी से भेंट करने आया। उसके आराम के लिए राजदरबार से बाहर डेरे तान दिये गये थे; क्योंकि तीन वर्ष तक किसी स्त्री को भीतर आने की आज्ञा नहीं थी।

राजा को देखते ही राजकुमारी और उसकी सहचरियों ने अपने मुँह पर वस्त्र डाल लिये। राजा ने कहा—

"सुन्दर कुमारी! नैवर के दरबार में मैं आप का स्वागत करता हूँ।"

राजकुमारी—"सुन्दर" शब्द मैं आप ही को लौटाती हूँ! यह 'दरबार' भी नैवर का नहीं है। इस* की छत इतनी ऊँची है कि यह आप का दरबार नहीं हो सकता। रहा 'स्वागत', सो क्या खेतों और जंगल में ठहरा कर स्वागत किया जाता है?

राजा—आप मेरे दरबार को भी चलेंगी!

---

* राजकुमारी के कहने का तात्पर्य यह है कि वह नगर के बाहर ठहराई गई थी, न कि दरबार में। इस लिए राजा का यह कहना कि तुम नैवर के दरबार में आई हो, असत्य था।

राजकुमारी—उस समय मेरा स्वागत होगा। चलो मुझे ले चलो!

राजा—राजकुमारि! मैंने एक प्रतिज्ञा कर रक्खी है!

कुमारी—प्रतिज्ञा टूट भी सकती है।

राजा—नहीं देवि! कदापि नहीं। मेरी इच्छा यही है।

राजकुमारी—यह इच्छा ही तोड़ देगी।

राजा—श्रीमती जी यह नहीं जानतीं कि मेरी इच्छा कितनी प्रबल है।

राजकुमारी—मैंने सुना है कि आपने स्त्री को न देखने की प्रतिज्ञा की है। ऐसी प्रतिज्ञा तो खण्डनीय ही है। अस्तु! मुझे अपना काम करना चाहिए! श्रीमन्, इस पत्र को (एक काग़ज़ देकर) देखिए और जो कुछ इसमें लिखा है उसे स्वीकृत कीजिए।

राजा—यह काम भी धीरे धीरे हो जायगा!

राजकुमारी—आप मुझे जल्दी ही उत्तर दे दीजिए, क्योंकि यदि मैं चिरकाल तक यहाँ रहूँगी तो आप के अध्ययन में भङ्ग होगा और आपकी प्रतिज्ञा झूठी होगी।

इस समय बाइरन रोज़ालिन से बातें करने लगा। उसने कहा—

"क्या मैं तुम्हारे साथ एक बार ब्रबण्ट में नहीं नाचा था?"

रोज़ालि०—"क्या मैं तुम्हारे साथ एक बार ब्रबण्ट में नहीं नाची थी?"

बाइरन—मुझे मालूम है कि तुम नाची थीं।

रोज़ालि०—फिर प्रश्न करने से क्या प्रयोजन ?

इस प्रकार बाइरन और रोज़ालिन परस्पर बात चीत करने लगे। यदि कोई और इनकी बातों को सुनता तो वह यही समझता कि बाइरन रोज़ालिन पर मोहित हो गया है। डूमेन भी मन ही मन में कैथरायन के रूप की प्रशंसा करने लगा। लोंगविल को मैरिया का सौंदर्य ऐसा मनोहर प्रतीत हुआ कि उसने उसके विषय में अधिक परिचित होने के लिए बोइट से पूछा—"यह श्वेत वस्त्र पहने कौन है ?"

बोइट—एक स्त्री।

लोंगविल—मैं इस का नाम चाहता हूँ।

बोइट—इसका एक ही नाम है। वह आपको नहीं मिल सकता।

लोंग०—यह किसकी लड़की है ?

बोइट—अपनी माता की।

लोंग०—ईश्वर आपकी दाढ़ी को चिरायु करे।

बोइट—नाराज़ न हूजिए! यह फाकन बृज की बेटी है।

लोंग०—यह तो परम सुन्दरी है।

जिस प्रकार राजा के साथी प्रतिज्ञा के विरुद्ध राजकुमारी की सहचरियों पर मोहित हो गये थे इसी प्रकार राजा का हृदय भी मदनबाणों से बिध चुका था और जो कुछ बातें उस

की राजकुमारी के साथ हुई उनसे प्रकट होता था कि वह उस से प्रेम करने लगा है। इस प्रकार जिन जिन पुरुषों ने ब्रह्मचर्य्य व्रत धारण करने की प्रतिज्ञा की थी वे सब के सब इन्द्रियवश हो गये। आर्मैंडो जैकिण्टा पर आसक्त था, बाइरन रोज़ालिन पर, लोंगविल मैरिया पर, डूमेन कैथरायन पर और राजा राजकुमारी पर।

आर्मैंडो ने कौस्टार्ड को बुलाकर उसको छोड़ देने का वादा किया; अगर वह उसका एक पत्र जैकिण्टा को दे आवे। कौस्टार्ड ने इस सेवा को स्वीकार कर लिया। इसी प्रकार बाइरन ने भी उसी के हाथ एक पत्र अपनी प्राणप्यारी रोज़ालिन को भेजा।

कौस्टार्ड ने चाहा कि जैकिण्टा के पत्र को फेंकदे और बाइरन की चिट्ठी रोज़ालिन के पास पहुँचा दे। परन्तु दैवगति से कुछ का कुछ हो गया। कौस्टार्ड पढ़ा तो था ही नहीं, उसने जैकिण्टा के पत्र को जाकर रोज़ालिन के हवाले कर दिया; जिस को पढ़कर उसे बड़ा ही आश्चर्य हुआ—क्योंकि वह आर्मैंडो को नहीं जानती थी।

यहाँ बाइरन का पत्र, जिसे कौस्टार्ड ने जंगल में फेंक दिया था, दो शिकारियों के हाथ पड़ गया। उन्होंने बाइरन का ऐसा प्रेमपूरित पत्र देखकर बड़ा आश्चर्य किया; क्योंकि यह एक प्रसिद्ध बात थी कि राजा और उसके साथियों ने ब्रह्मचर्य्य व्रत धारण

किया है। इस लिए उन शिकारियों ने इस पत्र को राजा की सेवा में उपस्थित कर दिया।

इस पत्र को देने से पहले एक अद्भुत घटना हुई। बाइरन ने अपनी प्रेयसी के लिए एक और पत्र लिखा था, जिसको वह एक पार्क (बाग़) में टहलते टहलते बार बार पढ़ रहा था; क्योंकि प्रेमीजनों का स्वभाव है कि वे प्रेमपत्र को लिख कर बार बार पढ़ा करते हैं। ऐसा करने से उन को प्रायः वही आनन्द होता है जो प्यारी के साथ बात करने से। जिस समय बाइरन इस कार्य्य में संलग्न था, दूसरी ओर से राजा भी एक पत्र को पढ़ता हुआ आता दिखाई दिया। बाइरन छिपने के अभिप्राय से एक वृक्ष पर चढ़ गया और वहाँ से सुनता रहा कि राजा क्या पढ़ रहा है। राजा ने पढ़ा—

"हे सुमुखि ! स्वर्णमयी सूर्य्यकिरणें भी प्रातःकाल की गुलाब की ओस का इस प्रकार चुम्बन नहीं करतीं जिस प्रकार तुम्हारे नयनों की ज्योति मेरे मुख पर बहते हुए आँसुओं को चूमती है। और न समुद्र के स्वच्छ जल में रुपहले चन्द्रमा का आभास ऐसा झलकता है जैसा आपका चन्द्रवदन मेरे आँसुओं के कणों में ! जो जल-विन्दु मेरे नेत्रों से निकलते हैं उन में तुम्हारी ही ज्योति झलकती है। जलविन्दु क्या हैं, आपकी सैर करने की सवारी है। मेरा रुदन और आपकी सैर। यदि आप मेरे आँसुओं की ओर दृष्टि करें तो इनमें अपना ही प्रकाश आप को

मिलेगा। हे सुन्दरियों में सुन्दरी! मैं आप के रूप का कहाँ तक वर्णन करूँ!"

राजा तो पढ़ता पढ़ता आगे बढ़ गया। उसके पीछे लोंगविल भी एक प्रेमपत्र पढ़ता हुआ वहाँ पर आया जिसमें लिखा था "क्या आप के कटाक्ष मुझे मजबूर नहीं करते कि मैं अपनी प्रतिज्ञा का भंग करूँ। किन्तु हे सुमुखि! मेरी प्रतिज्ञा यह थी कि किसी स्त्री का दर्शन न करूँगा। परन्तु आप स्त्री नहीं, स्वर्ग की अप्सरा हैं। मेरा प्रण सांसारिक था, परन्तु आप पारलौकिक हैं। मेरी प्रतिज्ञा ओस के समान है और आप की आँखें सूर्य्य के सदृश हैं, जिनकी गर्मी से प्रतिज्ञा-रूपी ओस सूख जाती है। यदि मैं प्रतिज्ञाभङ्ग करूँ तो इस में मेरा क्या दोष है? क्योंकि ऐसा कौन मूर्ख है जो एक स्वर्ग की देवी के लिए बात को न तोड़ दे"।

इसके थोड़ी देर बाद डूमेन भी प्रेमालाप में मग्न होता हुआ वहाँ पर आ निकला, और पत्र पढ़ने के पीछे कहने लगा "क्या अच्छा होता यदि राजा, बाइरन और लोंगविल भी मेरी तरह प्रेमासक्त होते, क्योंकि उस दशा में मेरे ऊपर प्रतिज्ञा-भङ्ग का दोष न लग सकता"।

यह सुनकर राजा और लोंगविल डूमेन के पास चले गये। राजा ने कहा—

"मैंने तुम दोनों के पत्र सुन लिये हैं। कोई तो स्वर्ग की

अप्सरा के लिए प्रतिज्ञाभङ्ग करने को तैयार है। कोई अपनी प्रेयसी से मिलने का उत्सुक हो रहा है। तुमने तो ब्रह्मचर्य्य व्रत धारण किया था, परन्तु उस व्रत का खण्डन हो गया। यदि बाइरन सुनेगा तो क्या कहेगा"।

जिस समय राजा यह कह रहा था, बाइरन ने वृक्ष की शाखा से उतर कर कहा—

"महाराज! क्षमा कीजिए। आप किस लिए इन लोगों का, प्रेमासक्त होने के कारण तिरस्कार करते हैं? क्योंकि श्रीमान् भी तो उसी जाल में फँसे हुए हैं। क्या आपके अश्रु-विन्दुओं में आपकी प्यारी का मुख नहीं झलकता। आप इन बिचारों की आँखों का तिल देख रहे हैं, परन्तु मुझे आपकी आँखों में शहतीर दिखाई देता है। आहा! मैंने कैसा तमाशा देखा"

राजा—अरे! क्या तूने मुझे देख लिया? हमको धोखा हो गया!

बाइरन—नहीं महाराज! मुझे धोखा होगया कि आप लोगों के साथ ऐसा व्रत धारण किया। क्या आपने कभी मुझसे इस प्रकार की बातें सुनीं? क्या मैंने कभी किसी रमणी के लिए इस प्रकार के पत्र लिखे? क्या मैं किसी के प्रेम में इस प्रकार विकल हुआ? आपको धिक्कार है!

जिस समय बाइरन इस प्रकार अपनी सचाई की डींगें मार रहा था उसी समय राजा के पास वह पत्र आया जिसे बाइरन ने रोज़ालिन के पास भेजा था और जो कैस्टार्ड की मूर्खता के कारण राजा के हाथ लग गया था। राजा ने इस चिट्ठी को बाइरन के हाथ में देकर कहा, "पढ़िए"। बाइरन ने अपना भाण्डा फूटता देख कर जल्दी से उस पत्र को फाड़ डाला।

डूमेन ने पत्र के टुकड़ों को जोड़ कर पढ़ लिया! फिर क्या था, उन सब में बाइरन भी शामिल होगया।

राजा ने पूछा—

"क्या इस पत्र में कुछ प्रेम-सम्बन्धी बात थी?"

बाइरन ने उत्तर दिया "वाह! वाह! कौन ऐसा मनुष्य है जो रोज़ालिन के रूप को देख कर उस पर मोहित न हो जाय।"

अब सब आपस में मिल गये और उन्होंने इन फ़्रांसीसी रमणियों से विवाह करने का उपाय सोचा। पहले तो सबने अपनी अपनी प्रिया के लिए उत्तम उत्तम वस्त्र और आभूषण भेजे। इसके पश्चात् उनके साथ नृत्य-क्रीड़ा के लिए लिखा। राजकुमारी ने इन वस्त्रादि को देखकर अपनी सखियों से कहा—

"आहा! हम तो, जब तक घर जाने का समय आवेगा, बहुत अमीर हो जायँगी। ओहो! राजा ने तो हमको हीरों में जड़ दिया!"

रोज़ालिन—श्रीमतीजी ! क्या इनके साथ और कुछ भी आया है ?

राजकुमारी—हाँ ! कागज़ के इस पूरे त.ख़्ते के दोनों ओर हाशिये पर भी लिखा हुआ यह पत्र आया है रोज़ालिन ! तुम्हारे पास भी तो कुछ आया है। भला बताओ तो सही किसने भेजा है ?

रोज़ालिन—हाँ ! हाँ ! देखिए ! बाइरन का यह पत्र है ।

राजकुमारी—कैथरायन ! तुमको भी तो डूमेन ने कुछ भेजा है ।

कैथरायन—हाँ ! यह दस्ताना है ।

राजकुमारी—क्या एक ही दस्ताना है । दो नहीं ?

कैथरायन—दो हैं । जी, दो ! और इनके अतिरिक्त एक लम्बा चौड़ा सौन्दर्य्य की प्रशंसा में पत्र भी लिखा है।

मेरिया—लोंगविल ने मेरे लिए ये मोती भेजे हैं और एक आध मील लंबा चिट्ठा !

अब इन सब ने राजा की पार्टी को धोखा देने के इरादे से ऐसा किया कि एक के वस्त्र दूसरी ने पहिन लिये। रोज़ालिन ने राजकुमारी के और राजकुमारी ने मैरिया के इत्यादि। इस प्रकार जब राजा अपने मित्रों सहित आया तो नृत्य के समय हर एक ने अपनी अपनी कल्पित प्रेयसी का हाथ पकड़ कर एकान्त में अपनी अपनी प्रेम की कहानी सुनाई और अपनी अपनी

अँगूठियाँ भी दे आये। परन्तु किसी ने यह न पहिचाना कि हम अपनी प्यारियों के बदले दूसरों को अँगूठियाँ दिये जाते हैं। क्योंकि राजकुमारी और उसकी सहेलियों के मुख वस्त्रों से ढके हुए थे।

जब दूसरे दिन राजा फिर राजकुमारी से मिलने आया और निवेदन किया कि आप हमारे महल में चल कर उसको अपने चरणों से सुशोभित कीजिए तो राजकुमारी ने उत्तर दिया—

"नहीं नहीं! मैं तो इसी जंगल में रहूँगी। क्योंकि झूठे आदमियों को मैं पसन्द नहीं करती!"

राजा—देवि! मैंने क्या झूठ बोला है?

राजकुमारी—आपने प्रतिज्ञा भंग की है।

राजा—देवि! यह केवल आपके नेत्रों का प्रताप था।

राजकुमारी—नहीं नहीं! प्रताप किसी के व्रत का खण्डन नहीं करता! क्या तुम कल यहाँ नहीं आये थे?

राजा—हाँ आया था।

राजकुमारी—फिर तुमने अपनी प्रिया से क्या प्रतिज्ञा की थी?

राजा—यही कि जीवन पर्य्यन्त मैं तुम्हारा दास रहूँगा।

राजकुमारी—जब वह तुमसे कहेगी तो तुम उसको छोड़ दोगे।

राजा—अपनी क़सम! कभी नहीं!

राजकुमारी—शपथ न खाओ। तुम एक बार उसे तोड़ चुके हो।

राजा—यदि अबकी बार मैं शपथ को तोड़ूँ तो फिर कभी मेरा विश्वास न करना।

राजकुमारी—कभी नहीं! (रोज़ालिन से) कहो रोज़ालिन रात को तुमसे इन्होंने क्या कहा था?

रोज़ालिन—यह कहते थे कि तुम मुझे नेत्रों की ज्योति से भी अधिक प्यारी हो और तुम संसार भर से अधिक सुन्दर हो। मैं या तो तुमसे विवाह करूँगा या तुम्हारे ही प्रेम में मर जाऊँगा।

राजकुमारी—कहो राजन्! क्या तुम अब इस प्रतिज्ञा का पालन करोगे?

राजा—अपने जीवन की क़सम! देवि! मैंने इस स्त्री के साथ कभी इस प्रकार की प्रतिज्ञा नहीं की!

रोज़ालिन—ईश्वर की क़सम! तुमने की थी। इसका साक्षात् प्रमाण यह लीजिए। क्या यह आपकी ही अँगूठी है? और क्या यह रात आपने मुझे नहीं दी थी?

राजा—नहीं नहीं! यह अँगूठी मैंने राजकुमारी को दी थी। इसकी बाँह पर यह हीरा लगा था।

राजकुमारी—क्षमा कीजिए। यह वस्त्र रोज़ालिन पहिने हुए थी। (बाइरन से) और देखिए आपने मुझे यह

मोती दिया था, क्या आप मुझसे विवाह करना चाहते हैं या अपना मोती वापिस लेना ?

बाइरन—कुछ नहीं। मैं दोनों छोड़ता हूँ। अब मैं चाल समझ गया ! इन सब ने हमारी हँसी उड़ाने के लिए यह जाल रचा था।

इसी समय राजकुमारी ने सुना कि उसके पिता का देहान्त होगया। यह सुनते ही अपने देश जाने की तैयारियाँ कर दीं। राजा ने आग्रह करके कहा—

"श्रीमतीजी ठहरें," परन्तु राजकुमारी ने उसकी प्रार्थना स्वीकार नहीं की। जब राजा ने फिर आग्रह करके कहा कि यदि आप जाती ही हैं तो हमसे प्रेम करने की प्रतिज्ञा करती जाइए। इस पर राजकुमारी ने उत्तर दिया।

"राजन् ! इस समय आपने व्रत-खण्डन करके बड़ा अपराध किया है, इसलिए आपकी शपथ का विश्वास नहीं कर सकती। यदि आप बारह वर्ष के लिए राजपाट छोड़कर किसी एकान्त स्थान का सेवन करें और यम नियम के अनुसार तपस्वी का जीवन व्यतीत करने के पश्चात् मेरे पास आवें तो मैं अवश्य आप से ब्याह कर लूँगी।"

राजा—मैं शपथ खाता हूँ कि ऐसाही करूँगा।

राजकुमारी—आपकी शपथ का कुछ भरोसा नहीं।

बाइरन—(रोज़ालिन से) प्यारी मुझसे क्या कहती हो—?

रोज़ालिन—आप भी अपना प्रायश्चित्त कीजिए और तीन वर्ष तक हस्पताल में दरिद्र रोगियों की सेवा कीजिए। तब मेरी ओर ध्यान दीजिए।

डूमेन—(कैथरायन से) प्यारी, मेरे लिए क्या उत्तर है?

कैथरायन—साल भर और एक दिन तप कीजिए! तब मैं आप की बात सुनूँगी।

लोंग०—(मैरिया से) तुम भी कहो!

मैरिया—आपको भी साल भर प्रतीक्षा करनी चाहिए।

यह कह कर वे सब की सब चली गईं और ये लोग हाथ मलते रह गये!



तृतीय रिचार्ड

(Richard III)

"छठे हनरी" के 'तीसरे भाग' में हम दिखला चुके हैं कि रिचार्ड ग्लैास्टर ने छठे हनरी को बन्दीगृह में मार डाला। यह भी बतलाया जा चुका है कि चैाथे एडवर्ड के एक लड़का उत्पन्न हो गया था जिसका नाम भी एडवर्ड था ग्रैार जो ग्रपने पिता की मृत्यु पर पाँचवें एडवर्ड के नाम से गद्दी पर बैठा।

रिचार्ड ग्लैास्टर कुटिल प्रकृति का मनुष्य था। यद्यपि इस समय लंकास्टर वंश के लोग मर चुके थे ग्रैार यार्कवंश को विजय प्राप्त हुई थी परन्तु ग्रब ग्लैास्टर स्वयं राज्य छीनना चाहता था। यह मालूम हो चुका है कि ग्लैास्टर चैाथे एडवर्ड का सब से छोटा भाई था। मँझला क्लेरेंस था। ग्लैास्टर यह चाहता था कि एडवर्ड के पीछे स्वयं गद्दी पर बैठे। इस लिए उसने कुटिलता से क्लेरेंस को मारने का उपाय सोचा।

पहले तो उसने राजा के कान भर दिये कि बहुत से लोग ग्राप का प्राण लेना चाहते हैं ग्रैार उनमें हमारा भाई क्लेरेंस

और एक लार्ड हेस्टिंग्ज़ नामी भी हैं। उसके पश्चात् क्लेरेंस को यह निश्चय दिला दिया कि यह सब रानी की करतूत है। एडवर्ड ने अपने प्राणों को संदिग्ध अवस्था में देखकर क्लेरेंस को क़ैद कर दिया जिस समय वह ब्रेकनबरी नामक एक लार्ड के साथ जो लन्दन के मीनार नामी बन्दीगृह का दारोग़ा था जा रहा था। मार्ग में रिचार्ड ग्लौस्टर मिला और उसे प्रणाम करके कहा—

"भाई! आपके साथ पुलिस कैसी?"

क्लेरेंस—महाराज ने मेरे शरीर की रक्षा के लिए बन्दीगृह तक सिपाही साथ कर दिये हैं।

ग्लौस्टर—क्यों।

क्लेरेंस—क्योंकि मेरा नाम जार्ज क्लेरेंस है।

ग्लौस्टर—यह तो आप का दोष नहीं। इस अपराध के लिए तो आपके नाम रखनेवाले को पकड़ना चाहिए था। क्या बन्दीगृह में आप का फिर नामकरण होगा? मुझे बताइए तो क्या बात है?

क्लेरेंस—मुझे भी ज्ञात नहीं है। परन्तु मैंने केवल इतना सुना है कि किसी ज्योतिषी ने उससे कह दिया है कि तुम्हारी सन्तान को 'ज' से हानि पहुँचेगी। अब चूँकि मेरा नाम 'ज' से आरंभ होता है इस लिए मुझी पर संदेह किया गया है।

ग्लौस्टर—भाई! इसका कारण केवल यह है कि लोग स्त्रियों

के वश में हैं। आप को क़ैद में भेजनेवाला राजा नहीं किन्तु रानी है। इसी रानी ने अपने भाई की सहायता से लार्ड हेस्टिंग्ज़ को क़ैद करा दिया।

क्लेरेंस—ईश्वर! ईश्वर! अब तो रानी के सम्बन्धियों के सिवा और किसी का ठीक नहीं है?

ग्लौस्टर—आप बहुत दिनों क़ैद न रहेंगे। मैं बहुत जल्द छुड़ाने का उपाय करूँगा।

क्लेरेंस तो बन्दीगृह में चला गया और ग्लौस्टर ने बजाय छुड़ाने के उस को मार डालने की तैयारियाँ कीं और दो घातकों को रुपया देकर इस काम की पूर्ति के लिए भेजा।

एक दिन क्लेरेंस किसी सोच में बैठा हुआ था। उसे उदास देखकर ब्रेकनबरी ने कहा—

"श्रीमान्, आज क्यों दुखित हैं"?

क्लेरेंस—मैंने कल की रात इस कष्ट से काटी है और ऐसे ऐसे भयानक स्वप्न देखे हैं कि यदि मुझे संसार का राज्य मिले तो भी ऐसी दूसरी रात्रि जीना नहीं चाहता।

ब्रेकनबरी—श्रीमान् ने क्या स्वप्न देखा है? कृपया बताइए।

क्लेरेंस—मैंने देखा कि मैं क़ैदख़ाने को तोड़कर ग्लौस्टर के साथ बरगण्डी (फ़्रांस) को भागा जा रहा हूँ। जब मैंने इँगलैण्ड की ओर देखा तो गुलाब-युद्ध (Wars of

Roses) की बहुत सी बातें याद आ गईं! जब हम नहतों पर ठहल रहे थे उस समय ग्लैास्टर का पैर फिसला ग्रैार ज्योंही मैंने उसे सँभाला उसने मुझे समुद्र में डाल दिया। हे परमात्मन्! डूबने में कैसा कष्ट होता है। पानी की भयानक आवाज़ मेरे कानों में आ रही थी ग्रैार मृत्यु आँखें फाड़ फाड़ कर मेरी ग्रोर देख रही थी। मैंने सैकड़ों आदमियों को देखा जिनको मछलियाँ खा रही थीं! समुद्र की तह में सैकड़ों जहाज़ों के टूटे फूटे त़ख्ते पड़े हुए थे। मानों स्वर्णीय आभूषण ग्रैार मोती रक्खे हुए थे। बहुत से मुर्दों की खोपड़ियों में गड़ गये थे। बहुत से उनकी पुतलियों में घुस गये थे।

ब्रेकनबरी—क्या आप को मृत्यु के समय यह सब देखने का अवसर मिल गया?

क्लेरेंस—मुझे तो मिल गया। मैंने कई बार चाहा कि आत्मा शरीर से निकल जाय पर न निकला! ग्रैार पानी मेरे शरीर में घुस घुस कर मुझ को कष्ट देने लगा!

ब्रेकनबरी—क्या आप इतने कष्ट से जागे नहीं?

क्लेरेंस—नहीं नहीं। मेरा स्वप्न मरण पश्चात् भी रहा! ग्रैार उस समय आत्मा को बहुत दुःख हुआ। मैं नरक में पहुँचा ग्रैार पहले मुझे मेरा ससुर वारिक मिला

और कहने लगा—"पापी क्लेरेंस ! इस अंधकाररूपी राज में तुझे मिथ्या-भाषण का क्या दण्ड मिल सकता है ?"। अब वह तो छिप गया और एक रक्त-मय आत्मा आ कर कहने लगा—"अब पापी क्लेरेंस आ गया, जिसने मुझे ट्यूक्सबरी के रणक्षेत्र में मारा था। इसे पकड़ लो और भले प्रकार कष्ट दो।" यह सुनकर बहुत सी दुरात्मायें आ गईं और मेरे कानों में भयानक भयानक शब्द करने लगीं। मैं काँपने लगा और काँपते ही जाग उठा। परन्तु जागने के पश्चात् भी मुझे बहुत देर तक यही मालूम होता रहा कि मैं नरक में हूँ।

ब्रेकनबरी—स्वामिन् ! आप के डरने का कुछ आश्चर्य नहीं है, मैं तो सुनकर ही भयभीत हो रहा हूँ।

क्लेरेंस—मैंने एडवर्ड के लिए वह काम किये हैं जो अब मेरी आत्मा के विरुद्ध साक्षी दे रहे हैं। अब देख लो इसका कैसा इनाम मिल रहा है। ईश्वर ! यदि मेरी हार्दिक प्रार्थनायें और पश्चात्ताप मेरे पापों को दूर नहीं कर सकते तो ईश्वर आप केवल मुझे ही दण्ड देलें और मेरी निर्दोष स्त्री तथा बच्चों पर दया कीजिए।

यह कहकर क्लेरेंस बेहोश हो गया और थोड़ी देर में सो

गया ! इतने में वहाँ पर रिचार्ड के भेजे हुए घातक आये और कहने लगे—

"कौन है ?"

ब्रेकनबरी—अरे क्या चाहता है और कैसे आया है ?

१ घातक—मैं क्लेरेंस से बातें करना चाहता हूँ और अपनी टाँगों के बल आया हूँ।

ब्रेकनबरी—ऐसा सूक्ष्म उत्तर !

२ घातक—व्यर्थालाप से मितभाषण अच्छा है।

यह कहकर उसने ब्रेकनबरी को ग्लोस्टर का लिखा एक पत्र दिया जिस में लिखा था कि इन दोनों के संरक्षण में क्लेरेंस को छोड़ दो। ब्रेकनबरी तो इस आज्ञा-पत्र को देखकर चला गया और दूसरा घातक कहने लगा—

"क्या सोते हुए को ही मार दें ?"

१ घातक—नहीं ! नहीं ! जब वह जागेगा तो कहेगा कि धोखे से मार डाला।

२ घातक—अरे मूर्ख, वह जागने कब लगा ?

१ घातक—तो वह कहेगा कि सोते में मारा।

२ घातक—न्याय* के दिन ही कह सकेगा ! परन्तु 'न्याय' शब्द को कहने से मेरे मन में कुछ पछतावा होता है।

---

* ईसाइयों का सिद्धान्त है कि प्रलय के दिन सब मुर्दे क़ब्रों में से उठेंगे और ईश्वर उनका न्याय करेगा।

१ घातक—अरे क्या डर गया ?

२ घातक—हत्या से नहीं, किन्तु दण्ड से ! क्योंकि ईश्वर के दण्ड से कौन बचा सकता है ?

१ घातक—मैं तो समझता था कि तू दृढ़ है।

२ घातक—मैं उसे जीवित रखने में दृढ़ हूँ !

१ घातक—अच्छा मैं जाता हूँ, ग्लोस्टर से यही कह दूँगा।

२ घातक—रह जा ! रह जा ! शायद मेरा यह शुद्ध विचार थोड़ी देर में जाता रहे। क्योंकि मेरी आत्मा में पुण्य के भाव आधे मिनिट से अधिक नहीं रहते !

१ घातक—(थोड़ी देर में) अब तेरा क्या हाल है ?

२ घातक—अभी तक तो कुछ दया बाक़ी है।

१ घातक—सोच तो सही कि इस काम की पूर्त्ति पर हम को कितना इनाम मिलेगा।

२ घातक—अरे मैं इनाम तो भूल ही गया था। अब तो यह अवश्य मारा जायगा।

१ घातक—अब तेरी दया कहाँ गई।

२ घातक—रिचार्ड ग्लैास्टर की थैली में !

१ घातक—जब वह इनाम देने के लिए थैली खोलेगा तो सब दया भाग जायगी !

२ घातक—अच्छा ! जल्दी करो ! दया को भाग जाने दो। बहुत सों को दया होती तक नहीं !

१ घातक—अगर फिर तुझे दया आजाय तो कैसा हो ?

२ घातक—अब मैं इसकी परवा न करूँगा ! इससे लोग भीरु होजाते हैं। न आदमी चोरी कर सकता है। न झूठी शपथ खा सकता है। यह आदमी को निकम्मा कर देती है।

१ घातक—मेरे मन में तो यह अब तक कह रही है कि क्लैरेंस को न मारो !

२ घातक—चल हट ! इसकी बात मत सुन !

१ घातक—मेरा हृदय वज्र का है। यह मेरा क्या करेगी ?

२ घातक—क्या कार्य्य आरम्भ करें ?

१ घातक—इसको तलवार पर उठाकर शराब के पीपे में डाल दो।

२ घातक—अच्छी बताई।

१ घातक—यह तो जाग उठा।

२ घातक—अच्छा, मारो।

१ घातक—नहीं, पहले बातें करेंगे !

क्लैरेंस (जाग कर)—अरे आदमी ! कहाँ गया ! मुझे एक ग्लास शराब दे।

१ घातक—श्रीमन् ! आपको बहुत शराब मिलेगी।

क्लैरेंस—तू कौन है ?

१ घातक—आदमी ! जैसे आप हैं !

क्लेरेंस—हमारी तरह नहीं। हम तो राजवंशी हैं।

१ घातक—हमारी तरह भक्त नहीं।

क्लेरेंस—तेरे शब्द कठोर हैं यद्यपि तेरी आँखें नम्र हैं।

१ घातक—मेरे शब्द राजा के शब्द हैं, परन्तु मेरी आँखें अपनी ही हैं।

क्लेरेंस—कैसे भयानक शब्द बोलता है। अब तेरी आँखों से मुझे डर लगता है! अरे अरे! तुम्हारा मुँह क्यों फीका पड़ गया? तुमको किसने भेजा है? और क्यों?

दोनों घातक—मा-मा-मा—

क्लेरेंस—मारने को?

घातक—हाँ! हाँ!

क्लेरेंस—तुम्हारा जी तो कहने को भी नहीं चाहता, फिर मारोगे कैसे? मित्रो! मैंने आप का क्या अपराध किया है?

१ घातक—आपने हमारा कुछ नहीं किया, राजा का किया है!

क्लेरेंस—तो मुझ से और उससे मेल हो जायगा!

२ घातक—नहीं! महाराज! अब मरने की तैयारी कीजिए!

क्लेरेंस—तो क्या तुम्हारा यही काम है कि निर्दोषों को मारा करो? मेरा क्या अपराध है? मेरे विरुद्ध प्रमाण ही क्या है? कौन से न्यायाधीश ने किस न्यायालय

में मेरे विरुद्ध हुक्म दिया है? जब तक मुझ पर नियमानुसार अभियोग न चलाया जाय, मुझे मारना बड़ाही अनुचित है! मैं तुमको ईसामसीह की शपथ दिलाता हूँ कि तुम चले जाओ। मेरा मारना महा पाप है।

१ घातक—हम जो कुछ करते हैं आज्ञा से करते हैं।

२ घातक—और आज्ञा देनेवाला हमारा राजा है।

क्लेरेंस—मूर्ख राजभक्तो! राजों के राजा ने अपने पवित्र शास्त्र में आज्ञा दी है कि हत्या न करो। फिर क्या तुम उसकी आज्ञा को भंग करके मनुष्य की आज्ञा का पालन करोगे? याद रक्खो वह अवश्य उनको दण्ड देगा जो उसके नियमों का उल्लङ्घन करेंगे।

२ घातक—और इसीलिए ईश्वर ने तुझे दण्ड दिया है। तू ने प्रतिज्ञा की थी कि लंकास्टर वंश के लिए लड़ूँगा।

१ घातक—और फिर इस प्रतिज्ञा को भंग करके अपने राजा के लड़के की आँतें निकाल लीं!

२ घातक—तेरा कर्तव्य था कि इसकी रक्षा करता!

१ घातक—जब तूने स्वयं ऐश्वरीय आज्ञा का भंग किया तो हमको किस प्रकार शिक्षा दे सकता है?

क्लेरेंस—हाय! मैंने यह सब अपने भाई एडवर्ड के लिए

किया। वह तुमको मेरे मारने के लिए नहीं भेज सकता; क्योंकि वह भी तो उसी पाप का भागी है जिसका मैं हूँ। यदि ईश्वर इसका दण्ड देगा तो डङ्के की चोट देगा! तुम ईश्वर का काम क्यों करते हो!

१ घातक—तूने ईश्वर का काम क्यों किया; जब राजकुमार के प्राण लिये?

क्लेरेंस—क्रोध और भ्रातृ-स्नेह के कारण।

१ घातक—तो हम भी तेरे भाई के प्रेम, अपने कर्तव्य और तेरे अपराधों से प्रेरित होकर यह काम कर रहे हैं।

क्लेरेंस—अगर तुमको मेरे भाई से प्रेम है तो मुझसे घृणा मत करो। क्योंकि मुझे वह प्यारा है। यदि इनाम के लिए तुम इस काम को करने के लिए उद्यत हुए हो तो मैं ग्लौस्टर को लिख दूँगा वह तुम्हें एडवर्ड से भी अधिक इनाम देगा!

२ घातक—तुमको धोका हुआ है। ग्लौस्टर तुमसे वैर रखता है।

क्लेरेंस—नहीं नहीं। वह मुझसे प्रेम रखता है। तुम मेरी ओर से उसके पास जाओ।

दोनों घातक—हम तो जायँगे ही।

क्लेरेंस—और उससे कह दो कि हमारे पिता यार्क ने मृत्यु समय उपदेश किया था कि सर्वदा प्रेमपूर्वक रहना।

जब ग्लौस्टर यह बात सुनेगा तो रो पड़ेगा !

१ घातक—आँसू नहीं पत्थर रोयेगा। जैसा हम रोरहे हैं।

क्लेरेंस—उसको बुरा न कहो। वह दयालु है।

१ घातक—जैसे जाड़ों में पाला ! चलो हटो ! तुम धोखे में हो। उसी ने तो हमको भेजा है।

क्लेरेंस—ऐसा नहीं हो सकता। वह तो मुझे क़ैद में देख कर रोता था और कहता था कि मैं तुम्हें छुड़ाऊँगा !

१ घातक—वह ठीक कहता था इस संसाररूपी क़ैद से छुड़ाने के लिए उसने हमें भेजा है।

२ घातक—श्रीमान् ईश्वर का ध्यान करें क्योंकि मृत्यु समय निकटस्थ है।

क्लेरेंस—जब तुम्हारे आत्मा ऐसे पवित्र हैं कि तुम मुझे ईश्वर की आराधना के लिए प्रेरणा करते हो तो तुम अपने आत्मा का क्यों ख़्याल नहीं करते और मुझे मारकर ईश्वर से वैर करते हो।

२ घातक—हम क्या करें।

क्लेरेंस—दया करके अपने आत्मा को पाप से बचालो !

१ घातक—दया करना कायरता और स्त्रीपन है।

क्लेरेंस—निर्दयी होना पशुपन है।

२ घातक—पीछे की ओर देखो !

यह कहकर उन दोनों ने क्लेरेंस का वहीं ढेर कर दिया और उसकी लाश को पीपे में छिपा दिया।

यद्यपि एडवर्ड ने पहले ग्लैास्टर की चालाकियों से क्लेरेंस की मृत्यु के लिए हुक्म दे दिया था परन्तु फिर क्षमा कर दिया। लेकिन रिचार्ड ग्लैास्टर ने जल्दी से उसे मरवा डाला। जिस समय एडवर्ड ने क्लेरेंस की मृत्यु की ख़बर सुनी उसे बहुत खेद हुआ और वह ढारें मारकर रोने लगा। क्योंकि अब उसे अपने भाई के वे सब पराक्रम याद आगये जो उसने ट्यूक्सबरी के रण-क्षेत्र में किये थे। एडवर्ड उस समय बीमार था और थोड़े दिनों में मर गया।

अब तो रिचार्ड की चढ़ बनी। एडवर्ड ने मरते समय यह निश्चय किया था कि राजकुमार एडवर्ड राजा हो और रिचार्ड उसका संरक्षक। रिचार्ड दिखलाने को तो सब से प्रेम करता था परन्तु उसके मन में सदा कपट-कतरनी चलती रहती थी। क्लेरेंस को मरवा ही चुका था। अब राजकुमार एडवर्ड और उसके भाई राजकुमार रिचार्ड की बारी आई। राजकुमार एडवर्ड और उसकी माता एलीज़िबेथ उस समय लार्ड रिवर्स और लार्ड ग्रेकी संरक्षकता में थे।

लार्ड रिवर्स एलीज़िबेथ का भाई था और लार्ड ग्रे उसका पहले पति से उत्पन्न हुआ पुत्र। इन दोनों से रिचार्ड को बैर था। और इनके सामने वह अपने भतीजों को कुछ हानि नहीं पहुँचा सकता था इसलिए सब से पहले उसने इन्हीं की ख़बर

की और बकिङ्घम की सहायता से इनको पौम्फ़्रेट के क़िले में क़ैद कर दिया। इलीज़िबेथ ने जब अपने सम्बन्धियों की इस दुर्दशा का हाल सुना तो बड़ी दुःखित हुई और उसे मालूम हो गया कि रिचार्ड मेरा और मेरे वंशजों का नाश करना चाहता है। इसलिए वह भाग कर अपने छोटे बेटे रिचार्ड के साथ किसी धर्म-सम्बन्धी मठ को चली गई।

जब राजकुमार एडवर्ड ने अपने मामा का हाल रिचार्ड ग्लौस्टर से पूछा तो उसने कह दिया कि ये तुम्हारे सम्बन्धी तुमको मार डालना चाहते हैं। इसलिए यही उचित मालूम होता है कि उनको तुम्हारे पास से अलग कर दिया जाय और तुमको तुम्हारे भाई सहित लन्दन के मीनार में भेज दिया जाय क्योंकि वह जगह बहुत अच्छी है। एडवर्ड ने यद्यपि इस बात को पसन्द न किया परन्तु बेचारे को जाना पड़ा और उसका छोटा भाई रिचार्ड भी महारानी इलीज़िबेथ के पास से छीन कर वहाँ भेज दिया गया। इस समय यद्यपि नाममात्र को पंचम एड-वर्ड देश का राजा था परन्तु सब अधिकार रिचार्ड ग्लौस्टर के हाथ में था। वह जो चाहता था वही करता था और शनैः शनैः अपने को गद्दी पर बिठाने का उपाय करता जाता था।

पहले तो उसने लार्ड रिवर्स और ग्रे को इस अपराध में फाँसी लगवा दी कि ये लोग मेरे मारने की तैयारियाँ कर रहे हैं। इसके पश्चात् लार्ड हेस्टिंग्ज़ का सिर कटवा लिया, क्योंकि वह रिचार्ड को राजा बनाना स्वीकार नहीं करता था।

इतने आदमियों के मरने पर लन्दन में शोर मच गया और नगर के लोग उत्तेजित हो गये, परन्तु बकिङ्घम और रिचार्ड ने नई नई झूठी बातें गढ़ कर उनको शान्त करना चाहा। रिचार्ड मक्कारी से एक कमरे में दो पादरियों के साथ धर्मशास्त्र को पढ़ने और ईश्वर की आराधना में संलग्न हो गया और बकिङ्घम को सिखला कर लोगों को शान्त करने के लिए भेजा।

बकिङ्घम ने लोगों से हेस्टिंग्ज़ को प्राणदण्ड देने का कारण बतला कर कहा कि प्रथम तो चौथा एडवर्ड * रिचार्ड ड्यूक आफ़ यार्क का लड़का नहीं था, क्योंकि उसका जन्म ऐसे समय हुआ था जब रिचार्ड फ़्रांस की लड़ाइयों में फँस रहा था, इसलिए वह जारज मालूम होता है और यह बात यों भी सिद्ध होती है कि चौथे एडवर्ड का आकार अपने पिता के सदृश न था दूसरे यह कि पाँचवाँ एडवर्ड चौथे एडवर्ड का धार्मिक पुत्र नहीं है क्योंकि इसकी माता इलीज़िबेथ का विवाह होने से पहले चौथे एडवर्ड की मँगनी फ़्रांस में हो चुकी थी। ऐसी अवस्था में इलीज़िबेथ न तो उसकी धर्मपत्नी हो सकती है और न उसके लड़के उसके धर्मपुत्र। इसलिए अब राज का वास्तविक अधिकारी रिचार्ड ग्लौस्टर ही है। यह अपने पिता रिचार्ड आफ़

*यह रिचार्ड वह है जिसने छठे हेनरी से लड़ाई की और जो चौथे एडवर्ड का बाप था।

यार्क का सच्चा पुत्र है, इसका आकार भी अपने पिता के तुल्य है और यह धार्मिक भी है।

लोग इस विचित्र कथा को सुन कर चकित हो गए, क्योंकि उनको स्वप्न में भी इन झूठी बातों का ध्यान न था। वे अपने छोटे राजा को गद्दी से उतारना नहीं चाहते थे। परन्तु रिचार्ड ग्लोस्टर और बकिङ्घम ने बड़े बड़े आदमियों को ऐसा भर रक्खा था और अपने विरोधियों के मुँह तलवार से बन्द कर रक्खे थे कि लन्दन का लार्ड मेयर (मुख्य शासक) और अन्य लोग रिचार्ड को राज देने पर राज़ी होगये और बकिङ्घम चालाकी से उन सब लोगों को साथ लेकर उस महल में आया जहाँ रिचार्ड बगलाभगत बना पादरियों सहित शास्त्राध्ययन कर रहा था।

जिस समय रिचार्ड को इन सबके आने की सूचना दी गई तो दूत ने आकर उत्तर दिया—

"महाराज इस समय ईश्वर की आराधना में संलग्न हैं। कृपा करके कल आइए। पारलौकिक विचारों में सांसारिक बातों से बाधा पड़ेगी।"

बकिङ्घम—भाई! महाराज से कह दो कि इस समय बड़ा आवश्यक कार्य्य है।

जब दूत चला गया तो बकिङ्घम लार्ड मेयर और अन्य पुरुषों से कहने लगा—

"देखिए! रिचार्ड ग्लैास्टर कोई एडवर्ड तो है ही नहीं जो हमेशा सांसारिक व्यसनों में लिप्त रहे। यह तो धार्मिक है और ईश्वर के ध्यान में मग्न है। एडवर्ड की भाँति यह मंत्रियों और राजसभासदों सहित केवल राजकाज में ही नहीं रहता किन्तु पादरियों की सत्संगति में अपने आत्मा की उन्नति करता रहता है। वह दिन बड़ा उत्तम होगा जब यह धार्मिक पुरुष इँग्लैंड का राजा होगा।"

इतने में ग्लैास्टर कोठे पर आया। उसके हाथ में इंजील थी और दो पादरी दोनों ओर खड़े हुए थे। उसे देखकर बकिङ्घम ने कहा—

"धर्मावतार! हमारी विनती सुनिए"।

रिचार्ड ग्लैास्टर—आप लोग क्षमा कीजिए, मैं इस समय परमपिता परमात्मा की सेवा में था, अतएव आप की सेवा न कर सका! आप की क्या आज्ञा है?

बकिङ्घम—वही जो ईश्वर चाहता है और इस द्वीप के लोग पसन्द करते हैं।

रि० ग्लैास्टर—क्या मैंने कुछ अपराध किया है कि इतने लोग इकट्ठे होकर यहाँ आये हुए हैं!

बकिङ्घम—हाँ, आपने किया है और हमें आशा है कि अपने इस दोष की निवृत्ति कीजिए।

ग्लैास्टर—जब मैं ईसाई हूँ तो अवश्य करूँगा।

बकिङ्घम—आपका यह अपराध है कि आपने अपने पूर्वजों की राजगद्दी को अधार्मिक लोगों के लिए छोड़ रक्खा है। आप अभी सोये हुए हैं और यह देश उन लोगों के अधिकार में आया हुआ है जिनके धर्म कर्म तथा जन्म किसी का ठिकाना नहीं है। हमारी प्रार्थना है कि आप अपने कंधों पर इस भार को लीजिए क्योंकि राज के वास्तविक अधिकारी आपही हैं और देश की प्रजा आप को ही चाहती है।

रिचार्ड ग्लौस्टर—मैं नहीं जानता कि आपको इसका क्या उत्तर दूँ। यदि चुप रहूँ तो आप कहेंगे कि राज का लालच आ गया, यदि आप ऐसे प्रेमियों को ललकार दूँ तो मुझे डर है कि मेरे मित्र मुझ से अप्रसन्न हो जायँगे! इसलिए मेरा स्पष्ट उत्तर यह है कि आप के प्रेम के लिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ, परन्तु आप की प्रार्थना स्वीकार नहीं कर सकता। यदि राज का कोई और अधिकारी न होता तो भी मैं राज न लेता, क्योंकि मेरी योग्यता ऐसी कम है कि मैं इस भार को नहीं उठा सकता। परन्तु ईश्वर को धन्यवाद है कि मेरी आवश्यकता नहीं है। राजवृक्ष ने छोटे छोटे फल छोड़ दिये हैं जो समय पाकर पकं जायँगे और मैं खुश हूँ कि हमारा योग्य राजा पंचम एडवर्ड किसी दिन भले प्रकार से हमारे ऊपर राज करेगा! ईश्वर

न करे कि मैं अपने भतीजे से राज छीनने का विचार तक करूँ।

बकिङ्घम—महाराज! आप धार्मिक हैं। इसीलिए ऐसा कहते हैं। आपका विचार है कि एडवर्ड आपके भाई का पुत्र है, हम भी यही कहते हैं परन्तु हमारा आक्षेप यह है कि आप के भाई की धर्मपत्नी का पुत्र नहीं है। पहले आपके भाई की मँगनी लेडी लूसी से हुई थी, यह बात आपकी माता जी को मालूम है! इसके पश्चात् उसकी मँगनी फ़्रांसनरेश की बहन बोना से हुई। परन्तु आपके भाई ने इन दोनों योग्य स्त्रियों को छोड़ कर एक अधबूढ़ी विधवा को ग्रहण कर लिया जिसके कई बालक हो चुके थे। इस स्त्री से यह एडवर्ड उत्पन्न हुआ जो आज राजकुमार—नहीं! नहीं! राजा—कहलाता है। शोक है कि मैं प्रत्येक बात स्पष्ट नहीं कह सकता। क्योंकि इससे आप के ही पूर्वजों पर दोष आता है।

रिचार्ड ग्लैास्टर—शोक! शोक! आप मेरे सिर पर इतना भार रखते हैं। मैं इस योग्य नहीं हूँ कि राज कर सकूँ।

बकिङ्घम—यदि आप राज न ग्रहण करेंगे तो हम अन्य देश के किसी योग्य पुरुष को गद्दी दे देंगे, क्योंकि जारज एडवर्ड हमारा राजा नहीं हो सकता।

ग्लौस्टर—अच्छा यदि आप की यही इच्छा है तो मुझे कुछ संकोच नहीं है, परन्तु यदि पीछे मुझ पर कोई दोष रक्खे तो यह अपराध मुझ पर नहीं है; क्योंकि ईश्वर जानता है और कुछ कुछ आप को भी मालूम है कि मेरी इच्छा राज लेने की नहीं है।

इस धोखे से रिचार्ड ने इँग्लैंड का राज ले लिया और दूसरे दिन अपने भतीजों एडवर्ड और रिचार्ड को क़ैद करके तृतीय रिचार्ड के नाम से गद्दी पर बैठ गया!

इनकी माता एलीज़िबेथ को कुछ ख़बर नहीं थी। इसलिए जब वह अपनी सास अर्थात् तृतीय रिचार्ड की माता के साथ लन्दन के मीनार के पास अपने पुत्र पौत्रों को देखने गईं तो ब्रेकनबरी ने जो मीनार का अधिष्ठाता था उनको भीतर न जाने दिया और कहा कि राजा ने आज्ञा दी है कि कोई भीतर न जाने पावे।

एलीज़िबेथ—राजा ने! अरे कौन राजा है?

ब्रेकनबरी—वही संरक्षक (अर्थात् तीसरा रिचार्ड)!

एलीज़िबेथ—अरे क्या उसने मुझमें और मेरे पुत्रों में भेद करा दिया। मैं उनकी मा हूँ और मुझे भीतर जाने से कौन रोक सकता है?

सास—मैं इनके बाप की माता हूँ। इसलिए उन्हें अवश्य देखूँगी!

ब्रेकनबरी—नहीं श्रीमतीजी ! मुझे शपथ दिलाई गई है। मैं आपको नहीं जाने देने का !

इस समय स्टेनली आया और उसने तीसरे रिचार्ड के राज्याभिषेक की सूचना दी। एलीज़िबेथ ने जब यह कुसमाचार सुने तो उसे बड़ा दुःख हुआ। अब उसे निश्चय होगया कि मेरे पुत्र जीते न बचेंगे। इसलिए उसने अपने एक और पुत्र डैसिंट को हनरी रिचमौण्ड के पास भेजा कि वह आकर रिचार्ड को उसके पापों का दण्ड दे। यह हनरी रिचमौण्ड कौन था इसका वर्णन हम आगे करेंगे।

अब दोनों राजकुमारों अर्थात् पांचवें एडवर्ड और उसके छोटे भाई का मृत्यु समय आपहुँचा, क्योंकि उनका चचा हर घड़ी उन्हीं के मारने का उपाय सोच रहा था। जिस बकिङ्घम की कुटिल सहायता से उसे राजगद्दी मिली थी उसी के द्वारा वह यह काम भी कराना चाहता था। राजा होने से पूर्व उसने बकिङ्घम से प्रतिज्ञा की थी कि मैं गद्दी पर बैठ कर तुम को हियरफ़ोर्ड की जागीर दे दूँगा। एक दिन जब वह गद्दी पर बैठा हुआ था उसने बकिङ्घम को बुला कर कहा—

"मैंने आपकी सहायता से इस उच्चपद की प्राप्ति की है। परन्तु क्या यह गद्दी केवल एकही दिन के लिए है या मैं बहुत दिनों तक इसका सुख भोगूँगा"।

बकिङ्घम—ईश्वर करे आप सदा राज्य करें।

रिचार्ड—अभी एडवर्ड जीवित है। देखें आप क्या राज-भक्ति दिखाते हैं? क्या आप जानते हैं कि मैं क्या कहूँगा?

बकिङ्घम—श्रीमहाराज कहें।

रिचार्ड—मैं राजा होना चाहता हूँ।

बकिङ्घम—श्रीमान् तो राजा हैं ही।

रिचार्ड—अरे क्या मैं एडवर्ड के जीते जी राजा हूँ? मैं चाहता हूँ कि आप इसे शीघ्र मरवा डालें।

यह सुनकर बकिङ्घम के पेट में पानी हो गया। यद्यपि उसने रिचार्ड की राजगद्दी के लिए उचित अनुचित सभी काम किये परन्तु एडवर्ड की हत्या से अपने माथे में कलंक का टीका लगाना नहीं चाहता था। रिचार्ड इस कारण बकिङ्घम से क्रुद्ध होगया और हियरफ़ोर्ड की जागीर उसे न दी; क्योंकि बुरे आदमी अपनी प्रतिज्ञा का पालन नहीं कर सकते। जब बकिङ्घम उसकी दुष्ट इच्छाओं को सन्तुष्ट न कर सका तो उसने टाइरल नामी एक हत्यारे के द्वारा एडवर्ड और उसके छोटे भाई रिचार्ड को सोते समय मरवा डाला।

उनकी माता एलीज़िबेथ ने जब यह कुसमाचार सुना तो उसकी छाती फट गई। वह रो रोकर कहने लगी—

"हे मेरे लाल! हे मेरे बच्चो! हे कुम्हलाये हुए फूलो! यदि तुम्हारे आत्मा अभी वायु में उड़ते हों तो मेरे सिर के चारों ओर उड़ो और अपनी माता के विलाप को श्रवण करो"

उसकी सास रोकर कहने लगी—

"मेरे ऊपर दुखों का ऐसा पहाड़ आपड़ा है कि मैं कुछ नहीं कह सकती! हाय मेरे एडवर्ड तू क्यों मर गया।"

छठे हेनरी की रानी मारगरेट ने, जो उस समय वहीं पर थी, उत्तर दिया—

"एडवर्ड * के बदले एडवर्ड मर गया।"

एलीज़िबेथ—हे ईश्वर, क्या तू ने इन मैमनों को त्याग कर भेड़िये के मुख में डाल दिया। हे ईश्वर, ऐसे भयानक पाप के समय तू कहाँ था?

मारगरेट—जब मेरे पति और पुत्र मारे गये।

एली० की सास—हे ईश्वर, इस पृथ्वी को शीघ्र ही नष्ट कर, क्योंकि इसने निरपराधियों का रक्त बहुत पिया है।

मारगरेट—मेरे एक एडवर्ड था, जिसे रिचार्ड ने मार डाला! मेरे एक हेनरी (उसका पति) था उसे भी रिचार्ड ने मरवा दिया! (एलीज़िबेथ से) तेरे एक एडवर्ड था जिसे रिचार्ड ने मरवा डाला। तेरे एक रिचार्ड था जिसे रिचार्ड ने मरवा डाला।

एलीज़ि० की सास—मेरे एक रिचार्ड † था जिसे तूने मरवा डाला। मेरे एक रटलेण्ड था जिसे तूने मरवा डाला!

---

* मारगरेट के लड़के एडवर्ड को चौथे एडवर्ड ने रिचार्ड द्वारा मरवाया था।

† उसके पति अर्थात् चौथे एडवर्ड के पिता का नाम रिचार्ड था।

मारगरेट—तेरे एक क्लेरेंस था जिसे रिचार्ड ने मरवा डाला। तेरे गर्भ से एक ऐसा कुत्ता उत्पन्न हुआ है जो हम सब को खाये जाता है। हे ईश्वर! तू कैसा न्यायी है कि इसी कुत्ते से अपनी माता की सन्तान को मरवा कर उसे औरों की भाँति दुःखी करता है।

एलीज़ि० की सास—हनरी की बहू! तू मेरे दुःखों पर मत हँसे! ईश्वर जानता है कि तेरे दुःखों पर मैंने शोक किया है।

मारगरेट—मेरा आत्मा बदला लेने की आग से जल रहा है। तेरा एडवर्ड, जिसने मेरे एडवर्ड को मारा था, मर गया। तेरा दूसरा एडवर्ड मार डाला गया। तेरा रिचार्ड भी मर गया। क्योंकि इन सब की मृत्यु से मेरे दुःखों का बदला नहीं हो सका। तेरा क्लेरेंस मर गया, क्योंकि उसने मेरे एडवर्ड के तलवार मारी थी। हेस्टिंग्ज़ रिवर्स, ग्रे आदि सब जिन्होंने मुझे दुःख दिया था नरक में पहुँचा दिये गये। रिचार्ड अभी जीवित है। हे ईश्वर इसकी मृत्यु मेरे आँखों के सामने हो!

एलीज़िबेथ—तूने तो पहले ही कहा था कि मैं तेरे साथ कोसूँगी।

मारगरेट—मैंने तो कहा था कि तू भी मुझ सी ही होगी। अब देख तेरा पति कहाँ है? तेरे भाई अब क्या हुए? तेरे पुत्रों का भी कुछ पता है?

एलीज़िबेथ—तेरा शाप ठीक होता है। मुझे भी बता दे कि अपने शत्रुओं को किस प्रकार शाप दूँ।

मारगरेट—रात को सो मत, दिन को खा मत! कोसे ही जा! फिर देख कि तेरा शाप ठीक होता है या नहीं!

एलीज़िबेथ—मेरे शब्द तीक्ष्ण नहीं हैं।

मारगरेट—दुःख सबको तीक्ष्ण बना देता है।

यह कह कर मारगरेट उठ गई और रिचार्ड थोड़ी देर पीछे वहाँ होकर गुज़रा। उसे देख कर उसकी माता रोने लगी! रिचार्ड ने एक स्त्री को आर्त्तस्वर से रोते हुए दूर से देख कर पूछा—

"यह कौन है?"

माता ने उत्तर दिया "मैं वह हूँ जो यदि चाहती तो तुझे जन्म समय ही गला घोंट कर मार डालती"।

एलीज़िबेथ—अरे दुष्ट! हत्यारे! तूने मेरे बच्चों को मार कर यह मुकुट सिर पर रक्खा है। अरे निर्दयी, बता मेरे लाल कहाँ हैं?

माता—मेरा क्लेरेंस कहाँ है? अरे दुष्ट बता; और उसका लड़का नेड कहाँ है?

एलीज़ि०—मेरा भाई रिवर्स और मेरा बेटा ग्रे कहाँ हैं ?

माता—दयालु हेस्टिंग्ज़ कहाँ है ? अरे क्या तू मेरा पुत्र है ?

रिचार्ड—हाँ ! इसके लिए मैं पिता जी का और आपका कृतज्ञ हूँ।

माता—तू मेरी बात सुन !

रिचार्ड—कहो, पर मैं सुन नहीं सकता।

माता—मैं कोमल शब्द कहूँगी।

रिचार्ड—संक्षेप से—मुझे जल्दी है।

माता—तुझे इतनी जल्दी है। मैं रो रो कर तेरी प्रतीक्षा कर रही थी।

रिचार्ड—फिर मैं आपको शान्ति देने के लिए आ तो गया।

माता—नहीं नहीं ! तूने तो इस पृथ्वी को मेरे लिए नरक बना दिया। तेरे जन्म पर मुझे बड़ा कष्ट हुआ था। बचपन में भी तू बड़ा चंचल और कुटिल था। लड़कपन में भी तू बड़ा उत्पाती था। युवा अवस्था में भी तो तू बड़ा घातक निकला। भला तुझ से मुझे कब सुख मिला है ?

रिचार्ड—यदि मैं ऐसा ही हूँ तो मुझे जाने दो।

माता—एक बात सुन।

रिचार्ड—तुम्हारे शब्द बड़े कर्कश हैं !

माता—मैं एक बात कहूँगी। फिर कभी न कहूँगी।

रिचार्ड—अच्छा।

माता—या तो ईश्वर तुझी को तेरे पापों के बदले में परास्त करेगा। और यदि तुझे जीत हुई तो मैं मर जाऊँगी। पर कभी तेरा मुँह न देखूँगी। इसलिए यह अन्तिम शाप तुझे देती हूँ कि जिस प्रकार तूने हत्या की है उसी प्रकार तू बुरी मौत मरेगा।

माँ बाप के शाप बहुधा ठीक होते हैं और रिचार्ड की माता का शाप यथार्थ हुआ। हम ऊपर कह चुके हैं कि एलीज़िबेथ ने डोर्सेट को हनरी रिचमौण्ड की सेवा में भेजा था कि वह आकर रिचार्ड से उसके अत्याचारों का बदला ले।

इस हेनरी रिचमौण्ड का राज-अधिकार समझने के लिए हम को दूसरे रिचार्ड और चौथे हनरी के पूर्वजों की ओर ध्यान देना चाहिए। चौथे हनरी के पिता गाण्ट की तीसरी स्त्री कैथरायन सिनफोर्ड थी। हनरी रिचमौण्ड इस कैथरायन की परपोती का लड़का था और इसका बाप एडमण्ड टूडर हनरी पंचम की विधवा कैथरायन का पुत्र था, जिसने हनरी की मृत्यु के पश्चात् वेल्ज़ के एक सिपाही ओविन टूडर से विवाह कर लिया था।

यद्यपि हनरी रिचमौण्ड का यह दूरस्थ सम्बन्ध राज पर अधिकार जमाने के लिए संतोषजनक नहीं था परन्तु उसने

इस अवसर को बहुत ही अच्छा समझा। उधर महारानी एलीज़िबेथ ने अपनी पुत्री एलीज़िबेथ का विवाह भी उससे करना अङ्गीकार कर लिया। रिचमैाण्ड ने डोर्सेट का संदेसा सुनते ही बहुत सी सेना इकट्ठी की और मिलफ़ोर्ड बन्दर पर आ गया। उसको देखते ही, बहुत से जागीरदार, जो तीसरे रिचार्ड की दुष्टता से तंग आ रहे थे, विद्रोह करके रिचमैाण्ड से जा मिले। बकिङ्घम भी उनमें से एक था जिससे और रिचार्ड से पाँचवें एडवर्ड की मृत्यु पर कुछ अनबन हो गई थी।

बकिङ्घम की सेना तो एक तूफ़ान के कारण तितर बितर हो गई और वह पकड़ा गया। रिचार्ड ने उसी समय उसका सिर कटवा लिया।

अब दोनों दलों की बौस्वर्थ के रणक्षेत्र में मुठभेड़ हुई। रात्रि के समय जब रिचार्ड और रिचमैाण्ड अपने अपने डेरों में सो रहे थे, रिचार्ड ने स्वप्न में देखा कि छठे हेनरी के पुत्र राजकुमार एडवर्ड ने उससे आकर कहा—

"कल रण में मैं तुझे पराजित करूँगा, क्योंकि तूने मुझे युवावस्था में ट्यूकसबरी में मार डाला था"।

इसके पश्चात् छठा हेनरी आकर कहने लगा—

"जब मैं जीवित था उस समय तूने मेरे शरीर में छिद्र ही छिद्र कर दिये। इसलिए कल तू निराश होकर मरेगा"।

फिर राजकुमार क्लेरेंस ने कहा—"देख रिचार्ड, तूने मुझे छल करके मरवाया है। याद रख, कल तू जीता न बचेगा।"

इसके पीछे रिवर्स और ग्रे कहने लगे—

"तूने हम को पोम्फ्रेट में मरवाया था। इसका बदला कल लिया जायगा"।

फिर हेस्टिंग्ज़ आया और कहने लगा—

"पापी हत्यारे, जाग, याद रख जिस प्रकार तूने हेस्टिंग्ज़ को मारा है उसी प्रकार कल तू मारा जायगा"।

इसके पश्चात् पाँचवें एडवर्ड और उसके भाई रिचार्ड ने आकर कहा—

"अपने भतीजों की याद कर जिनको तू ने क़ैदख़ाने में मरवाया था। येही कल तेरी मौत के कारण होंगे"।

सबसे पीछे बकिङ्घम आकर कहने लगा—

"अरे दुष्ट! मैंने ही तुझे राजगद्दी दिलाई थी! और सब से पीछे मैं ही तेरे अत्याचार की भेंट हुआ। कल मुझे याद करके अपनी दुष्टता पर पश्चात्ताप करना; क्योंकि तेरे कुकर्म कल रण-क्षेत्र में फलीभूत होंगे।"

रिचार्ड अब जाग पड़ा और मारे डर के काँपने लगा। अब उसे अपनी सब दुष्टतायें याद आ गईं। क्योंकि अन्त समय पापियों को अपने सब पाप याद आ जाते हैं। उसका अन्तःकरण

उसे दुःख देने लगा। कुकर्मों का चित्र उसकी आँखों के सामने खिँच गया। वह कहने लगा—

"ईश्वर! ईश्वर! दया करो! मैंने कैसा भयङ्कर स्वप्न देखा है। कायर अन्तःकरण! तू मुझे क्यों सताता है। यहाँ तो और कोई नहीं। मैं अकेला ही हूँ। फिर क्यों डर लगता है। क्या रिचार्ड अपने आप से ही भय खाता है? क्या यहाँ पर कोई घातक है? नहीं! नहीं! अगर घातक हूँ तो मैं ही। फिर क्या मैं अपने को ही मारूँगा? नहीं नहीं! मुझे अपना आत्मा प्रिय है! क्यों, क्या मैंने इसका हितकर कुछ काम किया है? नहीं! अब मुझे अपने आप से घृणा है क्योंकि मैंने बड़े बड़े पातक किये हैं। मैं बड़ा दुष्ट हूँ। परन्तु मैं झूठ बोलता हूँ। मैं ऐसा नहीं हूँ। मेरे अन्तःकरण में सहस्रों वाणियाँ हैं और हर एक उनमें से आ आकर मेरे कुकर्मों की कथा सुनाती है। मेरे पाप एक एक करके सामने आते हैं और कहते हैं कि मैं हत्यारा हूँ। मुझे कोई प्यार नहीं करता और यदि मैं मर गया तो कोई मेरे लिए आँसू न बहावेगा! औरों की तो बात ही क्या है मैं स्वयं अपने से घृणा करता हूँ। प्रतीत होता है कि उन सब मनुष्यों के आत्मा, जिनको मैंने मरवाया था, आ आकर मुझे धमकाते हैं और कल बदला लेंगे!"

जब वह इस प्रकार अनुताप कर रहा था, उसके एक सेनापति रैटक्लिफ़ ने आकर कहा—"स्वामिन्!"

रिचार्ड—कौन है!

रैटक्लिफ़—श्रीमन् ! मैं हूँ रैटक्लिफ़ ! मुर्ग़ा दो बार प्रातःकाल को प्रणाम कर चुका है और आपके साथियों ने शस्त्र धारण कर लिये हैं ।

रिचार्ड—मैंने एक बुरा स्वप्न देखा है । क्या मेरे साथी कल मेरा साथ देंगे ?"

रैट०—निस्सन्देह !

रिचार्ड—मुझे भय है ! मुझे भय है !

रैट०—नहीं महाराज ! स्वप्न से क्या डरना ?

रिचार्ड—"आज जितना भय स्वप्न से हुआ है उतना रिचमौण्ड के दश सहस्र शस्त्रधारियों से भी नहीं हो सकता ।"

उधर रिचमौण्ड को आज की रात भले प्रकार नींद आई और उसे अच्छे अच्छे स्वप्न दिखाई दिये । उसने उठ कर लोगों से कहा—

"ईश्वर हमारी सहायता करेगा और हमारे शुभ काम में सफलता होगी । सिवा रिचार्ड के और सब हमारी जय के अभिलाषी हैं । क्योंकि हमारे विपक्षी गण भले प्रकार जानते हैं कि वे एक दुष्ट के लिए लड़ रहे हैं, जो अवसर पाकर उन्हीं का शत्रु हो जायगा । यह वही मनुष्य है जिसने हत्या के द्वारा राज पाया है और जिसने उन्हीं के सिर लिये हैं जिन्होंने उसे सहायता दी थी । यह पातकी, जिसने इँग्लैण्ड की राजगद्दी को

अपवित्र किया है, सदैव ईश्वर का विरोधी रहा है। फिर यदि आप लोग ईश्वर के इस शत्रु के विरुद्ध लड़ेंगे तो ईश्वर अवश्य आपसे प्रसन्न होगा। यदि आप इस घातक के मारने का प्रयत्न करेंगे तो आपको शान्ति की नींद प्राप्त होगी। यदि आप देश-शत्रुओं के विरुद्ध लड़ाई करेंगे तो देश आपका कल्याण करेगा। यदि आप अपनी स्त्रियों के सतीत्व की रक्षा के लिए युद्ध करेंगे तो स्त्रियाँ आपको साधुवाद कहेंगी। यदि आप अपने बच्चों को अत्याचाररूपी तलवार से बचावेंगे तो आपके बच्चों के बच्चे आप को असीस देंगे। इसलिए ईश्वर का नाम लेकर इन अधिकारों की रक्षा के लिए युद्ध कीजिए।"

अब युद्ध आरम्भ हुआ। रिचार्ड को जिन लोगों की सहायता की आशा थी वे सब उसके विरोधी हो गये। नार्थम्बरलेण्ड ने कहला भेजा कि मेरी सेना सुशिक्षित नहीं है, इसलिए इसका भेजना व्यर्थ है। सरे रिचार्ड का संदेसा सुनकर हँसने लगा। स्टेनले जाकर रिचमौण्ड से मिल गया। इस प्रकार रिचार्ड के साथी बहुत कम हो गये। और जो रहे वे भी आधे मन से लड़े। परिणाम यह हुआ कि रिचार्ड मारा गया। उसकी सेना पराभूत हो गई और उसका मुकुट एक जगह झाड़ी में पड़ा पाया गया।

हनरी रिचमौण्ड ने उसको अपने सिर पर रख लिया और सातवें हेनरी के नाम से गद्दी पर बैठा। मृत पुरुषों का यथा-

योग्य मृतक संस्कार किया गया और जो लोग रिचार्ड के साथ लड़े थे उनको क्षमा कर दिया गया।

सातवें हेनरी ने चौथे एडवर्ड की पुत्री एलीज़िबेथ से विवाह किया और इस प्रकार लङ्काष्टरवंशी हेनरी के यार्क वंशी एलीज़िबेथ को विवाहने से यह दोनों वंश मिल गये और जो झगड़ा तीस वर्ष पूर्व गुलाब-युद्ध के नाम से आरम्भ हुआ था उसको बौस्वर्थ की लड़ाई ने समाप्त कर दिया।



आठवाँ हनरी।

Henry VIII

'तृतीय रिचार्ड' में कहा जा चुका है कि हनरी रिचमौण्ड ने तृतीय रिचार्ड को मारकर स्वयं अपने को इँग्लैण्ड का राजा बना लिया। उसने १५०९ ई० तक राज किया। उसके मरण उपरान्त उसका छोटा लड़का हनरी अष्टम हनरी के नाम से गद्दी पर बैठा; क्योंकि ज्येष्ठ पुत्र आर्थर अपने पिता के जीवन-समय में ही मर चुका था।

हनरी को लड़ाई बहुत पसन्द थी और वह यूरोप के जिस राजा को प्रबल समझता था उसी के विरुद्ध उठ खड़ा होता था। यहाँ तक कि आज इस देश से सन्धि करता और उससे लड़ता, कल उससे सन्धि करता और इससे लड़ता। इस प्रकार पहले उसने फ़्रांस के राजा बारहवें लूइस से लड़ाई की। परन्तु इस युद्ध से अँगरेज़ों को बहुत हानि उठानी पड़ी। १५१४ ई० में फ़्रांस से सन्धि हो गई और हनरी की छोटी बहिन मैरी का

विवाह लूइस से कर दिया गया। थोड़े दिनों पीछे लूइस की मृत्यु पर उसका भतीजा फ़्रांसिस फ़्रांस की गद्दी पर बैठा और अँगरेज़ों से फिर उसकी लड़ाई छिड़ गई। परन्तु शीघ्र ही मेल हो गया और १५२० ई० में हनरी फ़्रांसनरेश से भेंट करने के लिए फ़्रांस गया। कैले के पास दोनों सम्राटों का मिलाप हुआ और फ़्रांस वालों ने ऐसे समारोह से इँग्लैण्ड-नरेश का सत्कार किया और ऐसे सुनहरे कपड़े उसके मार्ग में बिछाये गये कि आज तक उस स्थान का नाम स्वर्णाम्बर-क्षेत्र (Field of cloth of gold) चला आता है।

इन सब कामों में उसका प्रसिद्ध मंत्री बुल्ज़े था, जिसकी बिना सम्मति राजा कुछ काम न करता था। बुल्ज़े इप्सविच नामी नगर के एक क़साई का लड़का था जो अपनी विद्या तथा बुद्धि के बल से इस उच्च पद को पहुँच गया था। बुल्ज़े यद्यपि बड़ा विद्वान्, नीतिज्ञ और राजकाज में दक्ष था परन्तु उसकी अभिलाषायें अनन्त थीं। वह बड़े से बड़े उच्च पद को प्राप्त करना चाहता था। मंत्री होने के कारण उसे देश भर में सब से अधिक अधिकार था। राजा को छोड़ कर वह सब से ऊँचा समझा जाता था। इस पर भी उसे सन्तोष न था और प्रसिद्ध पुरुषों को वह झट से गिरा दिया करता था। २० वर्ष तक उसने राज का काम किया और मनमाना प्रबन्ध किया। राजा बिलकुल उसके हाथ में था। छल कपट उसका इतना बढ़ा हुआ

था कि जिस प्रतिष्ठित पुरुष को न चाहता उसी से झट राजा को नाराज़ कर देता और उसे फांसी या क़ैद करा देता! इन दिनों उसकी शक्ति बहुत बढ़ रही थी और फ़्रांस से लौट कर राजा उसे और भी अधिक प्यार करने लगा था। इस समय उसे यार्क का लाट पादरी बना दिया गया और पोप* ने उसे अपना प्रतिनिधि भी चुन लिया था। इस प्रकार अब उसकी शक्ति कैण्टरबरी के लाटपादरी से भी अधिक बढ़ गई थी और उसे इस पर बड़ा अभिमान था।

एक समय बकिङ्घम, नारफ़ाक और एवर्ग्रेवनी की लन्दन में भेंट हुई और वे आपस में फ़्रांसिस और हनरी के मिलाप के विषय में वार्तालाप करने लगे। बकिङ्घम ने कहा—

"ज्वर के कारण मैं घर में ही पड़ा रहा, जब कि कैले में उत्सव मनाया जा रहा था।"

नारफ़ाक—"मैं उस समय वहीं था और अपनी आँखों से इस महोत्सव का अवलोकन किया था। दोनों राजे घोड़ों पर सवार दोनों ओर से आये, एक ने दूसरे को प्रणाम किया। दोनों घोड़ों से उतरे और एक ने दूसरे को गले लगा लिया।"

---

*रोमन काथलिक ईसाइयों का सबसे बड़ा धर्मराज, जो रोम में रहता है, पोप कहलाता है।

बकिङ्घम—उस समय मैं ज्वर के बन्दीगृह में क़ैद था।

नारफ़ाक—तो तुमने इस भौमिक उत्सव का अवलोकन न किया! हर एक दिन पहले दिन से अधिक समारोह था। आज अगर फ़रासीसी लोग स्वर्ण-वस्त्र पहने हुए अँगरेज़ों से मिलने आये तो दूसरे दिन उन्होंने इँग्लैण्ड को हिन्दुस्तान बना दिया। हर एक आदमी यह मालूम होता था कि सोने की खान है। छोटे छोटे नौकर सुनहरी वरदियाँ पहने दमकते फिरते थे। और युवतियाँ, जिनका परिश्रम करने का स्वभाव नहीं था, मान के बोझ से दबी जाती थीं।

बकिङ्घम—यह सब प्रबन्ध किसने किया था?

नारफ़ाक—यार्क के लाटपादरी ने।

बकिङ्घम—बुरा हो इसका! यह किसी के सुख की बात नहीं सोचता। दिन प्रति दिन इसका अभिमान बढ़ता जाता है और यह अपने काम के लिए दूसरों का नाश कर देता है। भला इसको क्या पड़ी थी कि इस भीड़भाड़ से फ़्रांस को जाता!

एवर्ग्रेवनी—तीन पुरुषों को तो मैं जानता हूँ कि इस यात्रा के कारण ही उनकी जायदाद नष्ट हो गई!

बकिङ्घम—सैकड़ों अपनी जायदादों को पीठ पर रख कर इस यात्रा को गये और उनकी दुर्गति हो गई! भला इस भीड़भाड़ से क्या परिणाम निकला?

नार्फ़ोक—मुझे बड़ा शोक है कि हमारी ग्रैार फ़रासीसियों की सन्धि से इसके व्यय को देखे कुछ भी नतीजा न निकला।

बकिङ्घम—मुझे ता यह जान पड़ता है कि शीघ्र ही यह सन्धि टूट जायगी।

नार्फ़ोक—यह तो ठीक है। देखो फ़्रांसवालों ने हमारे व्यापारी जहाज़ों को बोर्डों में पकड़ लिया है।

एवर्ग्रैवनी—यह तो अच्छा मेल है, क्या इसी के लिए इतना ख़र्च हुआ ?

बकिङ्घम—यह सब इस बुल्ज़े की करतूत है।

नार्फ़ोक—आप आज कल होशियार रहिए। क्योंकि बुल्ज़े ग्रैार आप में जो विरोध हो गया है उसका परिणाम अच्छा न होगा। बुल्ज़े की शक्ति को देखते हुए असावधानी ठीक नहीं है!

थोड़े दिनों से बुल्ज़े ग्रैार बकिङ्घम में कुछ बिगड़ गई थी। इसीलिए नार्फ़ोक ने इस ग्रोर संकेत किया था। जब ये बातें हो ही रही थीं उसी समय बुल्ज़े वहाँ पर आगया। उसके कटाक्षों से विदित होता था कि वह बकिङ्घम के विरुद्ध कोई अभि-योग चलाने का उपाय सोच रहा है। वास्तव में यही हुआ। बुल्ज़े का तो स्वभाव ही यह था कि जिसके विरुद्ध हो जाता उसकी जड़ खोद के फेंक देता। अब बेचारे बकि-

ङ्कम की बारी आगई। उसके एक निकाले हुए भृत्य को रुपया देकर बुल्ज़े ने ऐसा सिखाया कि वह राजविद्रोह का अभियोग उसपर सिद्ध करने को राज़ी होगया। उधर राजा के ऐसे कान भरे गये कि उसने वारण्ट काट कर बकिङ्कम और उसके सम्बन्धी एवर्ग्रेवनी को क़ैद करा लिया। और जब बुल्ज़े और राजा इस मुक़द्दमे को सुनने के लिए बैठे तो बकिङ्कम के नौकर ने आकर साक्षी दी कि—

"महाराज! बकिङ्कम रोज़ यह कहा करता था कि यदि राजा बिना सन्तान के मर जाय तो मैं उसकी गद्दी पर बैठूँ। यह शब्द मैंने इसको अपने दामाद एवर्ग्रेवनी से कहते हुए सुने थे। और यह कहता था कि मैं शीघ्र बुल्ज़े से बदला लूँगा।"

बुल्ज़े—देखिए महाराज! इसकी इच्छायें कैसी कुटिल हैं।

राजा—अच्छा कहो, यह अपना अधिकार राजगद्दी के लिए किस प्रकार सिद्ध करता है?

नौकर—श्रीमन्! किसी पुजारी ने उससे यह भविष्यत् वाणी कही है कि राजा सन्तानरहित मर जायगा और यदि बकिङ्कम को प्रजा पसन्द करे तो वह राजा हो सकता है।

राजा—अच्छा कहो।

नौकर—मैं सत्य सत्य कहता हूँ। मैंने उसे बहुत समझाया कि यह पुजारी झूठा है। आप कोई ऐसी बात न

कीजिए जिससे हानि उठानी पड़े। परन्तु उसने झिड़क कर कहा 'नहीं मुझे कुछ हानि नहीं पहुँच सकती।' उसने यह भी कहा कि यदि पिछली बीमारी में राजा मर गया होता तो बुल्ज़े और सरलाविल के सिरों का पता भी न लगता।

राजा—ऐसी दुष्टता! और क्या?

नौकर—एक बार जब महाराज ने इसे कुछ कहा था तो यह कह रहा था कि यदि आज मुझे क़ैद का हुक्म होता तो मैं वह करता जो मेरे पिताजी तीसरे रिचार्ड के साथ करना चाहते थे। अर्थात् राजा के पेट में छुरी भोंक देता।

राजा हनरी—बड़ा हत्यारा है।

नौकर—यह कह कर उसने अपनी तलवार पर हाथ रख कर एक बड़ी शपथ खाई!

राजा ने बकिङ्घम पर अभियोग चलाया और उसके नौकरों की साक्षी पर उसको फाँसी का आदेश दिया गया। जिस समय लोग बकिङ्घम को पकड़े लिये जारहे थे और सैकड़ों आदमी मार्ग में उसके दर्शनों के लिये एकत्रित हो रहे थे, बकिङ्घम ने कहा—

"सज्जन पुरुषो! आप इतनी दूर से यहाँ मेरे ऊपर दया करने पधारे हैं तो मेरी बात सुनिए और फिर घर चले जाइए। मुझे आज राजविद्रोह के दोष में फाँसी का हुक्म हुआ है।

परन्तु ईश्वर जानता है कि मेरा कुछ भी अपराध नहीं है। यदि मैं सच न कहता हूँ तो ईश्वर मुझे दण्ड दे। यह दोष राज-नियम का नहीं है। क्योंकि न्यायालय में साक्षी के अनुसार न्याय किया गया। परन्तु मैं चाहता हूँ कि साक्षी देने वालों में अधिक ईसाईपन (धर्मत्व) होता। परन्तु जो कुछ उन्होंने किया सो अच्छा किया। मैं उनको क्षमा करता हूँ। परन्तु उनको चाहिए कि वे प्रतिष्ठित पुरुषों पर इस प्रकार झूठे दोष लगाने का परिश्रम न किया करें। नहीं तो ईश्वर उनको अपने किये की सज़ा देगा! मैं अपने प्राण बचाना नहीं चाहता और न राजा से क्षमा का प्रार्थी हूँगा। मेरे सच्चे मित्रो! जो मेरी मृत्यु पर रोने के लिए आये हो, कृपा करके मेरे लिए ईश्वर से प्रार्थना कीजिए, जिससे मेरी मुक्ति हो जाय।

सर निकालस बौक्स ने जो उसके साथ था कहा कि आप अब नौका पर सवार हूजिए, आप के उच्च पद के अनुकूल यह सज़ा दी गई है। इस पर बकिङ्घम ने उत्तर दिया—

"नहीं! सर निकालस रहने दीजिए। मेरा कुछ पद नहीं है। आप व्यर्थ मेरे सम्मान में क्यों कष्ट करते हो। जिस समय मैं आया था उस समय मैं सब कुछ था। अब कुछ भी नहीं! परन्तु अब भी मैं अपने शत्रुओं से उच्च हूँ, क्योंकि मैंने कभी झूठ नहीं बोला। मेरी वही दशा हुई जो मेरे पिता जी की हुई थी। जिस समय उन्होंने तीसरे रिचार्ड के अत्याचारों का विरोध

किया और विपत्ति में पड़ गये तो उन्होंने अपने नौकर का आश्रय लिया। परन्तु उस दुष्ट ने उनको पकड़वा दिया। मुझे भी मेरे ही नौकरों ने पकड़वाया। परन्तु प्यारे सज्जन पुरुषो! यह बात याद रक्खो कि जो मनुष्य तुम से प्रेम करता है उसी को राजा मरवा डालता है। अब मैं तुम से बिछड़ता हूँ। ईश्वर तुम्हें ख़ुश रक्खे।"

बकिङ्घम के मरने के पीछे एक और घटना हो गई। इसकी कथा इस प्रकार है।

हम ऊपर कह चुके हैं कि हनरी का बड़ा भाई आर्थर अपने पिता के सामने ही मर गया था। उसका विवाह आरागन (हस्पानिया) की राजकुमारी कैथरायन से हुआ था। आर्थर की मृत्यु पर उस की मँगनी हनरी से हो गई। जब हनरी राजा हुआ तो कैथरायन का नियमानुकूल विवाह भी हो गया और वह अठारह वर्ष तक महारानी रही। उसके एक बेटी भी उत्पन्न हुई, जिसका नाम राजकुमारी मेरी था।

एक दिन राजा बुल्ज़े के घर भोजन करने गया। वहाँ नगर की युवती सुन्दरियाँ इकट्ठी थीं। उनमें से एक रूपवती का नाम ऐन बोलिन था। ऐन बोलिन महारानी कैथरायन की सहेली थी; परन्तु उसके रूप की प्रशंसा बहुत थी। हनरी उसको देखते ही मोहित हो गया और उससे विवाह करने का विचार किया। अकस्मात् उसे ऐसा करने के लिए एक बहाना भी हाथ

आ गया। ईसाइयों में यह बात धर्मविरुद्ध समझी जाती है कि विधवायें अपने मृत पति के भाई से विवाह कर सकें। इस सिद्धान्त के अनुसार कैथरायन हनरी की धर्मपत्नी नहीं हो सकती थी। परन्तु उसके पिता सातवें हनरी ने नीतिज्ञता के विचार से यह विवाह स्वीकार कर लिया था और इन अठारह वर्षों में किसी को यह विचार नहीं हुआ कि हनरी का विवाह धर्मविरुद्ध हुआ है। परन्तु अब ऐन बोलिन के प्रेम में मग्न होकर राजा को धर्माधर्म का विचार हुआ और उसने कैथरायन को परित्याग करने का इरादा किया।

यह परित्याग बिना धर्मराज अर्थात् पोप की आज्ञा के असंभव था। अतएव उसने १५२७ ई० में क्लीमेण्ट सप्तम को जो उस समय पोप था एक प्रार्थना-पत्र लिखा कि मुझे अपने धर्मविरुद्ध विवाह पर पश्चात्ताप है और मैं चाहता हूँ कि नियमानुसार कैथरायन को परित्याग करूँ। उसे पूर्ण आशा थी कि पोप उसकी प्रार्थना को अवश्य स्वीकार करेगा। क्योंकि थोड़े दिनों पहले हनरी ने मार्टिन लूथर* के विरुद्ध एक लेख लिखा था। जिस पर पोप लियोदशम ने उसको धर्मरक्षक की पदवी दी थी। परन्तु पोप को कैथरायन के भतीजे पाँचवें चार्ल्स का भय था। क्योंकि उस समय चार्ल्स यूरोप में बड़ा बलवान् गिना

* जर्मनी का एक पादरी था जो प्रोटेस्टेंट मत का संस्थापक हुआ। लूथर पोप के विरुद्ध था।

जाता था और उसके अधीन हस्पानिया, आस्ट्रिया और जर्मनी आदि कई देश आ गये थे। ऐसी अवस्था में पोप स्वयं तो इस परित्याग को स्वीकृत न कर सका, लेकिन उसने कार्डीनल कम्पियस को अपना प्रतिनिधि बनाकर इँग्लैण्ड में भेजा कि इस मामले को नियमानुसार तै कर सके। ब्लैकफ़्रायर्स नामक महल में यह कार्डीनल कम्पियस और बुल्ज़े इस मुक़द्दमे को सुनने के लिए बैठे और हनरी और कैथरायन भी वहाँ पर आये। नियमानुसार चपरासी ने न्यायालय* के बाहर पुकार कर कहा—इँग्लैण्ड नरेश हनरी हाज़िर है ?

हनरी—"हाज़िर"।

चपरासी—"इँग्लैण्ड की महारानी कैथरायन हाज़िर है ?"

कैथरायन ने कुछ उत्तर न दिया और कुर्सी से उठकर हनरी के पैरों पर गिर पड़ी और रोकर कहने लगी—

"श्रीमन् ! आप मेरे साथ न्याय कीजिए। और दया कीजिए। क्योंकि मैं एक अशक्त स्त्री हूँ। यहाँ मेरा कोई नहीं है। मेरा जन्म आपके देश में नहीं हुआ। और परदेश में मेरा कोई मित्र नहीं है। शोक है कि आप मुझ से नाराज़ हैं, न जाने क्यों ? भला मैंने कौन सा ऐसा अपराध किया है कि आप मुझे त्यागना चाहते हैं। ईश्वर जानता है कि मैं सदा आपकी आज्ञा-कारिणी स्त्री रही

---

* इँग्लैण्ड में चर्चकोर्ट (धर्मन्यायालय) अलग थे, जिनमें पुजारी लोग उन बातों का निश्चय किया करते थे जो ईसाई धर्म से सम्बन्ध रखती थीं।

हूँ। मैंने वही किया है जो आपने चाहा है। जब आपके मुख से प्रसन्नता प्रकट हुई है मैं प्रसन्न हुई हूँ। जब आप दुःखी हुए हैं मैं भी दुःखी हुई हूँ। भला कब मैंने आप की इच्छा के विरुद्ध काम किया और कब आपकी इच्छा को अपनी इच्छा नहीं माना? आपका कौन ऐसा मित्र है जिससे अपना शत्रु होते हुए भी मैंने प्रेम नहीं किया! ऐसा कौन मेरा मित्र था जिस पर आपकी दृष्टि बदली देख कर मैं नाराज़ नहीं हुई? श्रीमन्! याद तो कीजिए कि बीस वर्ष से अधिक मैं आपकी आज्ञा-कारिणी स्त्री रही और आप से कई बच्चे भी उत्पन्न हुए। यदि आपके पास एक भी ऐसा प्रमाण हो जिससे मेरा असतीत्व सिद्ध होता हो तो आप अभी मुझे निकाल दीजिए और ईश्वर मेरे आत्मा को काला करे। श्रीमहाराज! आपके पिता जी बड़े बुद्धिमान् और शास्त्रज्ञ थे। और मेरे पिता जी फ़र्डीनण्ड जो हस्पानियानरेश थे, बहुत से राजों में बुद्धिमान् गिने जाते थे। इन दोनों ने देश देश के धर्मात्मा विद्वानों की सभा करके यह निश्चय कराया था कि हमारा विवाह धर्मानुकूल है। फिर क्या यह इस बात का प्रमाण नहीं है कि विवाह धर्म-विरुद्ध नहीं था? इसलिए महाराजाधिराज! आप कृपा करके मुझे समय दीजिए कि मैं अपने हस्पानिया वाले मित्रों से सम्मति मँगा लूँ।

बुल्ज़े—श्रीमती जी! यहाँ देश भर के चुने चुने विद्वान् बैठे हुए हैं जो अपने न्याय तथा सत्य के लिए प्रसिद्ध हैं।

ये लोग आपके अधिकारों की रक्षा करेंगे इसलिए अब न्याय-सभा से अधिक समय माँगना व्यर्थ है।"

कम्पियस—श्रीमान् ने यथार्थ कहा है। इसलिए देवी जी, उचित यही है कि अब कार्य्यवाही की जाय और प्रमाणों पर विचार किया जाय।

कैथरा०—(बुल्ज़े से) मैं आप से कुछ कहना चाहती हूँ।

बुल्ज़े—देवी जी की आज्ञा?

कैथरा०—श्रीमन्, मैं रोने को थी। परन्तु यह विचार करके कि हम महारानी हैं या कम से कम अपने को महारानी समझती रही हैं, और एक महाराजा की पुत्री हैं, हम अपने आँसुओं को आग की चिनगारियों में परिवर्त्तित कर देंगी।

बुल्ज़े—आप सन्तोष कीजिए।

कैथराय०—उसी समय जब आप उचित व्यवहार करेंगे। इससे पूर्व संतोष करने से ईश्वर मुझे दण्ड देगा! बहुत से दृढ़ प्रमाणों से मुझे ज्ञात हो गया है कि आप मेरे शत्रु हैं। और इसलिए मैं कह सकती हूँ कि आप मेरे न्यायाधीश नहीं हो सकते। आपने ही मेरे और मेरे स्वामी के बीच में आग भड़का दी है। ईश्वर इसे शान्त करे। इसलिए मैं फिर कहती हूँ कि मुझे आप से घृणा है और आप मेरे न्यायाधीश नहीं हो सकते।

मैं आपको बड़ा बुरा शत्रु मानती हूँ और आप कभी सत्य के प्रेमी नहीं हो सकते।

बुल्ज़े—आपको ऐसा कहना उचित नहीं है। देवी जी! आप मेरे साथ अनर्थ करती हैं। मुझे आप से वैर नहीं है और न मैं आप या किसी अन्य के साथ अन्याय कर सकता हूँ। जो कुछ मैंने किया है या करूँगा वह सब पोप के प्रतिनिधि की सम्मति के अनुकूल करूँगा। आप मुझे इस आग के भड़काने का दोष लगाती हैं, परन्तु मुझे इस बात से विरोध है। राजा यहाँ उपस्थित हैं। अगर वह कह दें कि मैं झूठ कहता हूँ तो मुझे दण्ड दीजिए और यदि वह जानते हैं कि मैं सत्य कहता हूँ तो आपका कथन ठीक नहीं है। अब महाराज के अधीन है कि मुझे सच्चा करें या झूठा। परन्तु महाराज से प्रार्थना करने के पूर्व मेरी आप से यह विज्ञप्ति है कि आप अपने मन से यह विचार दूर कर दीजिए।

कैथरायन—श्रीमन्! मैं एक सरल स्त्री हूँ और आप के कपट छल का सामना नहीं कर सकती। आप अपने धर्मपद के अनुसार नम्र और मृदुभाषी हैं, परन्तु आपका आत्मा अभिमान और वैर से युक्त है। आप अपने भाग्य और श्रीमहाराज की कृपा से बहुत बढ़ गये हैं और अब अपने ही बढ़ाने वालों पर शासन

करना चाहते हैं। मैं आप को अपना न्यायाधीश नहीं मानती और आप सबके सम्मुख पोप से प्रार्थना करती हूँ कि वही मेरा न्याय करें।

यह कह कर राजा को प्रणाम करके उसने वहाँ से जाना चाहा। कम्पियस उसे बुलाता रहा। परन्तु महारानी ने किसी की बात न सुनी और चली गई।

राजा ने कम्पियस और अन्य उपस्थित पादरियों को यह बात दिखलानी चाही कि वह अपनी स्त्री का परित्याग किसी शत्रुता या अन्य कारण से नहीं करता है किन्तु विवाह धर्मविरुद्ध होने से उसे पश्चात्ताप हुआ है। इसलिए वह कहने लगा—

"बुल्ज़े ने मुझे कभी परित्याग के लिए नहीं कहा! पहले पहल यह बात मुझे उस समय सूझी जब मेरी पुत्री मेरी का विवाह और्लियन्स के ड्यूक के साथ होने वाला था और वेअन के पादरी ने जो इस विवाह को निश्चय करने के लिए आया था यह प्रश्न उठाया कि क्या मेरी मेरी धर्म की पुत्री है; क्योंकि मैंने अपने भाई की विधवा से विवाह किया था। उसी समय से मुझे अपने अधर्म पर अनुताप होने लगा। पहले तो मैंने यही समझा कि ईश्वर मुझ से इस धर्मविरुद्ध विवाह के कारण अप्रसन्न है; क्योंकि इस रानी से मेरे जो पुत्र हुआ वह मर गया। इसलिए मैंने सोचा कि इस वंश का नाम केवल मेरे अधर्म के कारण नष्ट हुआ चाहता है। मेरे आत्मा में इस अधर्म का ऐसा

पश्चात्ताप् हुआ कि उसका प्रायश्चित्त करने के लिए मैंने इस गुण-वती स्त्री को परित्याग करने की ठान ली, जिसके लिए आप सब यहाँ उपस्थित हुए हैं। मैंने हर एक पादरी की सम्मति ली। लिंकोल्न और कैण्टरबरी के लाटपादरी से पूछा। सबने शास्त्र विचार कर यही उत्तर दिया। जिस का परिणाम आज यहाँ पर देख रहे हैं।"

लिङ्कोल्न और कैण्टरबरी के पादरियों ने राज़ी की साक्षी दी। इसके पश्चात् सभा विसर्जन हुई। परन्तु हनरी को यह बात अच्छी न लगी कि कम्पियस और बुल्ज़े ने मुक़द्दमा इस समय नहीं किया। क्योंकि उसकी यही इच्छा थी कि जिस प्रकार होता परित्याग की जल्दी से व्यवस्था मिल जाती और वह ऐन बोलिन से विवाह कर सकता।

इसके उपरान्त हनरी ने ऐन बोलिन से अधिक प्रेम प्रकट करना आरम्भ कर दिया। कैथरायन विचारी लन्दन के ब्राइड-वैल नामी महल में अपने दिन काटने लगी। ऐन बोलिन को पैम्ब्रोक की मार्शनेस (रानी) की पदवी दी गई और उसके गुज़ारे के लिए एक सहस्र पौंड सालाना नियत कर दिये गये।

कैथरायन को अपने दुर्भाग्य पर अत्यन्त शोक था। शोक क्यों न हो? वह अब तक समस्त इँग्लैण्ड की महारानी थी। आज पल भर में वह एक साधारण स्त्री हो गई। दुःख का पहाड़ उसके शिर पर आ पड़ा। वह बेचारी बड़े कष्ट से रहने लगी।

एक दिन जब वह अपने महल में बैठी हुई थी और दासी काम कर रही थी तो उसने कहा—

"मेरा आत्मा शोकग्रसित हो रहा है। अरे बाजा उठा ले और गीत गाकर इन दुःखों को मेरे मन से हटा दे"।

उसी समय बुल्ज़े और कम्पियस वहाँ पर आ गये और बुल्ज़े ने कहा—

"श्रीमहारानी जी को शान्ति हो।"

कैथरा०—आपके यहाँ आने का क्या प्रयोजन है?

बुल्ज़े—आप अपने निज के कमरे में अकेली चलिए। वहाँ हम आपको अपने आने का पूरा कारण बतलायेंगे।

कैथरा०—यहीं कहो। अभी तक मैंने कोई ऐसा पातक नहीं किया है कि कोने में छिपने की आवश्यकता हो। ईश्वर करे, अन्य स्त्रियाँ भी अपने स्वतंत्र आत्मा से इसी प्रकार कह सकें। श्रीमन्! मुझे इस बात की परवा नहीं है कि क्यों सब लोगों ने मेरे कामों के विषय में वादविवाद किया। मुझे मालूम है कि मेरा जीवन अब तक स्वच्छ रहा है और इस बात से मुझे ख़ुशी है। यदि आपको कुछ कहना है तो स्पष्ट कहिए, क्योंकि सत्य बातें स्पष्ट ही हुआ करती हैं"।

इस पर बुल्ज़े ने लैटिन भाषा में रानी से कुछ कहना चाहा। क्योंकि उसका प्रयोजन यह था कि उसकी दासियाँ न समझ सकें। परन्तु कैथरायन ने बात काट कर कहा—

"श्रीमन्! लैटिन न बोलिए। जब से मैं इस देश में आई हूँ कभी इँगलैण्ड से बाहर नहीं गई। मुझे यह भाषा भली प्रकार आती है। अन्य भाषा में कहने से मेरा झगड़ा और भी संदिग्ध हो जाता है। यहाँ कुछ स्त्रियाँ बैठी हुई हैं, ये आप के सत्य वचनों को सुन कर आप को साधुवाद देंगी"।

बुल्ज़े—श्रीमती जी! मुझे शोक है कि जो सेवा मैंने आपकी और श्रीमहाराज की की है और जिस सत्यता से मैं काम करना चाहता था उसको संदेह की दृष्टि से देखा गया है। हम यहाँ इसलिए नहीं आये कि आपके सर्वप्रिय आचरण में कुछ दोष लगावें या आपके दुःख को जो इस समय बहुत बढ़ रहा है अधिक करें। हमारा प्रयोजन केवल यह जानने का है कि आप अपने स्वामी की अप्रसन्नता के समय में किस प्रकार से हैं? और आपकी क्या सम्मति है?

कम्पियस—महारानी जी! बुल्ज़े आप का सच्चा सेवक है। इसलिए यद्यपि आप ने उसको बहुत कुछ बुरा भला कहा है, परन्तु तिस पर भी वह आप को यथोचित सम्मति देने आया है।

कैथरा०—श्रीमन् ! मैं आपकी इस कृपा का धन्यवाद देती हूँ। आप धार्मिक पुरुष की भांति कह रहे हैं। ईश्वर करे आपका मन आप की वाणी के अनुकूल हो। परन्तु मैं नहीं समझती कि ऐसे आवश्यक समय में मैं इतनी जल्दी कैसे उत्तर दे सकती हूँ। मैं तो इस समय अपनी सहेलियों के साथ काम में लगी हुई थी। मुझे क्या मालूम था कि आप जैसे प्रतिष्ठित पुरुष आ रहे हैं। हाय ! यहाँ मेरा कोई नहीं है ?

बुल्ज़े—देवी जी ! आप का कथन ठीक नहीं है। आप के मित्र बहुत हैं।

कैथरा०—इँगलैण्ड में कोई नहीं ? क्या तुम समझते हो कि कोई अँगरेज़ मुझे सम्मति देगा। या राजा के विरुद्ध होकर मुझ से मित्रता करेगा ? सच तो यह है कि मेरे मित्र जो मेरे भले की सोच सकें यहाँ नहीं हैं; किन्तु यहाँ से दूर मेरे ही देश (हस्पानिया) में हैं।

कम्पियस—मेरी प्रार्थना है कि आप शोक को छोड़ कर मेरा कहा मानें।

कैथराय०—क्या ?

कम्पियस—अपने को केवल राजा के आश्रय छोड़ दीजिए। क्योंकि वे बड़े दयालु हैं। इससे आपके मान में भेद न पड़ेगा। यदि न्यायालय में मुक़द्दमा चला तो आप बदनाम हो जायँगी !

बुल्जे.—हाँ यह ठीक कहते हैं।

कैथरायन—आप वही कहते हैं जो चाहते हैं—अर्थात् मेरा सर्वनाश। क्या यह कोई सम्मति है? ईश्वर मेरे ऊपर है। वह ऐसा न्यायाधीश है कि उसे कोई राजा नहीं बिगाड़ सकता।

कम्पियस—क्रोध आप को धोखा दे रहा है।

कैथरा०—आपके लिए और लज्जा है। मैंने समझा था कि आप बड़े पवित्र हैं, परन्तु आपके हृदय कैसे काले हैं। आप मुझ दुखियारी को ऐसी सम्मति देते हैं! मैं नहीं चाहती कि ईश्वर आपको मुझ से आधा भी दुःख दे। परन्तु एक बात याद रक्खो। कहीं ऐसा न हो कि मेरे दुःखों का भार आपके ऊपर आ पड़े।

बुल्ज़े—देवी जी, मैं आपके भले की कहता हूँ और आप उससे भागती हैं।

कैथरायन—श्रीमन् ! मैं अपने को इतनी पापिन नहीं बना सकती कि अपनी इच्छा से उस पदवी को त्याग सकूँ जो मुझे राजा ने विवाह करके प्रदान की थी। मेरी पदवी मेरी मृत्यु पर ही छूट सकती है।

बुल्ज़े—रानी जी! सुनिए।

कैथरायन—अच्छा होता कि मैं कभी इस देश में पैर न रखती। और इस मिथ्या व्यवहार से मुझे परिचय न

होता। आप लोगों के मुख देवतों के से हैं, परन्तु आप के मन की ईश्वर जानता है। हाय! संसार में मुझ से अधिक कौन अभागा होगा (अपनी सहेलियों से) अभागिनो! कहो अब तुम्हारा भाग्य कहाँ गया! मैं ऐसे स्थान पर विनष्ट हुई जहाँ कोई मेरा मित्र नहीं है। हाय! कोई मुझे रोने के लिए भी नहीं है। आज मैं उस कमलिनी के सदृश जो एक दिन खेतों की महारानी बनी हुई थी, मुरझा जाऊँगी!

बुल्ज़—अगर आप हमारा कहना मानें तो आपको अधिक शान्ति होगी। भला हम आप से क्यों शत्रुता करने लगे? आप सोचिए तो सही! राजे लोग नम्रता से बहुत प्रसन्न होते हैं और धृष्टता से नाराज़। मैं जानता हूँ कि आप का आत्मा बड़ा नम्र है। यदि आप सोचेंगी तो ज्ञात होगा कि हम आप के कैसे सच्चे सुहृद् हैं।

कम्पियस—हाँ श्रीमती जी! ऐसा ही है। आप व्यर्थ भय करके अपने आत्मा के साथ अनर्थ करती हैं। ईश्वर ने आप के शरीर में एक महान् आत्मा को प्रवेश किया है। राजा को आपसे प्रेम है। और यदि आप हम पर विश्वास करें तो हम आप के अनुकूल भरसक उद्योग करने को तैयार हैं।

कैथरायन—जो चाहो सो करो। मुझे क्षमा करो। आप जानते हैं कि मैं एक स्त्री हूँ। मुझ में ऐसा चातुर्य कहाँ जो आप ऐसे योग्य पुरुषों की बात का उत्तर दे सकूँ। आप राजा से कह दीजिए कि अब भी मेरा मन उन्हीं के चरणकमलों में है और जब तक मैं जीवित रहूँगी उनकी भलाई के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती रहूँगी!

अब बुल्ज़े और कम्पियस चले गये और उन्होंने इस बात को स्वीकार कर लिया कि कैथरायन के कथनानुसार इस झगड़े का फ़ैसला पोप ही करेगा।

जब हनरी ने देखा कि बुल्ज़े और कम्पियस स्वयं उसकी इच्छा के अनुकूल नहीं करते और टालमटोल कर रहे हैं तो वह बहुत क्रुद्ध होगया और बुल्ज़े के ऊपर टूट पड़ा!

बुल्ज़े के शत्रु देश में बहुत थे। और जिस प्रकार आज तक बुल्ज़े दूसरे लोगों को तंग किया करता था इसी प्रकार ये लोग अपने बदले का अवसर ढूँढ़ रहे थे। नार्फ़ोक, सफ़ोक और लार्ड सरे ने सलाह की और राजा के महल में परस्पर यों बातें करने लगे—

नार्फ़ोक—यदि आप सब मिल कर इस समय बुल्ज़े की शिकायत करें तो उसकी एक न चलेगी। यदि इस

अवसर को छोड़ दिया तो फिर आप को इस समय से भी अधिक लज्जित होना पड़ेगा !

सरे०—मैं छोटे से छोटे अवसर के लिए भी तैयार हूँ। अपने ससुर की मृत्यु से मुझे शोक हो रहा है।

स.फ़ोक—कौन ऐसा प्रतिष्ठित पुरुष है जो इस दुष्ट की घातों से बचा हो।

लार्ड चैम्बरलेन—आप व्यर्थ बातें कर रहे हैं। मुझे भय है कि हम क्या कर सकते हैं। जब तक आप बुल्ज़े का आना जाना राजा तक बन्द नहीं कर सकते उस समय तक कुछ नहीं हो सकता।

नार्फ़ाक—इससे न डरिए। राजा के पास इसकी दुष्टता का काफ़ी प्रमाण है। अब वह इसकी मीठी बातों में नहीं आने का।

सरे०—मुझे यह बात सुन कर बड़ा हर्ष है।

नार्फ़ाक—सच जानो, जो कार्य्यवाही इसने कैथरायन के परित्याग के विरुद्ध की है, उसका राजा को पता लग गया है।

सरे०—यह भेद कैसे खुला ?

सफ़ोक—अकस्मात्।

सरे०—कैसे ? कैसे ?

सफ़ोक—बुल्ज़े ने पोप के लिए जो पत्र भेजे थे वे राजा के हाथ लग गये। उनमें इसने लिखा था कि आप अभी परित्याग की आज्ञा न दीजिए; नहीं तो राजा ऐन बोलिन से विवाह कर लेगा।

सरे०—क्या राजा ने इस पत्र को देखा है?

सफ़ोक—अवश्य!

चैम्बरलेन—राजा को अब इसकी करतूत मालूम हो गई है। परन्तु राजा ने पहले ही काम कर लिया अर्थात् चुपचाप ऐन बोलिन से विवाह कर लिया।

सरे०—क्या राजा इस पत्र पर कुछ न करेगा?

नार्फ़ोक—ईश्वर ईश्वर! इस समय उचित यह है कि जो कुछ कहना हो कह डालें; क्योंकि राजा बुल्ज़े से बड़ा अप्रसन्न हो रहा है। कम्पियस देश से बिना कहे चला गया और राजा समझता है कि यह सब बुल्ज़े की करतूत है।

चैम्बरलेन—ईश्वर राजा को और क्रोध दे!

नार्फ़ोक—क्या क्रेनमर लौट आया?

सफ़ोक—हाँ, और उसने राजा को दूसरा विवाह करने की व्यवस्था भी दे दी। अब ऐन बोलिन नियमानुसार महारानी होगी और कैथरायन केवल आर्थर की विधवा कही जायगी।

जिस समय ये बातें हो रही थीं, बुल्ज़े को कुछ ख़बर न थी। वह यह कोशिश कर रहा था कि हनरी का विवाह फ़्रांस-नरेश की बहन से हो। इसलिए उसने इसी की पूर्त्ति के लिए चालें चलनी आरम्भ कर दी थीं। परन्तु राजा ने क्रेनमर नामी एक पादरी द्वारा व्यवस्था ले ली और विवाह कर लिया!

राजा बुल्ज़े से नाराज़ हो गया और अकस्मात् उसे बुल्ज़े का एक काग़ज़ मिल गया जिसमें उस रुपये का सब हिसाब था जो बुल्ज़े ने अपने व्यय के लिए लोगों से लिया था। राजा ने बुल्ज़े को बुलाया और उस पर राजविद्रोह का दोष लगाया।

बुल्ज़े झट समझ गया कि मेरा अन्त अब निकट आ पहुँचा। वह राजा का स्वभाव जानता था। और इसी चिन्ता में लन्दन को आते हुए लीसेस्टर में मर गया।

इस प्रकार एक ऐसे बड़े पुरुष का अधःपतन हो गया जिस की चालें समस्त यूरोप को चला रही थीं और हनरी तो उस की मुट्ठी में आ गया था।

इसके पश्चात् क्रेनमर का मान बढ़ा। उसको कण्टरबरी का लाट पादरी बना दिया गया और ऐन बोलिन अब महारानी होकर राजा के साथ गद्दी पर बैठने लगी।

थोड़े दिनों पीछे लोग क्रेनमर के भी शत्रु हो गये। उस समय जर्मनी में मार्टिन लूथर ने पोप के धर्म के विरुद्ध प्रचार

करना आरम्भ कर दिया था और यूरोप के बहुत से लोग उस के अनुयायी हो गये थे।

क्रेनमर की रुचि भी उसी ओर थी। इसलिए बहुत से लोगों ने उस पर अभियोग चलाया कि यह देश में अधर्म फैला रहा है। परन्तु हनरी उसके विरुद्ध नहीं था। इसलिए यद्यपि लोग उसे क़ैद करना चाहते थे और जो सभा इसका निश्चय करने के लिए नियत की गई थी उसने क़ैद का हुक्म भी दे दिया था, तथापि हनरी ने क्रेनमर को बचा लिया।

उन्हीं दिनों में ऐन बोलिन के एक लड़की उत्पन्न हुई, जिसका नाम एलीज़िबिथ रक्खा गया! इस पर राजा को अत्यन्त हर्ष हुआ और एक महोत्सव मनाया गया। क्रेनमर ने ही उसका नामकरण किया। राजा के पूछने पर पादरी कहने लगा—

"ईश्वर की प्रेरणा से मैं कह सकता हूँ कि यह राजकुमारी पालने में ही बड़ी तेजस्विनी मालूम होती है। ईश्वर ने कृपा की तो यह एक दिन सब राजों में प्रभावशालिनी होगी। संसार इसका मान करेगा। इसके राज में प्रजा शान्ति से रहेगी, देश उन्नति को प्राप्त होगा"।

राजा—आप तो बहुत कह रहे हैं।

क्रेनमर—नहीं महाराज! इस से इँगलैंड भर को सुख मिलेगा। इसकी आयु बहुत बड़ी होगी और यह कुमारी ही मरेगी।

राजा—लाटपादरी ! आज आपने मेरा जीवन सफल कर दिया। इसके जन्म से पहले मुझे कभी ऐसा आनन्द नहीं हुआ। आप की भविष्यवाणी से मेरे मन में ऐसी उत्कण्ठा हो रही है कि स्वर्ग में पहुँच कर मैं वहाँ से इसके पराक्रमों का अवलोकन करूँ।

वस्तुतः एलीज़िबिथ ऐसी ही हुई। क्योंकि १५५८ ई० में वह इँगलैंड की गद्दी पर बैठी और उसके समय में राज की ऐसी उन्नति हुई जैसी कई सौ वर्ष से सुनने में नहीं आई थी। ४५ वर्ष राज करके १६०३ ई० में वह कुमारी मर गई।

कोरियोलेनस

(Cariolanus.)

खीष्टीय संवत् के ५०० वर्ष पूर्व जब रोम (इटली का प्रसिद्ध नगर) के लोगों ने अपने राजवंश के अत्याचारों से तंग आकर राजों को देश से निकाल दिया और बड़ा प्रयत्न करने पर भी ये राजे अपने पूर्व स्वत्व को प्राप्त न कर सके उस समय रोम की उच्च और नीच जातियों में एक प्रकार का वैमनस्य था। उच्च जातियाँ भारतवर्ष की उच्च जातियों के समान नीच जातियों से घृणा करती थीं और उनकी उन्नति में बाधा डालती थीं। नीच जातियाँ इस घृणा से अप्रसन्न होकर उनके विरुद्ध उत्पात किया करती थीं। उच्च जातियों को पैट्रीशियन और नीच को प्लीबियन कहते थे। प्रथम राज-काज केवल पैट्रीशियन लोगों के हाथ में था, परन्तु होते होते प्लीबियन लोगों को भी यह अधिकार मिल गया था कि अपने प्रतिनिधि चुनें और नीच जातियों में से कुछ मजिस्ट्रेट चुन

लिये आते थे, जिनका कर्तव्य नीच जातियों के अधिकारों का सुरक्षित रखना था।

जिस समय का हम वर्णन कर रहे हैं उस समय लड़ाई के कारण लोग अपने खेत न जोत बो सके और इसलिए दुर्भिक्ष हो गया। अन्नाभाव के कारण नीच जातियों में आपत्ति फैल गई और वे लोग उन पैट्रीशियन लोगों को जिनके घरों में अन्न भरा हुआ था और भी अधिक शत्रु समझने लगे। बहुत से लोगों ने हथियार लेकर नगर में विद्रोह करना आरम्भ कर दिया कि बलात्कार से अन्न प्राप्त करें। वे केअस मार्शस और अन्य पैट्रीशियनों को बुरा भला कहने लगे। इस भीड़ भाड़ में से एक बोला—

"आगे फिर बढ़ना। पहले मेरी बात सुन लो।"

सब लोग०—"कहो कहो"।

१ ला आदमी०—तुम सब मरने को राज़ी हो, पर भूखे रहने को नहीं।

सब लो०—हाँ! हाँ!

१ ला आद०—तुम जानते हो कि केअस मार्शस प्रजा का शत्रु है।

सब लो०—हाँ हम जानते हैं! हाँ हम जानते हैं!

१ ला आद०—इसको मार डालो और मनमाना अन्न मिल जायगा! क्यों ठीक है न?

सब लोग—ठीक ठीक ! कहो मत ! कर डालो ! चलो चलो।

इस समय एक दूसरे आदमी ने उन्हीं में से कहा—

"भद्र पुरुषो ! एक बात सुन लो"।

१ ला आदमी—हम दरिद्र पुरुष हैं। भद्रपुरुष तो पेट्रीशियन ही हैं। अगर वे अपना बचा खुचा भी हमको देदें तो हम बच जायँ। पर हमारी दरिद्रता ही उन को धनी बना रही है। जिस कारण हम दुःखी हैं उसी कारण वे लोग सुखी हैं। इसलिए अगर इन आपत्तियों से बचना चाहते हैं तो हमको तलवारों का आश्रय लेना चाहिए। मैं यह बात भूख से कहता हूँ, क्रोध से नहीं !

दूसरा आद०—क्या तुम विशेष कर केअस मार्शस के ही विरुद्ध हो ?

१ ला आद०—पहले तो उसी के ! वह बड़ा सुअर है !

२ रा आद०—तुम जानते हो कि उसने देश के लिए क्या क्या सेवा की ?

१ ला आद०—हाँ ! और इसलिए प्रशंसा करते हैं। परन्तु उसका अभिमान उसे इस प्रशंसा से वञ्चित कर देता है।

२ रा आद०—पक्षपात से मत कहो !

१ ला आद०—पक्षपात से नहीं ! मैं सच कहता हूँ कि जिसको तुम देश की सेवा कहते हो वह उसने अपनी माता को प्रसन्न करने और अभिमान करने के लिए की थी !

जिस समय केअस मार्शस के विरुद्ध ये बातें हो रही थीं उस समय एक योग्य पुरुष मिनीनियस अग्रीपा वहाँ पर आ गया. जिसको प्रजा भी आदर की दृष्टि से देखती थी। वहाँ आकर उसने कहा "देशभाइयो ! इन हथियारों सहित कहाँ जा रहे हो ?"

१ ला आद०—राजसभा को भी हमारे विचारों की ख़बर मिल गई है। और हम जो कहते हैं सो कर दिखायेंगे। वह लोग कहते हैं कि दरिद्र पुरुषों की हाय प्रबल होती है ! अब उनको मालूम पड़ जायगा कि उनके बाहु भी प्रबल होते हैं।

मिनीनियस अग्रोपा—भले मित्रो, तितर बितर हो जाओ।

१ ला आद०—नहीं ! कदापि नहीं। हम तो वैसे ही तितर बितर हो रहे हैं।

मि० अग्रो०—मित्रो मैं कह सकता हूँ कि पैट्रीशियन लोगों को आपका बड़ा ध्यान है। दुर्भिक्ष के उत्तरदाता देवतागण हैं न कि पेट्रीशियन ! इसलिए हथियारों के बजाय ईश्वर की प्रार्थना कीजिए। विपत्ति के कारण

तुम्हारी मति भङ्ग हो रही है और तुम उन राज-प्रबन्ध करनेवालों को कोस रहे हो जिनको तुमसे पितृवत् स्नेह है।

१ ला आद०—स्नेह ? कभी नहीं ! वे स्नेह करते ? उनकी खत्तियाँ भरी हुई हैं और हम भूखों मर रहे हैं। ब्याज खानेवालों के अनुकूल नियम बन रहे हैं ! प्रजा-हितैषी नियमों की रोक हो रही है ! अगर हम लोग युद्ध से बच गये तो ये लोग हमको खाने के लिए तैयार हैं।

मिनो० अग्री०—या तो तुम लोग पक्षपाती और झूठे हो या मूर्ख ! मैं तुम से एक विचित्र कहानी कहना चाहता हूँ !

१ ला० आद०—कहिए कहिए ! पर कहानी द्वारा हमारे दुःखों को कैसे निवृत्त करोगे !

मि० अग्री०—एक समय शरीर के अङ्गों में झगड़ा हुआ और वे सब पेट के विरुद्ध हो गये कि यह सुस्त पड़ा रहता है और अच्छे अच्छे माल खाया करता है। हमारे साथ कुछ काम नहीं करता। हम इसके लिए देखते, सुनते, चलते फिरते, सूँघते, बोलते, पकाते और अन्य काम करते हैं। पेट ने उत्तर दिया—

१ ला० आद०—पेट ने क्या उत्तर दिया ?

मिनो० अग्री०—मैं कहता हूँ। उसने इन असन्तोषी अङ्गों को, जो पेट को उसी तरह दोष लगाते हैं जैसे तुम राजसभा को मुसकरा के यह उत्तर दिया—'मित्रवर्ग यह सच है कि सब से पहले उस भोजन को मैं ही लेता हूँ जो आपके जीवन का आधार है। और यही बात ठीक है। क्योंकि मैं समस्त शरीर की दुकान या कोश हूँ। परन्तु याद रखिए कि मैं उसे रुधिर-रूपी नदियों द्वारा दिल तक पहुँचाता हूँ। फिर यही भोजन मस्तिष्क में जाता है। सब नस और नाड़ियाँ मुझी से भोजन पाती हैं और यदि आप सब एक साथ यह नहीं देख सकते कि मैं क्या करता हूँ तो मुझ से हिसाब ले लीजिए कि सब तत्त्व खींच कर मैं आपको भेज देता हूँ और केवल फोक मेरे पास रह जाता है।

१ ला आद०—यह उत्तर था। भला हम पर यह कैसे संघटित होता है?

मिनो० अग्री०—रोम की राजसभा यह पेट है और तुम लोग विद्रोही अङ्ग। विचार करो और मालूम होगा कि जो कुछ लाभ तुम को मिलते हैं सब राजसभा ही से मिलते हैं।

जिस समय अग्रीपा अपनी अपूर्व युक्तियों से विद्रोहियों को

शान्त कर रहा था केश्रस मार्कस वहाँ पर आ गया और झिड़क कर उनको कहने लगा।

"अरे दुष्टो! क्या चाहते हो? तुम्हें न तो शान्ति प्रिय है और न युद्ध। युद्ध से डरते हो, शान्ति पर अभिमान करते हो सिंहवत् लड़ने के समय स्यार बन जाते हो। मामला क्या है कि तुम नगर के भिन्न भिन्न स्थानों में इस प्रकार कोलाहल कर रहे हो।

मिनी० अग्री०—इनका विचार है कि धनाढ्य पुरुषों की खत्तियाँ भरी हुई हैं इसलिए मनमाने भाव से अन्न ख़रीदना चाहते हैं।

केश्रस मार्शस०—चूल्हे में जाँय। घर बैठे यह समझते हैं कि हमको राजसभा की ख़बर है। अमुक पुरुष धनाढ्य है, अमुक, दरिद्र है। ये कहते हैं कि अन्न पुष्कल है। यदि पेट्रीशियन लोग दयाभाव को उठा रक्खें और मुझे आज्ञा दें तो मैं तलवार से इन सब की सफाई कर दूँ।

मि० अग्री०—नहीं नहीं। ये लोग तो अब मान गये हैं। अन्य विद्रोहियों का क्या हुआ?

के० मार्श०—वे भी तितर बितर हो गये। वे कह रहे थे कि हम भूखे हैं। भूख दीवारों को तोड़ डालती है। कुत्तों को भी खाना मिलता है। अन्न ईश्वर ने केवल धनी

पुरुषों के लिए ही नहीं दिया। जब उनके साथ कुछ रिआयत कर दी गई तो वे ख़ुशी के मारे टोपियाँ उछालने लगे।

मि० अग्री०—क्या रिआयत ?

के० मार्शि०—उनको शान्त करने के लिए पाँच प्रतिनिधि चुनने का अधिकार दे दिया गया। एक जूनियस ब्रूटस है दूसरा सिसीनियस विल्टस और मैं भूल गया।

उसी समय एक दूत द्वारा ज्ञात हुआ कि वौल्सी लोग रोम पर चढ़ाई करने की तैयारियाँ कर रहे हैं। वौलसिया रोम के उत्तर में एक देश था जिसके साथ रोम वालों की सदा लड़ाई हुआ करती थी। इस समय वौल्सी लोगों में टूलस आफ़ीडियस नामी एक प्रसिद्ध सेनापति था जिसकी वीरता से रोमवासी भी भय खाते थे और केअस मार्शस के सिवा और कोई मनुष्य ऐसा नहीं था जो इस भयानक शत्रु का मुक़ाबिला कर सकता। अन्त में राज-सभा ने यह निश्चय किया कि केअस मार्शस, कमीनियस और टीटस लार्शस एक बड़ी सेना लेकर शत्रु का सामना करें।

उधर वोलसिया में अफ़ीडियस को रोमवालों की तैयारियों की ख़बर लग गई और वे और होशियार हो गये। अफ़ीडियस सेना लेकर मुक़ाबिले को चला परन्तु अन्य वोल्सी लोग कोरियोली नामक दुर्ग की रक्षा करने में कटिबद्ध हुए।

केम्रस मार्शस बड़ी प्रवीण माता का पुत्र था। उस समय रोम की स्त्रियाँ बड़ी निर्भय हुआ करती थीं और उनके पुत्र युद्ध-सम्बन्धी साहस को अपनी माताओं की गोद में ही प्राप्त किया करते थे, यही कारण था कि रोम में ऐसे वीर हो गये हैं। केम्रस मार्शस की माता वौलम्निया अपनी पतोहू वर्जीलिया के साथ घर में बैठी सी रही थी। मार्शस के युद्ध पर चले जाने के कारण वर्जीलिया को दुःखी देख कर उसने कहा "बेटी! आओ या अन्यथा प्रसन्न हो। अगर मेरा पुत्र मेरा पति होता तो मैं उसकी ऐसी अनुपस्थिति को जिस में उसे यश मिले ऐसी उपस्थिति से अच्छा समझती जिस में वह मुझ से अधिक प्रेम प्रकट कर सकता। जब यह मेरा इकलौता बेटा अभी छोटा ही था और जब कोई माता अपने पुत्र को बादशाह को देना भी स्वीकार न करती उसी समय मैंने यह समझ कर कि चित्रवत् घर में सुस्त पड़ा रहने से यशस्वी होना अच्छा है उसे युद्ध की आपत्तियों में भेज दिया था। और वहाँ से वह विजयी होकर आया। मैं सच कहती हूँ कि ऐसी मुझे इस मनुष्य-पुत्र का पहले पहल मुख देख कर ख़ुशी नहीं हुई जैसी यह जान कर हुई कि अब यह मनुष्य बन गया।

वर्जी०—और अगर मर जाता?

वौल०—तो उसका यश मेरा पुत्र होता। मैं सच कहती हूँ कि अगर मेरे बारह पुत्र होते और सब मार्शस की

भाँति ही प्रिय होते तो भी मैं उनमें से ११ का युद्ध में मरना अच्छा समझती और एक का भागना पसन्द न करती !

वर्जीलिया ने वियोग से दुखित होकर कहा—

"श्रीमाता जी ! मुझे एक स्थान में उठ जाने की आज्ञा दीजिए"।

वैल०—नहीं नहीं ! मैं अपने मानसिक नेत्रों से तुम्हारे पति को रणक्षेत्र में लड़ता हुआ देख रही हूँ। वह अपने माथे से लोहू की बूँदें पोंछ रहा है।

वर्जीलिया—लोहू ! हे ईश्वर !

वैल०—मूर्ख लड़की ! क्षत्रिय के माथे पर ख़ून ही शोभा देता है।

इतने में वर्जीलिया की एक सहेली वैलीरिया वहीं आ गई और कहने लगी !

"श्रीमती जी ! प्रणाम !"

वैल०—बेटी जीती रहो !

वर्जीलिया—आप ने बड़ी कृपा की।

वैलीरिया—आप दोनों कैसे हैं ? क्या सी रही हैं ? आपका छोटा बच्चा कैसे है ?

वर्जी०—अच्छा है। ईश्वर की दया है।

वैल०—ईश्वर करे वह चटसाल में जाने के बजाय तलवार और युद्ध के बाजों में संलग्न हो।

वैलीरिया—वह तो ऐसे ही बाप का बेटा है। मैंने उसे गत बुधवार को देखा था। वह बड़ा सुन्दर और वीर प्रतीत होता था। वह एक मक्खी के पीछे दौड़ा और जब वह उसके हाथ न लगी तो उसने ऐसे दाँत पीसे ऐसे दाँत पीसे—

वौलम्निया—ऐसे ही उसका बाप किया करता था।

वैली०—(वर्जीलिया से) सीना उठा रक्खो। चलो जी बहलावें।

वर्जी०—नहीं बहन! आज घर से बाहर न जाऊँगी।

वैली०—क्यों?

वौल०—जायगी!

वर्जी०—नहीं! देवी जी! जब तक पतिजी घर नहीं आते, मैं नहीं जा सकती।

वैली०—यह तो मूर्खता की बात है, चलो!

वर्जी०—नहीं! क्षमा करो।

वैली०—नहीं नहीं! चलो! मैं तुम को तुम्हारे पति का हाल सुनाऊँगी।

वर्जी०—नहीं देवी! अभी कुछ हाल नहीं मिला होगा!

वैली०—मिला है! राज-सभा में पत्र आया है। कमीनियस वौलसी लोगों से लड़ रहा है टीटस लार्शस और

तुम्हारे पति जी कोरियोली के पास उसको जीतने की कोशिश कर रहे हैं।

अब कुछ युद्ध का हाल सुनिए। केअस मार्शस और टीटस लार्शस कई दिनों तक कोरियोली को लेने का प्रयत्न करते रहे। यहाँ तक कि एक बार वौल्सी लोगों ने दुर्ग से निकल कर शत्रु पर छापा मारा और ऐसे लड़े कि रोम वालों के दाँत खट्टे हो गये। और वे भाग निकले। मार्शस घायल हो गया। परन्तु उसने हिम्मत न हारी और फिर अपनी तितर बितर सेना को इकट्ठा करके वौल्सी लोगों से युद्ध करने लगा।

अन्त को वौल्सी लोग पराजित हो गये और जिस समय नगर-वालों ने अपने भागते हुए भाइयों को आश्रय देने के लिए फाटक खोले तो मार्शस भी उनके साथ नगर में घुस गया और वहाँ ऐसी मारधाड़ मचा दी कि नगर-निवासियों के छक्के छूट गये और मार्शस और उसके आदमी लूट मार करके बाहर निकल आये।

कमीनियस पहले वौल्सी लोगों के सामने से अपने को निर्बल समझ कर हट गया। परन्तु फिर लार्शस और मार्शस की अफ़ीडियस से मुठभेड़ हो गई। और मार्शस बोला।

"अफ़ीडियस ! मुझे तू ऐसा बुरा लगता है कि मैं तेरे सिवा किसी से नहीं लड़ना चाहता।"

अफ़ीडियस—हम भी तुझ से ऐसी ही घृणा करते हैं।

मार्शस—जो भागे सो ही दूसरे का दास।

अफ़ीडि०—अगर मैं भागूँ तो ख़रगोश की मौत मारना !

मार्शस—मैं अभी तीन घण्टे तक कोरियोली में लड़ता रहा। जो रक्त तू मेरे मुँह पर देखता है मेरा नहीं है।

जब इन दोनों में युद्ध हुआ तो थोड़ी देर पीछे वौल्सी लोग अपने सेनापति की मदद को आ गये। परन्तु मार्शस ने उन सब को भगा दिया। अन्त में कोरियोली ले लिया गया और लज्जा के मारे अफ़ीडियस पेण्टियम में चला गया और वहीं रहने लगा ! जब कमीनियस और लार्शस मार्शस के साथ अपने कम्पू में मिले तो कमीनियस बोला।

"मार्शस ! अगर मैं तुमसे तुम्हारे पराक्रमों की कथा कहूँ। तो शायद तुम्हें विश्वास न होगा ! परन्तु मैं इनका उस समय वर्णन करूँगा जब सीनेट के सभासद् रोम में आनन्द के आँसू बहावेंगे। और जब पेट्रीशियन लोग तुम्हारी प्रशंसा करेंगे और जहाँ प्लीबियन लोग भी जिनको तुमसे अत्यन्त वैर है अपनी इच्छा के विरुद्ध यह कहने पर मजबूर होंगे 'परमात्मन् ! तुम धन्य हो। आज रोम में एक वीर मौजूद है' !

मार्शस—बस बस ! रहने दो ! मेरी माता को अपने वंश की प्रशंसा करना बड़ा प्रिय है। परन्तु मुझे इससे दुःख होता है। जो मैंने किया है सो तुमने भी किया है। जिसने भक्तिभाव से अपने देश के लिए यथाशक्ति परिश्रम किया वही मेरे तुल्य है।

कमीनियस—अपने गुणों को छिपाना चोरी है। यहाँ समस्त सेना के सामने खड़े होकर जो मैं कहता हूँ उसे सुनो।

मार्शस—मेरे घाव हो रहे हैं और इनमें अपनी प्रशंसा सुन कर पीड़ा हो रही है।

कमीनियस—यह तो ठीक है। अगर उनमें पीड़ा न हो तो वे कृतघ्नता देख कर निर्जीव हो जायँगे। जो कुछ लूट का माल है उसमें से बाँटने से पहले हम दशांस आपकी भेंट करते हैं। इसको स्वीकार कीजिए।

मार्शस—आप का अनुग्रह है। परन्तु मैं अपनी तलवार को रिशवत नहीं दे सकता! मुझे यह अङ्गीकार नहीं है। मैं तो उतना ही लूँगा जो बाँट के अनुसार हर एक को मिलेगा।

यह सुन कर समस्त सेना के मुख से 'मार्शस' 'मार्शस' के जयकारे निकलने लगे। इस पर मार्शस बोला।

"बस करो। बस करो! इन हथियारों को जिनका काम धर्मयुद्ध है झूठी और अनर्थक प्रशंसा में न लगाओ! मुझे ऐसी अत्युक्ति-सूचक प्रशंसा नहीं चाहिए। जैसे मेरे घाव लगे हैं। ऐसी ही औरों को भी"।

कमीनिय०—आप तो बड़े सादे हैं। आज आप को जयमाल पहनाई जायगी और मैं इस उत्सव की ख़ुशी में

अपना सजा सजाया घोड़ा आप की भेंट करता हूँ। चूँकि आपने कोरियोली को जीता है इसलिए आज से आप का नाम केअस मार्शस कोरियोलेनस हुआ।"

कमीनियस के मुख से इस शब्द के निकलते ही फिर जयकारों के मारे आकाश गूँज उठा। लोग ख़ुशी के मारे कूदने उछलने लगे और टोपियाँ सिरों के ऊपर उछलने लगीं। टीटस लार्शस ने कोरियोली के राज का प्रबन्ध किया और सन्धि के नियम निश्चित होकर नगर वौल्सी लोगों को ही लौटा दिया गया। कम्पू से रोम को विजय की सूचना भेज दी गई और यहाँ रोमवासी राजसभा के सभासदों से लेकर छोटे पुरुषों तक बड़ी उत्कण्ठा से विजयी कोरियोलेनस का स्वागत करने की तैयारियाँ करने लगे। उसकी माँ वौलम्निया और धर्मपत्नी वर्जीलिया भी अपने प्यारे से भेंट करने के लिए बाहर निकलीं और मिनीनियस अग्रीपा को मार्ग में मिल कर कहने लगीं।

वौल०—भद्र मिनीनियस! मेरा लड़का आज आ रहा है!

मिनी० अग्री०—क्या मार्शस आ रहा है?

वौल०—हाँ! और विजय के साथ!

मिनीनि०—ईश्वर को धन्यवाद हो! क्या सचमुच मार्शस आ रहा है?

वौल० और वर्जी०—हाँ सचमुच!

वैल०—देखो यह पत्र मेरे पास आया है ! एक पत्र राज-सभा में आया है ! एक उसकी स्त्री के पास ! एक शायद अभी आप के घर गया है ।

मिनी०—मेरे लिए ! बड़े हर्ष की बात है । क्या उसके घाव नहीं लगे ? वह पहले तो रोम को घायल हो कर आया करता था !

वर्जी०—नहीं नहीं !

वैल०—हाँ लगे हैं और मुझे इस बात से हर्ष है ।

मिनी०—उसे घाव ही शोभा देते हैं ।

वैल०—उसे विजयी होकर रोम में आने की यह तीसरी बारी है ।

मिनी०—क्या उसने अफ़ीडियस को मज़ा चखा दिया !

वैल०—लार्शस लिखता है कि उन दोनों का परस्पर युद्ध हुआ । परन्तु अफ़ीडियस भाग गया ।

मिनी०—उसके कहाँ घाव लगे हैं ?

वैल०—कन्धे और बायें हाथ में । जब वह राज सभा में खड़ा होगा तो बड़े अभिमान के साथ इन सब लोगों को दिखा सकेगा ! टार्किन* लोगों के निकालने में उसे सात घाव लगे थे ।

---

*रोम के पूर्व राजवंशी ।

मिनी०—एक गर्दन में है और दो जाँघ में! मैंने कुल नौ घाव देखे हैं।

वौल०—पहले युद्ध में उसके पच्चीस घाव लगे थे।

मिनी०—अब सत्ताईस हो गये। हर एक घाव एक एक शत्रु की क़बर है।

अब इस प्रकार वौलम्निया अपने पुत्र के घावों का वर्णन कर रही थी और इसके वीर चरित्रों का स्मरण करके ख़ुश हो रही थी उसी समय कोरियोलेनस वहाँ पर आ गया और सब लोगों ने तार स्वर से 'कोरियोलेनस' 'कोरियोलेनस' के जयकारे बोलने लगे। कमीनियस ने वौलम्निया की ओर संकेत करके कहा।

"देखिए आप की माता जी खड़ी हुई हैं।"

कोरियोलेनस ने दौड़ कर उसके पैर छुए और कहने लगा।

"माता जी! मैं जानता हूँ कि आप ने ईश्वर से मेरी विजय के लिए ख़ूब प्रार्थना की है"।

वौलम्नि०—उठो बेटे। उठो! मेरे पूत मार्शस उठो। आज तुम पराक्रमों द्वारा कोरियोलेनस हुए। देखो तुम्हारी स्त्री खड़ी हैं।

कोरियोलेनस ने अपनी स्त्री की आँखों में प्रेमभरे आँसू देखकर नम्रता से कहा।

"प्यारी ! मेरी विजय पर क्यों रोती हो ? क्या मेरा शव देख कर हँसतीं ? इस प्रकार तो कोरियोली की विधवायें रो रही हैं।

उसी समय एक दूत ने आकर ख़बर दी कि आप लोगों को दरबार में चलना चाहिए। वहाँ मार्शस को कौंसल नियत करने की तैयारियाँ हो रही थीं। कौंसल का पद वास्तव में रोम का सब से बड़ा अधिकार था। जिस समय से रोम से राजे लोग निकाल दिये गये उसी समय से प्रजा राज-प्रबंध के लिए एक मुख्य आदमी को चुन लेती थी जिसका नाम कौंसल था। कोरियोलेनस की देशसेवा को देख कर लोगों ने अब यह सम्मान उसी को देना चाहा जिसके लिए दूत ने आकर उसे निमंत्रण दिया ! जब सब लोग राजदरबार में उपस्थित हुए तो अधिकारियों ने कौंसल के निर्वाचन की यथोचित कार्य्यवाही करनी आरम्भ की और सब प्रजागण से वोट (सम्मति) ली गई। थोड़ी देर पीछे मिनीनियस ने खड़े होकर सभा में यह वक्तृता की:—

"वोल्सी लोगों के विषय में निश्चित हो गया। इसलिए अब सभा की एक कार्य्यवाही की ओर हम सब का ध्यान होना चाहिए। सभ्यगण ! इस समय कौंसल को कोरियोलेनस के पराक्रमों के विषय में संक्षेप से वर्णन कर देना चाहिए !"

सभासद०—कमीनियस ! आप पूर्ण रीति से वर्णन कर दीजिए जिससे हम सब को ज्ञात हो जाय कि इस वीर पुरुष ने हमारे हित के लिए क्या किया ?

प्लोबियन लोगों के प्रतिनिधि ब्रूटस ने कहा।

"हमको भी इस बात के सुनने से हर्ष है अगर वह पहले की अपेक्षा प्रजा से अधिक प्रेम करे"।

मिनी० अग्री०—यह हो गया! यह हो गया! चुप रहो!

ब्रूटस—मैं मानता हूँ। पर मेरा कथन आपकी धमकी से अधिक उचित था।

मिनी०—उसे प्रजा से हित है।

कोरियोलेनस इस समय सभा से उठ कर चलने लगा। इस पर एक सभासद् ने कहा "आप जाइए न! अपने पराक्रम सुनने में लज्जा की बात नहीं है"।

कोरियोलेनस—क्षमा कीजिए। अपने घावों की प्रशंसा सुनने से तो यह अच्छा है कि मैं जाकर फिर के लिए इनको अच्छा कर रक्खूँ!

ब्रूटस—आप मेरे कहने का बुरा तो नहीं मान गये।

कोरि०—नहीं! नहीं! लेकिन जहाँ चोटों से मैं नहीं भागता वहाँ शब्दों को नहीं सुन सकता!

कोरियोलेनस के चले जाने पर कमीनियस ने कहा:—

"मेरे पास शब्द नहीं हैं कि कोरियोलेनस की प्रशंसा कर सकूँ। कहा जाता है कि वीरता सब से बड़ा गुण है और वह धन्य है जिसमें यह गुण हो। अगर यह ठीक है तो जिस

पुरुष के विषय में मैं कह रहा हूँ उसे संसार भर में कोई नहीं जीत सकता! १६ वर्ष हुए जब टार्क्विन ने रोम पर चढ़ाई की थी उस समय इसने सब से बढ़ कर वीरता दिखाई थी। हमारे डिक्टेटर* ने इसके महान युद्ध का अवलोकन किया था। स्वयं टार्क्विन से यह भिड़ गया और उसके घुटने को घायल कर दिया। उस दिन से १७ लड़ाइयाँ लड़ चुका है। कोरियोली के युद्ध का मैं पूरा वर्णन करने में अशक्त हूँ। उसने भगोड़ों को रोक लिया और अपनी तलवार के नीचे समाप्त कर दिया। सिर से पैर तक लोहू में सन गया था परन्तु इसके हर एक इशारे पर शिर कट रहे थे। वह अकेला नगर के फाटक में घुस गया और आफ़त मचादी। बिना किसी की सहायता के कोरियोली को ले लिया। वहाँ से आकर उसने युद्ध में रक्तपात करना आरम्भ किया और जब तक सब ने हमारा स्वत्व नहीं माना उसके हाथ चलते ही रहे और यद्यपि उसका शरीर थकित हो रहा था परन्तु उसका साहस बढ़ता जा रहा था"।

मिनी० अ०—वीर पुरुष!

सभासद०—वह हमारे सम्मान के योग्य है!

---

* रोम में आपत्ति के समय एक डिक्टेटर नियत हो जाता था जिसको बिना किसी सभा की सम्मति के सब कुछ करने का अधिकार था! डिक्टेटर उसी नियत समय के लिए होता था। इसके बाद उससे यह उपाधि ले ली जाती थी।

कमी०—उसने लूट का माल लेने से इनकार कर दिया। वह अपने पराक्रमों को यही पारितोषिक देना चाहता है कि वे उसके पराक्रम हैं।

मिनी० अ०—बड़ा योग्य पुरुष है।

सभासद०—कोरियोलेनस को बुलाओ!

इतने में कोरियोलेनस वहाँ पर आ गया और मिनीनियस ने कहा।

कोरियोलेनस! राजसभा तुमको कौंसल बनाना चाहती है"।

कोरियो०—मेरा जीवन आपकी सेवा के लिए है।

मिनी०—अब आपको प्रजा से कहना चाहिए!

कोरियो०—मेरी प्रार्थना है कि इस नियम से मुझे क्षमा किया जाय। क्योंकि मैं नंगा होकर उनको अपने घाव नहीं दिखा सकता और न उनसे अपनी वोट के लिए प्रार्थना कर सकता हूँ।

सिसीनियस (प्रजा का प्रतिनिधि)—लोग अपने अधिकार को खोना नहीं चाहते।

मिनी०—कोरियोलेनस! चलो चलो और विधिपूर्वक कार्य्य करो और अपने पूर्वजों के समान अपनी पदवी को नियमानुसार प्राप्त करो।

कोरियोलेनस०—इस नाट्य के करने में मुझे लज्जा आती है।

ब्रटस०—देखो! देखो! क्या कह रहा है!

कोरियो०—घावों के चिह्नों को इन्हें दिखाओ! क्या मैंने यह घाव इसीलिए पाये थे कि इन लोगों की प्रशंसा प्राप्त करूँ!

कोरियोलेनस वास्तव में प्लीबियन लोगों को अपने से नीच समझता था और उसको यह बात कदापि प्रिय न थी कि वोट लेने के लिए सर्वसाधारण के हाथ जोड़े या उनका मुँह तके। परन्तु राजसभा उसे कौंसल बनाने पर कटिबद्ध थी इसलिए कोरियोलेनस के बदले अग्रोपा ने सब काम कर दिया और केअस मार्शस कोरियोलेनस को कौंसल बना दिया गया!

यद्यपि कार्य्यवाही हो गई परन्तु प्लीबियन लोगों को कोरियो-लेनस की बात अच्छी न लगी। वे जानते थे कि जब उसे अवसर मिलेगा वह इन्हें तंग करेगा। परन्तु अब क्या हो सकता था। जब तक वोट नहीं दिये गये थे लोगों को हर एक अधिकार था। परन्तु अब कौंसल होकर यह सब अधिकार कोरियोलेनस को मिल गया और जब नागरिक लोग इस निर्वाचन पर पश्चा-त्ताप करने लगे तो सिसीनियस और ब्रूटस ने उनको उनकी भूल बताई। सिसीनियस ने कहा "क्या तुम इस कोरियोलेनस के स्वभाव को नहीं जानते थे। और अगर जानते थे तो इसे कौंसल चुनने में तुमने कैसा लड़कपन किया?"

ब्रूटस—अरे हमने तो इन लोगों को समझा दिया था। पर क्या करें। उस समय ये लोग जोश में आगये। तब तो यह अशक्त था और राज्य का एक दास था। उस समय यदि कह दिया जाता कि यह मनुष्य प्रजा का शत्रु है, सदा इनके विरुद्ध कहता है तो अवश्य यह कौंसल न बनाया जाता। अगर समर्थ होकर वह अब भी प्लीबियन लोगों का शत्रु बना रहा तो तुम क्या कर सकते हो ?

सिसीनियस—उसने तुम लोगों से वोट नहीं माँगी किन्तु वह चिढ़ाता रहा और तुम ऐसे मूर्ख हो गये कि बिना माँगे वोट दे बैठे।

१ नागरिक—अभी हम इनकार कर सकते हैं।

२ नाग०—मैं उसके विरुद्ध ५०० वोट इकट्ठे कर सकता हूँ !

३ नाग०—मैं १००० !

ब्रूटस—अच्छा अब जल्दी करो और लोगों से कह दो कि जिसको तुमने कौंसल चुना है वह तुम्हारा अहित चाह रहा है।

सिसीनि०—उनको अच्छी तरह समझा दो कि वह हमेशा प्लीबियन लोगों से घृणा करता रहा है और निर्वाचन के समय भी चिढ़ाता था। अगर कोई कहे कि पहले

वोट क्यों देदी तो कह देना कि उसके पराक्रमों को देख कर हमने समझा था कि अब वह हमसे हित करेगा।

ब्रूटस—हमारे ऊपर दोष रख देना और कहना कि हमारी इच्छा वोट देने की नहीं थी किन्तु हमारे प्रतिनिधियों ने मजबूर करके हमसे वोट लेली। उन्होंने कहा कि यह बड़ा वीर पुरुष है। लड़कपन से अपने देश के हित के लिए लड़ता रहा है। यह बड़े उच्च वंश का पुरुष है और इसी आदर के योग्य है। हमारी कभी यह इच्छा नहीं थी कि ऐसे अभिमानी पुरुष को कौंसल बनाते जो हमारे अधिकारों को पद-दलित करता है।

इस प्रकार ब्रूटस और सिसीनियस ने लोगों को सिखला सिखला कर राजसभा की ओर भेजा। थोड़ी देर में हज़ारों रोमन लोग कोरियोलेनस के विरुद्ध अपनी वोट देने के लिए वहाँ पहुँच गये। जब कोरियोलेनस ने देखा कि लोग मुझे अपने नवीन पद से अलग करना चाहते हैं तो वह बड़ा क्रुद्ध हुआ और अपने स्वभाव के अनुसार लोगों को बुरा भला कहने लगा। इस पर प्रजा के प्रतिनिधियों और सभासदों में झगड़ा हो गया और ब्रूटस और सिसीनियस ने कोरियोलेनस को पकड़ना चाहा। इस पर सब लोगों के दो दल हो गये। एक पेट्रोशियन लोग, जिन्होंने कोरियोलेनस का साथ दिया और

दूसरे प्लीवियन जो उसके विरुद्ध थे। थोड़ी देर तक बड़ी भारी लड़ाई हुई, परन्तु कोरियोलेनस की वीरता ने उसके विरोधियों को वहाँ से भगा दिया। अब कोरियोलेनस तो घर चला आया परन्तु राजमंत्रियों को निश्चय हो गया कि रोम पर बड़ी भारी आपत्ति आने वाली है। क्योंकि प्लीवियन लोग पेट्रीशियनों के शत्रु हो रहे थे। जिस नगर के लोग दो दलों में विभाजित हो जायँ उसमें शान्ति कैसे स्थापित हो सकती है?

मिनीनियस अग्रीपा और अन्य देशहितैषियों ने शान्ति के लिए बहुत कुछ प्रयत्न किया और जब फिर नगरनिवासी झुण्ड के झुण्ड कोरियोलेनस की तलाश में जा रहे थे कि उसे पकड़ लें और टार्पियन* पहाड़ी से ढकेल कर मार डालें उस समय उसने लोगों को बहुत कुछ समझाया कि कोरियोलेनस की अपूर्व देशसेवा पर ध्यान रखना चाहिए और कृतघ्न नहीं होना चाहिए। परन्तु प्लीवियनों के मस्तिष्क का पारा कई दर्जे चढ़ा हुआ था, वे क्रोधानल में जल रहे थे। जो उनसे कोरियोलेनस के अनुकूल कहता था उसे वह अपना और अपने देश का बहुत बड़ा शत्रु समझते थे। इसलिए उन्होंने मिनीनियस की एक न सुनी और उसके घर की ओर चलने लगे। परन्तु अन्त में मिनीनियस ने उन सबको इस बात पर राज़ी

---

*रोम में एक पहाड़ी है जहां से अपराधी जन गिरा कर मार डाले जाते थे।

किया कि वह स्वयं जाकर घर से कोरियोलेनस को ले आवेगा और बाज़ार में जहाँ पंचायत हुआ करती थी वह प्लीवियन लोगों से अपनी क्षमा का प्रार्थी होगा। उस समय यदि लोगों को उस पर दया न आवे तो नियमानुसार जो चाहें उसको दण्ड दें। परन्तु इस प्रकार हल्ला करने से परस्पर वैर की अग्नि प्रज्वलित होगी, जिसमें भस्म होकर समस्त देश नष्ट भ्रष्ट हो जायगा।

लोग यह बात मान गये और बाज़ार में कोरियोलेनस की प्रतीक्षा करने लगे। उधर मिनीनियस ने कोरियोलेनस के घर जाकर उसको समझाना शुरू किया। क्योंकि अपराध उसी का था। कौंसल लोग प्रजा की वोट से बनाये जाते थे और उनका कर्त्तव्य था कि जिन्होंने उनको ऐसे पद पर नियत किया उनके हित का ध्यान रक्खें। कोरियोलेनस स्वभावतः अभिमानी था; वह नीच लोगों से मित्रता का व्यवहार करना नहीं चाहता था। इसलिए चाहे कुछ भी क्यों न हो, वह उनसे क्षमा माँगने के लिए उद्यत नहीं था। वौलम्निया भी अपने पुत्र को बहुभाँति उपदेश कर रही थी कि अपने पूर्वजों की भाँति उसको भी प्रजापालित राज्य से संतुष्ट रहना चाहिए और प्रजा के लिए अपशब्द नहीं कहने चाहिए, परन्तु कोरियोलेनस नहीं मानता था।

अन्त में जब उसकी माता ने बहुत आग्रह किया तो वह मान गया और मिनीनियस के साथ बाज़ार को चल दिया कि लोगों

से अपने किये की क्षमा माँगे। पहले उसने जाकर लोगों से नम्रता के साथ संभाषण किया और सबको आशा हो गई कि अब काम बन जायगा। परन्तु थोड़ी देर में, जिस समय वह लोगों से यह पूछ रहा था कि भला मेरा क्या अपराध है जिसके कारण आपने थोड़ी ही देर में मुझे पदच्युत करने की ठान ली है, उस समय ब्रूटस बोल उठा "कि तुम देशद्रोही हो और अपनी शक्ति का अनुचित प्रयोग करना चाहते हो।"

देशद्रोही का शब्द सुनते ही कोरियोलेनस के तन में आग लग गई और वह अपनी समस्त प्रतिज्ञाओं को जो उसने अपनी माता के साथ की थीं भूल गया। वह कहने लगा—

"भाड़ में जाओ सब लोग! मैं कैसे देशद्रोही हो सकता हूँ। ब्रूटस तो झूठा है। अगर तेरे हाथ में सहस्र मौतें भी हों तो भी मैं कहूँगा कि तू झूठा है। महा झूठा है"।

सिसीनियस—देखो लोगो! देखो!

सब लोग—ले चलो। इसे टार्पियन पहाड़ी को ले चलो!

सिसीनियस—देखो। देखो! अन्य अपराधों के गिनाने की क्या ज़रूरत है। इसने हम को और हमारे आदमियों को मारा है और राजनियम का उल्लङ्घन किया है। इसने प्रजा के अधिकारों को पददलित किया है। दुर्भिक्ष के समय इसने अन्न बाँटने के विरुद्ध

अपनी आवाज़ उठाई थी। यह विद्रोही है। यह विद्रोही है।

मिनीनियस—(कोरियोलेनस से) देखो तुमने अपनी माता से क्या प्रतिज्ञा की थी।

कोरियो०—मैं कुछ नहीं देखता। मैं कभी इन दुष्ट कमीने और नीच लोगों के आगे सिर नहीं झुकाऊँगा।

यह सुन कर लोग और बिगड़ गये और जो कुछ शान्ति की आशा बाक़ी रही थी वह भी जाती रही। सबने मिल कर विद्रोह और प्रजा-अहित के अपराध में कोरियोलेनस को एकस्वर होकर देश से निकाल दिया। कमीनियस ने बहुत कुछ प्रार्थना की कि कोरियोली के युद्ध का विचार करलें और केअस मार्शस को ऐसा घोर दण्ड न दें। परन्तु किसी ने न माना। और जब कोरियोलेनस बाज़ार से घर को चला तो लोग उसको चिढ़ाते और तालियाँ बजाते उसके पीछे पीछे चले गये।

देशनिकाले की ख़बर सुन कर कोरियोलेनस के घर में हाहाकार मच गया और उसकी माता तथा स्त्री ऊँचे स्वर से रोने पीटने लगीं। कोरियोलेनस ने घर से चलने की तैयारियाँ कर दीं और वह अपनी माता को समझाने लगा—

"रोओ मत! लोग मेरा सामना कर रहे हैं। इस समय चला जाना ही उचित है। माता जी! आपका पहला साहस कहाँ गया? तुम तो कहा करती थीं कि आपत्ति में मनुष्य की

जाँच हुआ करती है। साधारण समय पर तो सभी संतोष किया करते हैं। जब समुद्र शांत होता है तो सभी नावें अच्छी तरह चला करती हैं। धन्य वह नाव है जो तूफ़ान में भी न डगमगावे!"

वर्जीलिया—हाय! ईश्वर! हाय!

कोरियो०—प्यारी! सन्तोष करो!

वौल०—ईश्वर रोम को नष्ट करे।

कोरियो०—माता जी! लोग मुझे याद करेंगे, जब मैं चला जाऊँगा। माता जी! सन्तोष करो और उस दिन की याद करो जब तुम कहा करती थीं कि यदि मैं हरकुलीज़* की स्त्री होती तो बारह पराक्रमों में से छः पराक्रम मैं ही कर देती और अपने पति को कष्ट न देती। अब प्यारी माता जी! बैठिए और अपने मन को कष्ट न दीजिए। प्यारी स्त्री, बैठो! मैं अब जाता हूँ!

वौल०—बेटे, तू देश छोड़ कर कहाँ जायगा?

कमीनियस—मैं एक महीने के लिए इसके साथ जाऊँगा।

---

* हरकुलीज़ यूनान का एक बड़ा वीर पुरुष था जिसके विषय में कहा जाता है कि उसने बड़े बड़े बारह पराक्रम किये थे, जिनको अन्य पुरुष नहीं कर सकते थे।

कोरियो०—नहीं! नहीं! आप वृद्ध हैं, मैं कुछ न कुछ प्रबन्ध कर ही लूँगा।

यह कह कर अपने मित्रों से गले मिल कर और अपनी रोती हुई माता का आशीर्वाद लेकर केअस मार्शस अपने प्यारे देश से चल दिया और एण्टियम की ओर प्रस्थान किया जहाँ उसका शत्रु अफ़ीडियस रहा करता था। वहाँ जाने से उसका यह विचार था कि अफ़ीडियस से सन्धि करके थोड़े दिन वहाँ रहे और जब दोनों एक बड़ी सेना को एकत्रित कर लें तो मिल कर रोम पर चढ़ाई करें और उन कृतघ्न लोगों को जिन्होंने इस प्रकार उसका अपमान किया है दण्ड दें।

जिस समय कोरियोलेनस फटे कपड़े पहने हुए एण्टियम नगर में पहुँचा और अफ़ीडियस के महल में गया उस समय उसके घर कुछ उत्सव था और अतिथि, पाहुने प्रीति-भोजन के लिए वहाँ पर आये हुए थे। नौकर लोग भोजन परोसने में लगे हुए थे। एक नौकर ने इसे देख कर कहा—

"कहो कहाँ से आते हो? क्या द्वारपाल की आँखें उसके सिर में हैं कि वह ऐसे लोगों को भीतर घुस आने देता है। चले जाओ!"

कोरियो०—जा! जा!

नौकर—जा! अरे क्यों नहीं जाता!

कोरियो०—मुझे खड़ा रहने दो। मैं तुम्हारा नुक़सान नहीं करता।

नौकर—तुम कौन हो?

कोरियो०—एक भद्र पुरुष!

नौकर—दरिद्र भद्र पुरुष!

कोरियो०—हाँ भाई!

नौकर—भद्र पुरुष, यहाँ से चले जाओ। यहाँ तुम्हारे लिए स्थान नहीं है। जल्दी जाओ।

कोरियो०—जा! जा! अपना काम कर।

नौकर कहाँ रहते हो?

कोरियो०—आकाश के नीचे!

नौकर—बड़ा विचित्र आदमी है।

कोरियोलेनस—मैं तेरे स्वामी का नौकर नहीं हूँ।

अपने स्वामी के लिए अपशब्द सुन कर नौकर ने उसे पकड़ कर हटाना चाहा परन्तु कोरियोलेनस ने उसे मार कर भगा दिया! कोलाहल सुन कर अफ़ीडियस वहाँ आ गया और पूछने लगा—

"कहाँ से आता है? क्या चाहता है? क्या तेरा नाम है? क्यों नहीं बोलता?"

कोरियो०—टूलस! अगर तू मुझे नहीं पहचानता और मेरी शकल देख कर मेरा नाम नहीं जानता तो मैं मजबूर होकर अपना नाम बताऊँगा।

अफ़ीडिय०—तेरा क्या नाम है ?

कोरि०—वह नाम जो वौलसी लोगों को बुरा मालूम होता है और जिससे तेरे कान चौंक पड़ते हैं ।

अफ़ी०—तेरा क्या नाम है ? यद्यपि तेरे कपड़े फटे हैं परन्तु तू बड़ा आदमी मालूम होता है ।

कोरियो०—अच्छा क्रोध करने के लिए तैयार हो, क्या तूने मुझे पहिचाना ?

अफ़ीडि०—मैंने नहीं पहिचाना ! नाम ?

कोरियो०—मेरा नाम केअस मार्शस है, जिसने तुझे और वौल्सी लोगों को बड़े बड़े कष्ट दिये हैं और जिसके बदले मुझे कोरियोलेनस की पदवी दी गई थी । परन्तु अब केवल यह नाम ही शेष रह गया है । मेरे कृतघ्न देशभाइयों ने मेरा सब कुछ छीन लिया और मुझे देश से निकाल दिया । अब ऐसी अवस्था में मैं तेरे घर आया हूँ । मेरी यह इच्छा नहीं है कि तू मेरे प्राण बचा दे । क्योंकि हम दोनों एक दूसरे के बड़े शत्रु रहे हैं । अगर तू चाहता है तो मेरा शिर काट ले, क्योंकि ऐसा अवसर तुझे न मिलेगा । परन्तु यदि तू रोम से लड़ना चाहता है तो मैं भी तेरी ओर से इन कृतघ्न लोगों से लड़ना चाहता हूँ ।

अफ़ीडियस तो ऐसे ही अवसर की तलाश में था कि जिस से वह अपने देश के शत्रु रोम वालों पर विजय पा सके। इस लिए उसने झट कोरियोलेनस को गले लगा लिया और वे दोनों मित्रवत् रहने लगे।

थोड़े दिनों रोम वाले बड़ी शान्ति के साथ रहे और किसी दल में किसी प्रकार का झगड़ा नहीं हुआ! ऐसे समय में साधारण पुरुषों को किसी वीर की आवश्यकता ही क्या हो सकती थी। वे समझते थे कि अच्छा हुआ मार्शस कोरियोलेनस निकाल दिया गया और जो कहते थे कि उसके जाने से हानि होगी सो भी नहीं हुई क्योंकि रोम उसके बिना भी सुरक्षित है। प्रजा के प्रतिनिधि ब्रूटस और सिसीनियस उन पेट्रीशियनों को चिढ़ाने लगे जो कोरियोलेनस के मित्र समझे जाते थे और जिन का यह विचार था कि रोम की शत्रुओं से रक्षा करने के लिए उस जैसे वीर पुरुषों की आवश्यकता थी। बहुत से इनमें ऐसे थे जो फिर कोरियोलेनस के बुलाने के पक्षपाती थे। परन्तु प्लीबियन लोग उन्हें हँसी में उड़ा देते थे।

परन्तु ये सुख के दिन बहुत समय तक न रहे और कृतघ्न रोम वालों को बहुत शीघ्र मालूम हो गया कि पाप का फल मीठा नहीं होता! एक दिन ख़बर लगी कि वौल्सी लोग दो बड़ी सेनाओं सहित रोम पर आक्रमण करना चाहते हैं। इस भयानक वार्त्ता को सुन कर सब घबरा उठे, क्योंकि इस समय

रोम में कोई ऐसा वीर नहीं था कि अफ़ीडियस का सामना कर सकता। इस पर जब उन्होंने सुना कि कोरियोलेनस स्वयं सेनापति होकर आ रहा है तब तो इस घबराहट की कुछ सीमा ही नहीं रही और मिनीनियस अग्रोपा कहने लगा—

"यदि वह वीर पुरुष दया न करेगा तो हम अवश्य नष्ट हो जायँगे।"

कमीनियस ने कहा—

"उससे प्रार्थना कौन करे। मजिस्ट्रेट लोग किस मुँह से कह सकते हैं। प्लेबियन लोग उसी दया के अधिकारी हैं जिसकी भेड़िया गड़रिये से आशा कर सकता है। उसके मित्र भी कैसे कह सकते हैं कि 'रोम पर दया करो' क्योंकि उन्होंने भी उसके शत्रुओं के समान व्यवहार किया था।

मिनी०—यह तो सच है। यदि वह दियासलाई लेकर मेरा घर जलाने लगे तो भी मुझे यह कहने का साहस नहीं हो सकता कि 'कृपया क्षमा कीजिए' (ब्रूटस से) यह तुम्हारे ही कर्मों का फल है।

कमीनियस—हाँ। यह तुम्हारे ही कर्म्म थे जिन्होंने रोम को इस घोर विपत्ति में डाल दिया!

ब्रूटस और सिसीनियस—हमने क्या किया?

मिनी०—क्यों, क्या हमने किया है, हम तो उसे चाहते थे। हाँ इतना हमारा अपराध है कि पशुओं की भाँति हम तुम्हारे कहने में आ गये।

जैसे तैसे लड़ाई की तैयारियां की गईं, मगर जैसी आशा थी वैसा ही परिणाम हुआ। सब रोमन लोग बुरी तरह पराजित हुए और कोरियोलेनस और अफ़ीडियस ने रोम के बाहर कैम्प डाल कर अपनी विजय के दूसरे दिन रोम को जन बच्चे सहित जलाने का हुक्म दे दिया।

अब तो रोम में खलबली मच गई। हर घर में रोना पीटना पड़ गया! हाहाकार होने लगे। कोई उपाय बचने का न सूझा। अन्त में कमीनियस बड़ी नम्रता-पूर्वक कोरियोलेनस के पास गया और हाथ जोड़, आंखों में आंसू भर कर क्षमा का प्रार्थी हुआ। परन्तु कोरियोलेनस ने उसे सूखा जवाब दे दिया। जब कमीनियस ने कहा कि आप हमारे परम मित्र थे; हम और आप साथ साथ युद्ध में लड़ा करते थे। इस मित्रता पर ध्यान दीजिए, तब कोरियोलेनस ने उत्तर दिया।

"हम कुछ नहीं जानते। जब तक रोम का संपूर्ण नगर भस्मीभूत न हो जाय तब तक हम किसी को नहीं पहचानेंगे"। जब कमीनियस ने कहा कि "दया कीजिए। दया राजों का धर्म है" तो उसने उत्तर दिया कि "ऐसे मनुष्य से दया की प्रार्थना क्या, जिसे घृणा करके देश से निकाल दिया हो।" जब कमीनियस ने कहा कि "अपने निज मित्रों की तो रक्षा कीजिए" तो उसने उत्तर दिया "कि मैं मनों भूसी के ढेर में एक दो अन्न के दानों को उठाने का कष्ट सहन नहीं कर सकता।"

इस प्रकार कमीनियस के निराश लौट आने पर वृद्ध मिनीनियस से सब लोगों ने मिल कर प्रार्थना की कि "भगवन्, अब आप जाइए; मार्शस आपको पिता के समान समझता रहा है। वह अवश्य आप के कहने से मान जायगा"। यद्यपि मिनीनियस को कोरियोलेनस की दया पर किंचित् भी विश्वास नहीं था, यद्यपि वह देख चुका था कि कमीनियस को किस अपमान के साथ लौटना पड़ा और यद्यपि कोरियोलेनस के निश्चल विचारों को वह भली प्रकार जानता था, परन्तु सब के कहने से अन्त में उसने जाना उचित समझा।

जब मिनीनियस वौलसियन सेना के कैम्प में घुसा तो सिपाही ने टोका—"ठहरो! कहाँ से आते हो?"

मिनी०—मैं रोम का सरदार हूँ और कोरियोलेनस से संभाषण करना चाहता हूँ।"

सिपा०—चले जाओ, हमारा स्वामी रोम के किसी मनुष्य से मिलना नहीं चाहता।

मिनी०—सिपाही जी। मैं मार्शस का मित्र मिनीनियस हूँ।

सिपा०—चले जाओ! नाम से भीतर जाने का अधिकार नहीं मिल सकता।

मिनी०—सुनो! तुम्हारा स्वामी मेरा बड़ा मित्र है। जाकर कहो, वह अवश्य मुझ से भेंट करेगा।

सि०—अगर तुम उसके मित्र होते तो तुम भी रोम से उसी के समान घृणा करते क्योंकि रोम वाले बड़े कृतघ्न हैं और अपने रक्षक को ही मारते हैं और अपनी मूर्खता से अपने शत्रुओं के हाथ में डाल दे बैठते हैं। क्या तुम समझते हो कि स्त्रियों के रोने चिल्लाने से वह बदला लेना छोड़ देगा? जाओ। होश की दवा करो। चलो हटो और अपने नष्ट होने की तैयारियाँ करो। इसने शपथ खाई है कि किसी रोमनिवासी को जीता न छोड़ूँगा।

जब ये बातें हो रही थीं तो कोरियोलेनस वहाँ पर आ गया और उसे देखकर मिनीनियस कहने लगा—

"बेटे! तुम हमारे लिए आग जलवा रहे हो और मैं अपने आँसुओं से इसे बुझाना चाहता हूँ। मैं कभी यहाँ न आता परन्तु मुझे निश्चय हो गया है कि तुम मेरे सिवा किसी की न सुनोगे। ईश्वर तुम्हारे क्रोध को शान्त करे"।

कोरियो०—चलो। हटो!

मिनी०—क्यों, क्यों।

कोरियो०—मा, स्त्री, लड़का किसी को मैं नहीं जानता। इस समय मैं दूसरे का काम कर रहा हूँ। वही करूँगा जो वौल्सियन लोगों के लिए हितकर होगा!

यह कह कर उसने मिनीनियस को निकाल दिया और वह बिचारा अपना सा मुँह लेकर रोम को लौट आया। अब क्या उपाय हो सकता था? लोगों के छक्के छूट रहे थे। बच्चे आग की ख़बर सुनकर बिलक रहे थे। स्त्रियों की आँखों से आँसुओं की धार बह रही थी। ऐसे समय में कोरियोलेनस की माता वौलम्निया उसकी स्त्री वर्जीलिया और रोम की सब प्रतिष्ठित देवियों को लेकर अपने पुत्र के राज़ी करने को चल दी। इनके साथ कोरियोलेनस का पुत्र भी था।

कोरियोलेनस ने दूर से इस मण्डली को देखकर पहले ही से अपना हृदय पत्थर सा कड़ा कर लिया और निश्चय कर लिया कि चाहे जो कुछ हो किसी की बात न मानूँगा। जब ये स्त्रियाँ निकट पहुँचीं तो वर्जीलिया ने कहा—

"मेरे स्वामिन्! मेरे पति!"

कोरियो०—ये वे आँखें नहीं हैं जो रोम में थीं।

वर्जी०—हमारी दुर्दशा के कारण आपको यह विचार होता है।

कोरि०—सुस्त नाट्य-कर के समान मैं अपना पार्ट भूल गया!

इसके पश्चात् उसने अपनी रोती हुई माता के चरण छुए और विनय-पूर्वक कहा कि "आप मुझे क्षमा कीजिए और मुझ से चाहे सो कहिए परन्तु रोम पर दया करने की आज्ञा न दीजिए। क्योंकि मैंने शपथ खाई है कि जो कह चुका उसे करके रहूँगा।"

वौलम्नि०—(अपने पुत्र के पैरों पर गिर कर) ईश्वर तुझे चिरंजीव करे। मैं तेरे चरणों पर गिर कर उलटी प्रार्थना करती हूँ। मैंने तुझे शूरवीर बनाया था। तुझे ख़बर है कि हम सब तुझ से प्रार्थना करने आये हैं!

कोरियो०—शांत हो! जो मैं कह चुका सो कह चुका! मुझ से यह मत कहो कि रोम को क्षमा कर दो। या सेना को ले जाओ!

वौल०—बस! बस! तुम कह चुके कि हमारा कहना न करोगे। क्योंकि हम वही माँगती हैं जिसको तुम देना नहीं चाहते। इसलिए अब केवल एक प्रार्थना है। उसे सुन लो, जिससे यदि तुम इसे अस्वीकार करो तो दोष हमारा न हो किन्तु तुम्हारी कठोरता का हो।

कोरियो०—अच्छा!

वौलम्नि०—क्या हम चुप रहें और मुँह न खोलें? हमारे वस्त्र और हमारी दशा कह रही है कि जिस दिन से तू देश से गया है तब से हमारी क्या गति हुई है। अपने हृदय से पूछ कि कैसी अभागिन हम स्त्रियें तेरे पास आई हैं। तुझे देख कर हमारा हृदय .खुश होता और हम आनन्द के मारे गद्गद होतीं। परन्तु आज हम डर के मारे तेरा मुँह देख देख कर रो

रही हैं। क्योंकि हम देखती हैं कि मेरा लड़का, वर्जीलिया का पति और इस लड़के का बाप अपने देश को नष्ट कर रहा है। और तू हमारी प्रार्थनाओं पर पानी फेर रहा है। हम किस प्रकार ईश्वर से तेरी रक्षा के लिए प्रार्थना करें और अपने देश का बुरा चाहें। हम को उचित था कि अपने पुत्र की विजय पर ख़ुशी मनातीं। पर ऐसी विजय से कैसे आनन्द हो सकता है जो अपने ही देश की घातिनी हो! क्या तू अपनी स्त्री, बच्चे और देशवासियों का रक्तपात करके अपनी विजय पर अभिमान कर सकेगा? रही मैं। याद रख मैं उस समय तक जीती न रहूँगी जब तू उसी गर्भाशय को पददलित कर सके जिससे तूने जन्म लिया है।

वर्जीलि०—और न मेरे उदर को जिस से तेरा नामलेवा पुत्र उत्पन्न हुआ है।

पुत्र—और न मुझे। मैं भाग जाऊँगा। और फिर लड़ूँगा!

कोरियोलेनस पर कुछ असर होने लगा और वह इसको टालने के लिए वहाँ से उठ चला; परन्तु उसकी मा फिर बोली।

"जाता कहाँ है। बैठ हम यह नहीं कहतीं कि तू हमको बचादे और वौल्सी लोगों को दण्ड दे। हम यह चाहती हैं कि दोनों में सन्धि हो जाय। यदि तू ने आज अपना देश न

बचाया तो भविष्यत् में तेरा नाम बड़े अपमान के साथ लिया जायगा और लोग कोस कोस कर कहा करेंगे कि 'आदमी तो बहादुर था परन्तु अन्त में देशघातक निकला। बोल तो सही! तू ने बड़ा भारी यश प्राप्त किया और देवताओं के समान वीरता पाई। पर अब तू अपने देश को ही नष्ट करना चाहता है। (वर्जीलिया की ओर संकेत करके) बेटी तू ही कह। पर वह तेरी क्या परवा करता है। (लड़के की ओर देखकर) अरे तू ही कह! सम्भव है कि तेरी भोली भाली बातें इसे पसन्द आ जायँ। अपनी माता का सभी कहना मानते हैं। परन्तु मैं क़ैदी की तरह रो रही हूँ और यह चुपचाप खड़ा सुन रहा है। अरे यही कह दे कि मैं अनुचित कह रही हूँ। हम चली जायँगी। परन्तु यदि तू यह नहीं कह सकता तो फिर अनुचित के करने में कैसी वीरता? ईश्वर तुझे दण्ड देगा कि तू कर्त्तव्यपालन से जी चुराता है और अपनी माता की अनुचित आज्ञा का पालन नहीं करता। देवियो! तुम सब इसके पैरों पड़ो और अगर अब भी यह नहीं सुनता तो चलो। हम सब अपने पड़ोसियों सहित जान देंगी। जाने दो। जान पड़ता है कि इसकी माता कोई वोल्सी स्त्री होगी। इसकी स्त्री भी कोरियोली में होगी जिसके इसी के समान कठोर पुत्र होगा"।

अपनी पूज्य माता की ऐसी विचित्र वक्तृता सुन कर कोरियोलेनस का हृदय पिघल गया और उसकी आँखों में आँसू भर आये और वह अपनी माता के गले लग कर कहने लगा—

"मा ! मा ! तुमने क्या किया ! आकाश के द्वार खुल गये ! देखो देवता लोग इस अनहोने दृश्य पर हँसी उड़ा रहे हैं । मा ! मा ! तुमने रोम के लिए विजय पा ली । परन्तु अपने पुत्र के लिए—अच्छा नहीं किया ! ।"

यह कहकर कोरियोलेनस ने रोम को क्षमा कर दिया और वौल्सी लोगों के साथ एण्टियम को चला गया ! रोम में इन देवियों के लौट आने पर .खुशी के बाजे बजाये गये । सब लोगों का नया जन्म हुआ और एक देवी ने वह काम कर दिखाया जो बड़े बड़े वीरों से न हुआ था ।

परन्तु कोरियोलेनस की इस कार्य्यवाही से वौल्सी लोग प्रसन्न न हुए । अफ़ीडियस थोड़े दिनों से इससे डाह करने लगा था क्योंकि इसकी वीरता को देख कर वौल्सी लोग अफ़ी-डियस से अधिक इसकी प्रतिष्ठा करते थे । इस लिए जब यह एण्टियम में पहुँचा तो इस पर विद्रोह और देश के अहित का दोष लगाया गया और जिस समय इस पर राजसभा में अभियोग चलाया जा रहा था उसी समय अफ़ीडियस के कुछ साथियों ने तलवार से इसे मार डाला !

—:o:—

टीटस एण्ड्रोनीकस

Titus Andronicus

बहुत दिन हुए रोम में एण्ड्रोनीकस नामक एक पेट्रीशियन वंश था जिसकी वीरता और देशभक्ति तथा राजभक्ति जगत्प्रसिद्ध थी। ये लोग अपने राजा और देश के लिए कोई ऐसा काम न था जिसे नहीं कर सकते थे। इन्हें अपने भाई बहन बच्चे, यहाँ तक कि अपने प्राण भी इतने प्रिय नहीं थे जितना अपना देश। इस वंश के अग्रगन्ता दो वीर पुरुष थे। बड़े का नाम टीटस और उसके छोटे भाई का नाम मार्कस एण्ड्रोनीकस था। टीटस ने अपने नगर की रक्षा में बड़े बड़े पराक्रम कर दिखाये थे। कहा जाता है कि उसके २१ लड़के रोम के शत्रुओं से लड़ कर मारे जा चुके थे; परन्तु वह इसको अपना बड़ा भाग्य समझता था कि उससे उत्पन्न हुए पुत्रों का इसी वीरता से अन्त हुआ।

जिस समय का हम वर्णन कर रहे हैं उस समय टीटस और उसके पुत्रों ने गाथ लोगों पर विजय पाई थी जो बहुत दिनों से

रोम से शत्रुता रखते थे। और उनकी महारानी तमोरा को उसके तीन पुत्रों अलाबैस, डिमीट्रियस और चीरन सहित पकड़ कर रोम में ले आये थे। इस लड़ाई में टीटस के भी कई पुत्र मारे गये थे, जिनकी लाशें मृतकसंस्कार के लिए अपने देश में लाई गई थीं।

उस समय रोम के लोगों में एक भयानक रीति यह थी कि वे अपने शत्रुओं को मार मार कर अपने देवताओं को बलि-प्रदान किया करते थे। इसलिए जिस समय इन पुत्रों के मृतक-संस्कार का समय आया तो इनके भाइयों ने अपने पिता से प्रार्थना की कि हम महारानी तमोरा के सबसे बड़े पुत्र की बलि देना चाहते हैं जिससे हमारे भाइयों की आत्मा को शान्ति हो सके; क्योंकि उन्होंने इन्हीं गाथ लोगों के विरुद्ध लड़ कर अपने प्राण दिये हैं। टीटस ने उत्तर दिया कि मैं हर्षपूर्वक तुम को आज्ञा देता हूँ कि इस अभागी महारानी के सबसे बड़े पुत्र की बलि चढ़ा दो।

बिचारी तमोरा इस आज्ञा के पाते ही खड़ी खड़ी सूख गई और आँखों में आँसू भरकर कहने लगी—

"विजयी टीटस! मेरे आँसुओं पर दया करो। एक माता के आँसुओं का ध्यान करो जो वह अपने प्रिय पुत्र के लिए बहा रही है। यदि कभी तुमको तुम्हारे लड़के प्यारे थे तो याद रक्खो कि उतने ही मेरे बच्चे मुझे प्यारे हैं। यही काफ़ी है कि

हम और हमारे बच्चे क़ैद होकर आप के इस विजय-उत्सव की शोभा को बढ़ाने के लिए यहाँ खींच लाये गये हैं। अब क्या आप इन वीर पुत्रों का रोम की गलियों में वध करना चाहते हैं; जिनका अपराध केवल इतना ही है कि वे अपने देश के लिए जी तोड़ कर लड़े थे। यदि अपने देश और राजा के लिए लड़ना तेरे पुत्रों के लिए यश और प्रशंसा का कारण है तो मेरे लड़कों के लिए भी होना चाहिए। एण्ड्रोनीकस! अपने वंश की समाधियों को रुधिर से अपवित्र न करो! यदि तुम देवतों के समान हुआ चाहते हो तो दया करो! क्योंकि दया ही भद्र पुरुषों का चिह्न है। वीर टीटस मेरे ज्येष्ठ पुत्र पर कृपा करो!"

टीटस ने तमोरा के विलाप की कुछ भी परवा नहीं की और लोग अलार्बस को पकड़ कर लेगये; क्योंकि टीटस ने कहा था कि हमको धर्मकार्य्य करना है। लाशों को समाधिस्थ करते समय बलि चाहिए और बलि के लिए अलार्बस ही सबसे उत्तम पुरुष है।

तमोरा ने रोते हुए कहा—"हाय! यह कैसा निर्दयी धर्म है?"

चीरन—सिथिया वाले भी इतने जंगली नहीं थे।

डिमीट्रियस—अरे कुछ परवा नहीं। अलार्बस के लिए यह बहुत अच्छा हुआ! अब वह शान्ति की नींद सोवेगा और हम टीटस के क्रोधानल में जला

करेंगे। हे रानी ! साहस करो जिन देवतों ने ट्रोय*
की रानी को साहस दिया था वेही तुमको भी बल
देंगे।

टीटस के पुत्रों ने अलार्बस के टुकड़े टुकड़े करके देवता पर चढ़ा दिये और अपने पिता को अपने कार्य्य की समाप्ति की सूचना दी !

जिस समय गाथ वालों पर रोमन लोगों ने विजय पाई उन्हीं दिनों रोम के राजा का देहान्त हो गया था और उसकी गद्दी के लिए सेटरनीनस और कैसियेनस दोनों भाई आपस में झगड़ा कर रहे थे। टीटस के रोम में आने पर दोनों ने इसकी सहायता चाही। परन्तु टीटस सेटरनीनस को चाहता था। प्रायः ऐसा देखा गया है कि जब कोई नया विजयी किसी बड़े देश पर विजय प्राप्त करके आता था तो रोमन लोग उस समय के लिए उस विजयी पर अपना सर्वस्व वार दिया करते थे, फिर चाहे थोड़े दिनों पीछे वे उसका कुछ भी क्यों न करें। इसी रीति के अनुसार लोगों ने टीटस को राजा बनाने का विचार प्रकट किया। परन्तु हम ऊपर कह चुके हैं कि टीटस राजभक्त था; वह अवसर पाकर राज छीनना नहीं चाहता था। अतएव अपने विचारानुसार उसने सर्वसाधारण से आग्रह करके सेटरनीनस को राजा बना दिया।

---

* ट्रोय की रानी का वर्णन होमर ने अपने काव्य में किया है।

सेटरनीनस ने राजा होकर टीटस को कोटिशः धन्यवाद दिये ग्रैार उसका मान बढ़ाने के लिए उसकी बेटी लैवीनिया से विवाह करने की इच्छा प्रकट की, जिससे टीटस की कन्या रोम की महारानी हो सके।

टीटस ने राजा की बात मानली ग्रैार अपनी कन्या देने को उद्यत हो गया। विवाह की तैयारियाँ होने लगीं ग्रैार पुरोहित भी संस्कार करने के लिए ग्रा उपस्थित हुग्रा। परन्तु वास्तव में लैवीनिया का वैसियेनस से प्रेम था ग्रैार उन दोनों की मँगनी भी हो चुकी थी। इसलिए यही उचित था कि लैवीनिया वैसियेनस की स्त्री होती। यद्यपि वैसियेनस राज्य दे देने पर राज़ी हो गया था परन्तु स्त्री भी दे देना उसे पसन्द न था। ग्रतएव उसने टीटस के भाई मार्कस ग्रैार उसके लड़कों लूशियस, क्विण्टस ग्रैार मार्शस की सहायता से लैवीनिया को बीच मन्दिर से हरण कर लिया ग्रैार जितनी देर में टीटस ग्रैार राजा की ग्राँख उधर को उठे ग्रान की ग्रान में भगा ले गया ग्रैार विवाह कर लिया। टीटस को अपने वंशवालों के इस अनुचित व्यवहार पर बड़ा क्रोध ग्राया ग्रैार जब वह उन का पीछा करने को चला तो उस का छोटा पुत्र म्यूशियस अपनी बहन को बचाने के लिए दौड़ा। इस झगड़े में टीटस ने अपने इस पुत्र को मार डाला ग्रैार अपने लड़कों के अत्याचार पर पश्चात्ताप करने लगा!

सेटरनीनस को स्त्री-हरण-रूपी अपमान असह्य हो गया और चूंकि वह उसी समय अपना विवाह करना चाहता था इस लिए रूपवती तमोरा से अपनी शादी करली। इस प्रकार अभागिनी तमोरा एक देश को छोड़कर फिर दूसरे देश की महारानी हो गई और उसके पुत्र बिना किसी दण्ड के स्वतंत्र कर दिये गये। परन्तु तमोरा को टीटस से वैर था, क्योंकि टीटस के द्वारा ही उसका राज्य नष्ट हुआ, उसी के द्वारा उसके पुत्र मारे गये और उसी के कारण यह सब अपमान सहना पड़ा। इसलिए रोम में शक्ति पाकर तमोरा तन मन धन से एण्ड्रोनीकस वंश को निर्बीज करने के उपाय सोचने लगी। हमारी शेष कहानी में केवल यही वर्णन किया जायगा कि किस प्रकार तमोरा को प्रथम अपने मनोरथ की प्राप्ति में सफलता हुई और फिर किस प्रकार उस का भी नाश हो गया।

लैवीनिया के हरण पर सेटरनीनस टीटस और उसके भाई बेटों के साथ नाराज़ हो गया। परन्तु तमोरा एक बनी हुई औरत थी। वह उसी समय से इनके नाश का उपाय सोचने लगी और चूँकि टीटस का रोम में बहुत ज़ोर था, इसलिए केवल बनावट के लिए राजा को समझाकर उस समय मेल करा दिया। राजा ने न केवल टीटस को ही क्षमा कर दिया किन्तु अपने भाई वैसियेनस और लैवीनिया तथा उसके सब भाइयों का अपराध भी क्षमा कर दिया। और एण्ड्रोनीकस वंश

को राजा की ओर से जो पहले सन्देह था वह जाता रहा !

डिमीट्रियस और चीरन जो तमोरा के पुत्र थे, दोनों के दोनों लैवीनिया के रूप पर आसक्त हो गये। परन्तु लैवीनिया एक सती स्त्री थी और वैसियेनस को मारना भी सरल कार्य्य नहीं था। इस लिए उन्होंने एरन नामी एक हबशी की सहायता से जो तमोरा का गुप्त प्रेमी था लैवीनिया का सतीत्व भङ्ग करने की ठान ली।

तमोरा बड़ी दुष्टा थी, जिस समय एरन ने इस विचार को उस पर प्रकट किया तो बड़ी .खुश हुई, क्योंकि उसे टीटस के वंश का अपमान होता देख कर बड़ी .खुशी होती थी। थोड़े दिनों में एक दिन राजा शिकार को गया और रोम की सब बड़ी बड़ी स्त्रियाँ भी अपने पतियों के साथ गईं। मार्ग में बहुत से गुप्त स्थान थे, जहाँ पुरुष छिप सकते थे। पहले तो एरन और तमोरा वहाँ खड़े खड़े गुप्त बातें करने लगे। फिर जिस समय वैसियेनस और लैवीनिया उसी स्थान पर होकर गुज़रे तो बिना बात के तमोरा ने उनसे झगड़ा करना आरम्भ कर दिया। बात का बतङ्गड़ हो गया और कोलाहल तक नौबत आ गई। इधर एरन ने डिमेट्रियस और चीरन को सिखाकर वहाँ भेज दिया। जिस समय यह युवक अपनी कुटिला माता के पास पहुँचे, तमोरा चिल्ला चिल्ला कर सहायता के लिए पुकारने लगी।

इन लोगों को तो हत्या करने की सूझ रही थी। झट अवसर पाकर वैसियेनस को मारडाला और रोती लैवीनिया को पकड़ कर ले गये। इस बिचारी ने तमोरा और इन दुष्टों से बहुत कुछ प्रार्थना की कि चाहे प्राणदण्ड दे दिया जाय परन्तु उसके सतीत्व पर आक्रमण न किया जाय! लेकिन किसी ने उसकी विनती न सुनी और एकान्त स्थान में जा उसका धर्म भ्रष्ट कर उसके दोनों हाथ और जीभ काट ली जिससे वह इस अत्याचार का हाल न कह सके और न लिख सके। इधर तो लैवीनिया को दुर्गति करके उन्होंने जङ्गल में छोड़ा उधर वैसियेनस की लाश को एक गहरे गड्ढे में डाल दिया और उस गड्ढे पर इस प्रकार घास बिछा दी कि जो कोई वहाँ पर आवे वह उसमें गिर पड़े।

एरन ने टीटस के पुत्रों—क्विण्टस और मार्शस—से कहा कि अमुक गड्ढे में मैंने एक तेंदुआ सोते हुए देखा है। चलो इसे मार लाएं। जब मार्शस उस स्थान पर पहुँचा तो झट गिर पड़ा और जब उसका भाई क्विण्टस उस को निकालने के लिए झुका तो वह भी उसी गड्ढे में गिर गया। वहाँ जाकर उन लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ जब उन्होंने वैसियेनस की लाश को वहीं पड़ा हुआ देखा। वे घबराने लगे।

जिस समय क्विण्टस और मार्शस को एरन ने तेंदुये के शिकार के बहाने से इधर भेजा था उसी समय उसने

रुपयों की एक थैली एक वृक्ष के नीचे गाड़ दी और मार्शस के हाथ का लिखा हुआ एक जाली पत्र बनाया, जिसमें मार्शस की ओर से किसी शिकारी के लिए लिखा गया था कि हम वैसियेनस को मार कर ला रहे हैं सो तुम अमुक वृक्ष के तले एक गड्ढा खोद रक्खो जिससे बिना किसी के जाने हुए हम उसको दबा सकें। इसके पुरस्कार में हमने रुपयों की थैली तुम्हारे लिए उसी स्थान पर गाड़ दी है। यह पत्र एरन ने अपनी मनोरथसिद्धि के लिए राजा को दे दिया।

राजा यह समझा कि इन्होंने अवश्य मेरे भाई को मारने का इरादा किया है। इसलिए ज्यों ही वह शिकार से लौटा उसने क्विण्टस को गड्ढे में गिरते हुए देखा, और कहा—

"अरे तू कौन है, जो इसमें कूद रहा है"।

मार्शस—श्रीमन्! मैं वृद्ध एण्ड्रोनीकस का अभागा पुत्र हूँ जो इस दुर्दशा से यहाँ गिर पड़ा हूँ। यहाँ आप का भाई मरा पड़ा है।

सेटरनीनस—(टीटस से) दुष्ट! देख, तेरे लड़कों ने मेरे भाई को मार डाला!

यह कह कर राजा ने दोनों को पकड़वा लिया और जब पत्र के अनुसार वे सब लोग वृक्ष तले गये तो वहाँ देखा कि रुपये गड़े हुए हैं। अब तो सबको निश्चय हो गया कि वैसियेनस के

घातक यही दोनों हैं। इसलिए राजा ने उनको प्राणदण्ड की आज्ञा दे दी।

यद्यपि टीटस को इस कपट की कुछ ख़बर नहीं थी परन्तु उसे यह बात भले प्रकार विदित थी कि मेरे पुत्र अपने बहनोई को नहीं मार सकते। इसलिए वह बहुत ही शोकातुर हुआ और रो रो कर मजिस्ट्रेटों से प्रार्थना करने लगा कि जो सेवा मैंने अब तक अपने देश की की है उसके बदले में मेरे पुत्रों को क्षमा कर दिया जाय। परन्तु कौन उसकी सुन सकता था। क्योंकि तमोरा और एरन ने भली भाँति राजा के कान भर दिये थे।

टीटस जिस समय इस प्रकार अपने पुत्रों के लिए रुदन कर रहा था उसी समय लैवीनिया भी अपने चचा मार्कस के साथ अपने पिता के पास आई। उसके मुँह से ख़ून निकल रहा था और उसकी बाहों की जगह केवल दो ठूँठ से लगे हुए थे। वह अपने मन ही मन में अपनी दशा का विचार कर रही थी क्योंकि इसके प्रकाशित करने के समस्त साधन उससे छीन लिये गये थे। मार्कस और टीटस दोनों बड़े आश्चर्य्य में थे कि किस हत्यारे ने इसके साथ यह दुष्टता की। टीटस को अपनी कन्या की दुर्गति पर अत्यन्त शोक हुआ और वह ढाढ़ें मार मार कर रोने लगा। उसका लड़का लूशियस भी छाती पीटने लगा; क्योंकि उनकी समझ में नहीं आता था कि किस मनुष्य ने यह घोर हत्या की है।

परन्तु अभी एरन और तमोरा के छल की समाप्ति नहीं हुई थी। वे टीटस के इतने ही दुःख पर सन्तुष्ट न थे। इसलिए एरन ने टीटस से आकर कहा—

"हमारे राजा ने संदेसा भेजा है कि अगर तुम अपने लड़कों को बचाना चाहते हो तो तुम या मार्कस या लूशियस, कोई एक अपनी भुजा काट कर राजा के पास भेज दो। इसी को काफ़ी दण्ड समझा जायगा और मार्शस और क्विण्टस को जीवित वापिस कर दिया जायगा।"

टीटस—भले एरन, आपने अच्छी बात सुनाई। मैं अभी अपनी भुजा काट कर राजा के पास भेजता हूँ। कृपया इसके काटने में सहायता करो।

लूशियस—ठहरिए पिता जी! आप का पूज्य हाथ, जिसने अपने देश के लिए ऐसे ऐसे काम किये हैं, कदापि नहीं भेजा जा सकता! मेरी भुजा इस समय काम दे जायगी।

मार्कस—तुम दोनों की भुजायें इस रोम के लिए बड़ी लाभदायक हैं। तुम दोनों ने शत्रुओं के दलों में खलबली मचा दी है। इस लिए अपने भतीजों की जान बचाने के लिए मैं ही अपनी भुजा काटूँगा।

एरन—जल्दी करो, क्योंकि फाँसी देने का समय निकट है।

मार्कस—मेरा हाथ जायगा।

लूशियस—नहीं जा सकता।

टीटस—क्यों लड़ते हो। यह सूखी भुजायें कटने ही योग्य हैं।

मार्कस—नहीं, मैं ही अपनी भुजायें भेजूँगा।

टीटस ने यह देख कर कि वे दोनों राज़ी नहीं होते उनसे कहा कि अच्छा तुमही अपनी भुजा भेज दो और तलवार ले आओ। जिस समय लूशियस और मार्कस तलवार लेने गये, टीटस ने जल्दी से एरन द्वारा अपनी भुजा कटवा कर राजा के पास भेज दी। परन्तु वास्तव में राजा ने कोई संदेसा नहीं भेजा था, यह सब एरन की कुटिलता थी। इस लिए जब तक भुजा राजा तक पहुँची टीटस के दोनों लड़कों के सिर काट दिये जा चुके थे, जिनको राजा ने टीटस को दुःख देने के लिए भुजा सहित उसके पास भेज दिया।

अब तो एड्रोनीकस वंश का दुःख क्रोध में बदल गया और उन्होंने दृढ़ विचार किया कि जिस प्रकार हो सके सेटरनीनस से बदला लेना चाहिए। इस कामना की सिद्धि के लिए टीटस का बचा हुआ पुत्र लूशियस रोम को छोड़ कर भाग गया और गाथ लोगों से मिल गया जिससे वह एक दिन बहुत बड़ी सेना लेकर रोम पर आक्रमण कर सके और सेटरनीनस को उसकी कृतघ्नता का स्वाद चखा सके।

अब टीटस, मार्कस, लैवीनिया और लूशियस का लड़का घर पर रह गये और रोरो कर दिन काटने लगे। एक समय जब वे सब भोजन करने के लिए बैठे थे, टीटस ने कहा—

"केवल इतना खाओ जिससे हममें बदला लेने की शक्ति बनी रहे। मार्कस! मैं और तेरी भतीजी दोनों निहत्थे हैं। और हाथ जोड़ कर अपने शोक को प्रकट नहीं कर सकते। मेरा दाहिना हाथ रह गया है, जिससे मैं अपनी छाती पीट लेता हूँ। (लैवीनिया से) बेटी, तू तो इतना भी नहीं कर सकती। हे दुःखियारी अपने दाँतों में चाकू पकड़ कर अपने हृदय में छेद कर ले, जिससे आँखों द्वारा धीरे धीरे निकलने वाले आँसू शीघ्रता से निकल जायँ।

मार्कस—धिक् भाई, धिक्! भला तुम उसे अपने मरने का उपाय क्यों बतलाते हो!

टीटस—हाय! भाई क्या कहते हो। भला इसे क्या सुख है जिससे जीवन प्रिय हो सके।

लूशियस का पुत्र—(रोकर) बाबाजी! आप बुआ को क्यों दुःख दे रहे हैं, कोई अच्छी बात कहिए!

मार्कस—बालक भी शोक के मारे रो रहा है।

टीटस—चुप बालक, चुप! तू तो आँसुओं का बना हुआ है और यह निकल कर तेरे जीवन को समाप्त कर देंगे।

इस समय मार्कस ने थाली पर बैठी हुई मक्खी को चाकू से मार दिया! इस पर टीटस कहने लगा—

"भाई, तू ने बड़ा पाप किया! निरपराधी का मारना टीटस के भाई को उचित नहीं है।"

मार्कस—मैंने केवल एक मक्खी मारी है।

टीटस—क्या इस मक्खी के मा—बाप विलाप न कर रहे होंगे?

मार्कस—क्षमा कीजिए। इसकी शकल तमोरा के प्यारे हबशी की थी, इसलिए मैंने मार दिया।

टीटस—तब तो अच्छा किया!

यह कह कर वह रोने लगा। क्योंकि टीटस बहुत दिनों से पागल होगया था और शोक के मारे उसकी मति भङ्ग हो गई थी।

एक दिन ऐसा हुआ कि जब लूशियस का लड़का किताबें लिये पढ़ रहा था लैवीनिया ने अपने हाथ के ठूठों से *ओविड की बनाई हुई मेटा मोरफोसिस नामी पुस्तक खोली और फ़िलोमिला की कहानी की ओर संकेत किया! टीटस और मार्कस ने फिलोमिला की कथा द्वारा यह समझ लिया कि जो दशा इसकी हुई थी वही लैवीनिया की हुई होगी। क्योंकि फ़िलोमिला को भी

* इटली का एक कवि।

जङ्गल में पकड़ कर उसका धर्म नष्ट किया गया था। परन्तु अब यह जानना था कि किसने ऐसा किया। मार्कस ने अपने दाँतों में क़लम पकड़ कर काग़ज़ पर कुछ लिख कर बतलाया कि लेवीनिया भी बिना हाथों के उस हत्यारे का नाम लिख सकती है। इस प्रकार लेवीनिया ने चीरन और डिमेट्रियस का नाम लिख दिया। इनके देखते ही टीटस की आँखें लाल हो गईं और क्रोध के मारे काँपने लगा। परन्तु मार्कस ने कहा कि भाई यद्यपि हमारे दुःख के कारण नगर भर में ग़दर मच सकता है, क्योंकि ब्रूटस ने इसी घोर पाप के कारण एक समय राजवंश को देश-बाहर कर दिया था, परन्तु इस समय यदि हम कुछ कहेंगे तो तमोरा शीघ्र ही हमारा अन्त कर देगी। इसलिए इस समय चुप ही भली है। हम बदला लेने के दूसरे उपाय करेंगे।

थोड़े दिनों में डिमेट्रियस और चीरन की भी एरन से लड़ाई हो गई; क्योंकि दुष्ट आदमियों में कभी नहीं बन सकती। इस झगड़े का कारण यह था:—

हम कह चुके हैं कि तमोरा का एरन से गुप्त प्रेम था। वह गर्भवती थी। जिस समय उसके लड़का हुआ तो वह ऐसा ही काला था जैसा हबशी! यह देख कर तमोरा डर गई, क्योंकि सेटरनीनस उसे मरवा डालता। इस कारण उसने लड़के को एरन के पास भेज दिया कि इसे मार डालो! एरन ने इसे अपना लड़का समझ कर मारना पसन्द नहीं किया। परन्तु

चीरन और डिमेट्रियस ने अपनी माता का अपमान समझ कर यह लड़का लेना चाहा। एरन की उन से लड़ाई हो गई और वह वहाँ से लड़के को लेकर भाग गया। इस समय उसने धाय को भी मार डाला जिससे कोई बालक पैदा होने की साक्षी देने को बाक़ी न रहे।

जब एरन भागा जा रहा था उस समय लूशियस गाथवालों की बड़ी भारी सेना लिये रोम पर चढ़ाई करने आ रहा था। लूशियस ने एरन को क़ैद कर लिया और साथ साथ रोम को ले आया।

जिस समय टीटस ने लैवीनिया के धर्म नष्ट करने वालों का नाम सुना था वह क्रोध में भर गया था और राजा को दण्ड देने के लिए उसने अपनी कमान से ऐसे तीर छोड़े कि वह राजा के लगे। राजा को बड़ा क्रोध आया और तीरों सहित सभा में आकर रोमन लोगों को टीटस के विरुद्ध भड़काने लगा।

परन्तु उसी समय लूशियस की चढ़ाई की ख़बर मिली। जिसके सुनते ही राजा के घर में अशान्ति फैल गई और उसने अपना अन्त निकट समझ लिया। लेकिन तमोरा ने उसको ढारस दिया, क्योंकि उसे अब भी अपनी चालाकियों से टीटस को फुसलाने की आशा बनी हुई थी।

इस काम को पूरा करने के लिए वह अपने पुत्रों सहित टीटस के घर गई और दरवाज़े पर खटखटाया। टीटस उस समय शायद अपने लड़के के लिए पत्र लिख रहा था। इसलिए उसने उत्तर दिया—

"अरे कौन है जो मुझे इस प्रकार तंग कर रहा है। जो कुछ मुझे लिखना था सो मैं लिख चुका!"

तमोरा—टीटस! मैं तुझसे बात चीत करने आई हूँ।

टीटस—नहीं! नहीं! मैं कुछ बात नहीं कर सकता, क्योंकि उसके अनुकूल करने के लिए मेरे हाथ ही नहीं हैं।

तमोरा—अगर तुम मुझे पहचानते तो अवश्य बातचीत करते।

टीटस—मैं पागल नहीं हूँ। मैं तुझे पहचानता हूँ। महारानी तमोरा मेरा दूसरा हाथ भी लेने आई हैं।

तमोरा—अरे मैं तमोरा नहीं हूँ। वह तो तेरी शत्रु है और मैं मित्र! मैं बदला लेनेवाली देवी हूँ, जिसे पाताल लोक से इसलिए भेजा गया है कि तेरे वैरियों को दण्ड दिया जाय!

टीटस—ये दोनों कौन हैं?

तमोरा—एक का नाम हत्या और दूसरे का नाम भ्रष्टता है।

टीटस—यह तो तमोरा के से पुत्र मालूम होते हैं। पर हमारी आँखें ठीक नहीं रहीं। शायद जो तुम कहती हो

वही सच हो। इन हत्या और भ्रष्टता को मार क्यों न डालो।

तमोरा—नहीं। हत्या हत्यारे को मारेगी और भ्रष्टता उसका नाश करेगी जिसने किसी का सतीत्व नष्ट किया हो!

टीटस—ठीक! अच्छा (चीरन से) तुम अपनी शकल के जिस मनुष्य को देखो उसे मार डालना।

चीरन—अच्छा।

टीटस—(डिमेट्रियस से) और तुम भी।

डिमेट्रियस—बहुत अच्छा।

अब तमोरा चलने लगी। परन्तु टीटस ने कहा कि इन दोनों साथियों को छोड़ जाओ, जिससे मुझे कुछ सहायता हो। मैं अभी अपने पुत्र लूशियस को बुलाता हूँ और राजा को भी निमंत्रित करूँगा। यदि तुम इनको न छोड़ोगी तो मैं अपने बेटे को न बुलाऊँगा।

तमोरा ने यह समझा कि जब लूशियस और राजा सहभोज के लिए आवेंगे तो उनमें मेल हो जायगा। इसलिए वह दोनों लड़कों को वहीं छोड़ गई। परन्तु टीटस ने उन दोनों को मार कर उनके मांस को पकवा लिया।

जब राजा और तमोरा टीटस के घर खाना खाने आये तो उससे कुछ पहले लूशियस भी वहाँ आ गया। उसने एरन की ओर संकेत करके अपने चचा से कहा—

"चचाजी, आप इस हबशी को बिना भोजन दिये क़ैद रखिए। मैं रानी के आने पर इसके पापों की पोथी खोलूँगा। यह बड़ा दुष्ट है!"

थोड़ी देर के बाद खाना परोसा गया और टीटस पाचक के भेस में सब प्रबन्ध करने लगा।

सेटरनीनस ने कहा "टीटस, यह भेस क्यों धरा है?"

टीटस—इसलिए कि आपको कुछ कष्ट न हो और आपके भोजनों का यथोचित प्रबन्ध हो जाय।

तमोरा—हम आपके कृतज्ञ हैं।

टीटस—राजन्! क्या वर्जीनियस ने अपनी पुत्री को असतीत्व से बचाने के लिए मार डालने में कुछ बुरा किया?

सेटरनी०—नहीं!

टीटस—क्यों!

सेटर०—इस लिए कि उसका असती होकर जीना लज्जा-प्रद था!

टीटस ने "ठीक" कह कर लैवीनिया को वहीं पर मार डाला!

सेटरनी०—अरे दुष्ट! क्या किया!

टीटस—मार डाला। क्योंकि इसके दुःख में रोते रोते मेरी

आंखें अन्धी हो गईं। मुझे भी वही दुःख है जो वर्जीनियस* को था। अब इसकी समाप्ति हो गई।

सेटर०—इसका सतीत्व किसने नष्ट किया ?

टीटस—आप भोजन पाइए!

सेटर०—अपनी बेटी को क्यों मारा ?

टीटस—मैंने नहीं मारा। चीरन और डिमेट्रियस ने उसका सतीत्व नष्ट किया और जीभ और हाथ काट लिये।

सेटरनी०—अच्छा। उनको बुलाओ।

टीटस ने मांस की ओर उँगली उठाकर कहा कि "देखिए वे दोनों यहाँ उपस्थित हैं। इन्हीं का मांस तो आप खा रहे हैं।

---

* वर्जीनियस रोम का एक मनुष्य था जिसकी युवती और रूपवती कन्या वर्जीनिया पर एपियस नामी एक मजिस्ट्रेट मोहित था। जब वर्जीनिया उसके हाथ न लग सकी तो उसने क्लौडियस नामी एक दूसरे मनुष्य से अपनी कचहरी में एक अर्ज़ी दिलवाई कि वर्जीनिया मेरे ग़ुलाम की लड़की है और वर्जीनियस झूठ मूठ अपनी लड़की बताता है। इस मुक़द्दमे को एपियस ने क्लौडियस के अनुकूल निश्चित किया और लड़की क्लौडियस को मिल गई। जब वर्जीनियस को अपनी कन्या के सतीत्व और जीवन दोनों के बचाने का कोई उपाय न रहा तो उसने जीवन के बदले सतीत्व बचाना ही उचित समझा और उसको झट से क़साई की एक दूकान में खींच कर चाक़ू से मार डाला! मारते समय उसने कहा—"प्यारी बेटी मैं इस उपाय के सिवा किसी तरह तेरा धर्म नहीं बचा सकता।"

तमोरा ! आप उसी मांस को खा रही हैं जो आपके उदर से निकला था ।"

यह कहकर टीटस ने तमोरा को मार डाला ! तमोरा को मारते देखकर सेटरनीनस ने टीटस को समाप्त कर दिया । इस पर लूशियस ने सेटरनीनस को ठण्डा कर दिया ।

अब रोमवालों ने सर्वसम्मति से लूशियस को राजा बनाया, जिसने अपने पिता तथा बहन और राजा का आदर-पूर्वक मृतक-संस्कार किया । परन्तु तमोरा की लाश फेंक दी गई और उसका काला लड़का भी मार डाला गया ! एरन भी दुर्गति करके मारा गया । इस प्रकार तमोरा और एरन को अपने किये की सज़ा मिली और एण्ड्रोनीकस वंश को देश-सेवा के बदले राज्य मिला ।



ट्रोइलस और क्रैसीडा।

Troilus and Cressida.

एशिया कोचक के पश्चिमोत्तरी कोने में पुराने समय में ट्रोय (Troy) नामी एक प्रसिद्ध नगर था, जहाँ का राजा प्रियम था, प्रियम के पाँच लड़के थे, जिनके नाम ये हैं—हैक्टर, ट्रोइलस, पेरिस, डैलाफ़ोबस और हैलीनस। पेरिस एक बार स्पार्टा में जाकर वहाँ के राजा मैनीलस की स्त्री हैलिन को जहाज़ में बिठा कर हर लाया! इस पर यूनान की सब रियासतें बिगड़ गईं और बड़ी भारी तैयारी कर के ट्रोय पर आक्रमण कर दिया। इस सेना में अगामैम्नन, अजाक्ष, अकीलिस, उलीसिस, नैस्टर, डाइमोडीस, पैट्रोक्लस आदि बड़े बड़े योद्धा थे। इन सब ने ट्रोय को चारों ओर से घेर लिया*।

ट्रोय के एक पुजारी कालकस की पुत्री क्रैसीडा बड़ी रूपवती थी और राजकुमार ट्रोइलस उसके रूप पर मोहित था।

---

*इस आक्रमण का पूर्ण वृतान्त यूनान के प्रसिद्ध महाकवि होमर ने अपने महाकाव्य इलियड (Illiad) में लिखा है।

क्रैसीडा यद्यपि ट्रोइलस से प्रसन्न थी परन्तु वह अपने मन के हावभाव को कभी किसी पर प्रकट नहीं करती थी, जैसा कि स्त्रियों का क़ायदा है। ट्रोइलस क्रैसीडा के चचा पण्डारस के द्वारा अपनी प्रेयसी की प्राप्ति का उपाय किया करता था। परन्तु जब पण्डारस क्रैसीडा के पास जाकर ट्रोइलस के गुणों तथा वीरता का वर्णन करता तो क्रैसीडा सुनी अनसुनी करके उसका तिरस्कार किया करती थी।

एक दिन क्रैसीडा अपने नौकर के साथ नगर की एक गली में तमाशा देखने के लिए खड़ी हुई थी; क्योंकि उसी ओर होकर लड़ाई से पलटे हुए योद्धा गुज़रने वाले थे। इतने में उसने दो स्त्रियाँ निकलती हुई देखीं। क्रैसीडा ने पूछा—"ये कौन हैं"।

नौकर—महारानी हक्यूबा* और हैलिन।

क्रैसीडा—ये कहाँ जा रही हैं?

नौकर—पूर्वी महल को। वहाँ से ये लड़ाई की बहार देखेंगी। आज हैक्टर बड़े क्रोध में हैं।

क्रैसीडा—क्यों?

नौकर—कहते हैं कि यूनानियों की सेना में हैक्टर का भानजा है, जिसका नाम अजाक्स है।

क्रैसीडा—तो क्या!

---

*हक्यूबा प्रियम की स्त्री थी!

नौकर—वह एक वीर पुरुष है ! वह अपनी ही टाँगों खड़ा होता है !

कैसीडा—यह कौनसी वीरता है ? सब अपनी टाँगों खड़े होते हैं, अगर वे नशे में न हों, या रोगी न हों या लँगड़े न हों !

नौकर—देवि ! इसने बहुत से पशुओं के गुण छीन लिये हैं । वह सिंह के समान वीर है ग्रौर हाथी के समान मन्द !

कैसीडा—मुझे तो इन बातों से हँसी आती है । फिर हैकृर क्यों नाराज़ हो गया ?

नौकर—कहा जाता है कि कल उसने रणक्षेत्र में हैकृर को पछाड़ दिया, जिसकी लज्जा के कारण हैकृर न तो सोया ग्रौर न उसने भोजन किया ।

कैसीडा—हैकृर बड़ा वीर है ?

नौकर—हाँ !

इस समय पण्डारस भी उसी स्थान पर आ गया ग्रौर कहने लगाः—

कैसीडा ! तुम क्या बातें कर रही हो ?"

कैसीडा—यही कि हैकृर नाराज़ है ।

पण्डारस—हाँ यह बात ठीक है । मुझे उसके नाराज़ होने का कारण भी मालूम है । आज वह उसे अवश्य

पछाड़ेगा ! आज ट्रोइलस भी गया है। वह भी अपने बड़े भाई से पीछे नहीं रहेगा !

क्रैसीडा—क्या वह भी नाराज़ है ?

पण्डारस—कौन ? ट्रोइलस ? ट्रोइलस इन दोनों में अधिक वीर है।

क्रैसीडा—मेरे भगवान् ! यह तुलना नहीं हो सकती !

पण्डारस—क्या ट्रोइलस और हैक्टर में भी तुलना नहीं हो सकती ? क्या तुम किसी आदमी को देखकर पहचान सकती हो ?

क्रैसीडा—हां ! अगर पहले देखा हो !

पण्डारस—हां तभी तो मैं कहता हूँ कि ट्रोइलस ट्रोइलस ही है।

क्रैसीडा—यही तो मैं कहती हूँ कि वह हैक्टर नहीं है।

पण्डारस—हां और हैक्टर ट्रोइलस नहीं है।

क्रैसीडा—यह सच है। एक दूसरा नहीं हो सकता।

पण्डारस—हैक्टर ट्रोइलस से अच्छा नहीं है।

क्रैसीडा—क्षमा करो।

पण्डारस—वह केवल बड़ा है।

क्रैसीडा—क्षमा करो ! क्षमा करो !

पण्डारस—हैक्टर में उसके से गुण भी नहीं हैं।

क्रैसीडा—क्या हानि ?

पण्डारस—और न रूप है।

क्रैसीडा—यह बात नहीं है।

जिस समय ये बातें होही रही थीं हैक्टर, पेरिस, ट्रोइलस इत्यादि उसी गली के निकट होकर निकले। ये लोग रणभूमि से आ रहे थे और अस्त्र, शस्त्र तथा कवच धारण किये हुए थे। पण्डारस ने ट्रोइलस की ओर संकेत करके उसकी बड़ी प्रशंसा की और क्रैसीडा का चित्त उसकी ओर आकर्षित किया।

पण्डारस के द्वारा ट्रोइलस और क्रैसीडा का सम्बन्ध निश्चित हो गया। हम ऊपर बता चुके हैं कि क्रैसीडा वास्तव में ट्रोइलस से प्रेम करती थी, परन्तु मान के कारण इसे प्रकट नह करती थी। अपने चचा का संकेत पाकर उसने झट ट्रोइलस से विवाह करना स्वीकार कर लिया और जिस समय ये दोनों स्त्री पुरुष रंगरलियों में लगे हुए थे एक ऐसी दुर्घटना हुई, जिस के कारण बड़ी कठिनाई से मिले हुए प्रेमियों का फिर वियोग हो गया। इसका हाल हम आगे लिखेंगे।

यूनानी सेना को ट्रोय में पड़े हुए बहुत दिन हो गये थे। उन्होंने चारों ओर से इसे घेर लिया था और ट्रोय-निवासियों का नाक में दम था। एक दिन ट्रोय-नरेश प्रियम ने अपने सब पुत्रों को बुलाकर युद्ध के विषय में उनकी सम्मति माँगी। क्योंकि

यूनानी जनरल नैस्टर का संदेसा आया था कि या तो हैलिन को वापस देदो और जो कुछ हमारा नुक़सान हुआ है उसका प्रतीकार कर दो; नहीं तो हम तुम्हारे नगर को जला कर राख में मिला देंगे। इसके अतिरिक्त प्रियम की एक लड़की कैसेण्डरा, जो फलित ज्योतिष की विदुषी थी, यही कह रही थी कि राजन् युद्ध में तुम्हारी पराजय होगी। इन सब कारणों से प्रेरित होकर राजा ने पहले हैक्टर से पूछा कि "तुम्हारी क्या राय है?"

हैक्टर—श्रीमन्! मुझे यूनानियों का कुछ भी भय नहीं है। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि युद्ध का भविष्यत् संदिग्ध है। कौन जानता है कि कल क्या हो। इसलिए हैलिन को जाने दो। वे सब आदमी जो हैलिन के लिए रण में काम आये हैं, हैलिन से अधिक उपकारी थे। एक ऐसी चीज़ की रक्षा के लिए जो न तो हमारी है और न रखने योग्य है इतनी जानों का नाश कर देना उचित नहीं है। इसलिए मेरे विचार में तो यही आता है कि आप हैलिन को वापस भेज दें"।

ट्रोइलस—धिक्कार है भाई। तुम ऐसे ऐश्वर्य्यवान् राजा के गौरव को ऐसा तुच्छ समझते हो। क्या महाराज के अनन्त यश को आप कौड़ियों से नापते हैं। धिक्! धिक्!

हैक्टर—भाई! यह इस योग्य नहीं है कि इसके लिए इतनी हानि उठाई जाय।

ट्रोइलस—इससे क्या होता है? यदि आज मैं किसी स्त्री से विवाह करूँ तो मैं उसे अपनी इच्छा के अनुसार पसन्द करूँगा। और यदि कल को मुझे वह अच्छी न लगे तो क्या लौटा दूँगा। हम लोग एक बार बज़ाज़ से रेशम लेकर फिर उसे लौटा नहीं देते। पहले यही उचित समझा गया था कि पेरिस यूनान में जाकर यूनानियों से उनके इस अपराध का बदला ले कि वे एक वृद्ध स्त्री को यहाँ से क़ैद कर ले गये थे। पेरिस आप सब की सलाह से यूनान में गया और एक ऐसी सुन्दर और रूपवती रानी को भगा लाया जिस पर देवता भी मोहित होते हैं। अब आपही कहते हैं कि क्या यह रखने योग्य है? हाँ अवश्यमेव! वह एक ऐसा मोती है जिसका मूल्य हज़ारों जहाज़ों से भी बढ़कर है। यदि आप कहते हैं कि पेरिस ने यूनान जाने में बड़ी बुद्धिमत्ता की (आप को यह कहना पड़ेगा क्योंकि आप सब कहते थे कि पेरिस जाओ!) पेरिस जाओ! और यदि आप कहते हैं कि पेरिस एक बहुमूल्य रत्न ले आया (यह भी आपको स्वीकार करना पड़ेगा क्योंकि हैलिन के आते समय आप सबने हर्ष प्रकाशित किया

था) तो फिर आप किस मुँह से उसे लौटाना चाहते हैं।

जब ट्रॉइलस यह कह रहा था कैसेण्डरा वहाँ पर आगई और अपनी भविष्यद्वाणी कहने लगी—

"अब ट्रोय और ट्रोयवासी कोई न बचेंगे क्योंकि हमारा भाई पेरिस सबका दाह किये देता है। अरे हैलिन को जाने दो नहीं तो ट्रोय की ख़ैर नहीं है!"

हैक्टर—वीर ट्रॉइलस! क्या हमारी बहन की भविष्यद्-वाणी यह नहीं कह रही कि हम देश की रक्षा करने में सफल न होंगे!

ट्रॉइलस—भाई! बहन के उन्मत्त प्रलाप का विश्वास नहीं करना चाहिए। वह तो योंही कहा करती है। ऐसा करने से हमारी मानहानि होती है।

पेरिस—आप विचारिए तो ऐसा करने में मेरी भी मान-हानि होगी। ईश्वर जानता है कि आप सबकी सलाह से मैंने यह काम किया था। आप जानते हैं कि मेरी अकेली भुजायें क्या कर सकती हैं? परन्तु यदि मुझ में इच्छा के समान शक्ति भी होती तो मैं अपने किये को अनकिया करने को तैयार नहीं हूँ।

प्रियम—पेरिस! तुम तो अपने आनन्द के मारे कहते हो।

तुम्हारी वीरता ऐसी प्रशंसनीय नहीं है; क्योंकि तुम्हारा तो इसमें हित है।

पेरिस—श्रीमन्, मैं अपने स्वार्थ से नहीं कहता। हममें कौन ऐसा कायर है जो हैलिन की रक्षा के लिए रक्त बहाने को उद्यत न हो? अब यहाँ यश और अपयश का प्रश्न है।

उपर्युक्त वाद-विवाद के पश्चात् यही निश्चय हुआ कि लड़ाई जारी रखनी चाहिए। और हैक्टर ने ईनियस नामी सेनापति को दूत करके यूनानियों के समीप भेजा कि तुम जाकर उनसे कह दो कि यदि कोई योद्धा यूनान में ऐसा हो जो अपने प्राणों को अपने यश से तुच्छ समझता हो तो मैं उससे धर्म-युद्ध करना चाहता हूँ।

हैक्टर के इस आवाहन को अजाक्ष ने स्वीकार कर लिया, जिस के विषय में हम ऊपर कह चुके हैं कि वह प्रियम की बहन का लड़का था और यूनानियों से जा मिला था।

क्रैसीडा का पिता काल्कस कैसेण्डरा की भाँति एक ज्योतिषी था। उसने भी जान लिया था कि ट्रोय का सर्वनाश होने वाला है। इसलिए वह आरम्भ से ही ट्रोय से भाग कर यूनानियों से जा मिला था और उनकी बहुत कुछ सेवा की थी, जिसके बदले में अगामैम्नन ने, जो यूनानी सेना का अध्यक्ष था, उसे मुँहमाँगा इनाम देने के लिए कहा था। अब काल्कस की यह इच्छा हुई

कि किसी प्रकार अपनी पुत्री क्रैसीडा को भी बुला लेना चाहिए। उस समय भाग्यवश यूनानियों ने ट्रोय के एक वीर सेनापति एण्टीनर को क़ैद कर लिया। ट्रोय वाले सर्वस्व देने के लिए तैयार थे यदि उनको एण्टीनर वापस मिल जाय। क्योंकि वह बड़ा भारी योद्धा था। इसके अतिरिक्त यूनानियों ने ट्रोय वालों से कई बार क्रैसीडा को माँगा था, परन्तु वह उसे देना स्वीकृत नहीं करते थे। अब काल्कस ने अगामैम्नन से प्रार्थना की कि आप कृपा करके मेरी सेवा के बदले मुझे एक वर दीजिए, अर्थात् एण्टीनर के बदले क्रैसीडा को माँग लीजिए। मुझे विश्वास है कि वे अवश्य क्रैसीडा को देकर एण्टीनर को लेना पसन्द करेंगे।

अगामैम्नन ने काल्कस की प्रार्थना स्वीकार कर ली और एक यूनानी जनरल डाइमीडीस से कहा कि तुम क्रैसीडा को ले आओ।

ट्रोय वाले इस बात पर राज़ी होगये और क्रैसीडा को देने की तैयारियाँ होने लगीं।

क्रैसीडा इस समय अपने प्यारे के साथ बैठी बातचीत का सुख प्राप्त कर रही थी कि उसका चचा पण्डारस हाय हाय करता हुआ वहाँ पहुँचा। क्रैसीडा घबरा कर कहने लगी—

"प्यारे चचा! क्या बात है? आप क्यों इस प्रकार दुःखी हैं।"

पण्डारस—आज यदि मैं मर जाता तो अच्छा होता !

क्रैसीडा—क्यों ! क्यों !

पण्डारस—अच्छा होता अगर तू जन्मते ही मर जाती। हाय हाय ! अब ट्रोइलस पर कैसी बीतेगी ! दुष्ट एण्टीनर का सत्यानाश हो।

क्रैसीडा—क्यों ! क्यों ?

पण्डारस—अब तुझे जाना होगा ! अब तुझे जाना होगा ! एण्टीनर के बदले तुझे दे दिया है। अब तू अपने बाप के पास जाती है। ट्रोइलस से अब तेरा मिलना न होगा।

क्रैसीडा—हे भगवन् ! मैं नहीं जाने की।

पण्डारस—तुझे जाना पड़ेगा।

क्रैसीडा—मैं नहीं जाऊँगी। मैं तो अपने पिता को भूल गई। अब ट्रोइलस के समान मेरा कोई हितू नहीं है। चाहे मेरे प्राण ही क्यों न जायँ मैं ट्रोय से नहीं जाऊँगी !

अब वह ट्रोइलस से कहने लगी—"क्या यह सच है कि मुझे ट्रोय से जाना होगा !"

ट्रोइलस—(उदास होकर)—हाँ सच है।

क्रैसीडा—क्या ट्रोइलस से भी ?

ट्रोइलस—ट्रोय और ट्रोइलस दोनों से !

अभी ये बातें हो ही रही थीं कि ईनियस और डाइमेडीस क्रैसीडा को लेने के लिए वहाँ पर आगये। क्रैसीडा कहने लगी—

"क्या अब मैं यूनान को जाऊँगी?

ट्राइलस—कुछ उपाय नहीं है।

क्रैसीडा—क्या अभागी क्रैसीडा प्रसन्नचित्त यूनानियों के घर जायगी! हाय! अब तुमसे कब भेंट होगी?

ट्राइलस—प्यारी सच्ची रहना!

क्रैसीडा—मैं सच्ची! यह क्या?

ट्राइलस—क्षमा करो! मैं जानता हूँ कि तुम्हारे हृदय में कोई कपट नहीं है। परन्तु चलते समय मैं तुझ से प्रतिज्ञा करता हूँ कि यदि तू सच्ची रहेगी तो मैं तुझ से अवश्य भेंट करूँगा।

क्रैसीडा—मैं तो सच्ची रहूँगी। परन्तु आप को आने से बड़ी आपत्ति का सामना करना होगा!

ट्राइलस—मैं इस दस्ताने को देता हूँ। इसे अपने पास रक्खो। तुम्हारे मिलने के लिए मैं हर एक आपत्ति को तुच्छ समझता हूँ।

क्रैसीडा—आप भी इस दस्ताने को रखिए। अब तुम कब मिलोगे?

ट्रोइलस—मैं यूनानी द्वारपालों को फुसला कर रात के समय तुम्हारे पास आया करूँगा ! परन्तु सच्ची रहना।

क्रैसीडा—हाय हाय ! फिर वही बात !

ट्रोइलस—मैं ये सब बातें इसलिए कहता हूँ कि यूनान के लोग बड़े योग्य, सुन्दर, शान्त-चित्त, नीरोग तथा प्रेमशाली हैं। इसलिए मुझे डर लगता है कि कहीं तुम्हारा मन विचलित न हो जाय।

क्रैसीडा—शिव ! शिव ! तुम मुझ से प्रेम नहीं करते !

ट्रोइलस—यदि ऐसा हो तो ईश्वर मेरा बुरा करे। ऐसा कहने से यह तात्पर्य्य नहीं है कि मुझे तुम्हारे सतीत्व पर सन्देह है, किन्तु अपनी योग्यता पर। मुझे ऐसी बातें बनाना नहीं आतीं जैसी यूनानियों को। इस-लिए उनके छल में न फँस जाना।

क्रैसीडा—क्या तुम समझते हो कि मैं फँस जाऊँगी ?

ट्रोइलस—नहीं नहीं ! परन्तु मनुष्य कभी कभी धोखा खा जाता है।

अब इन दोनों के बिछुड़ने का समय आया और क्रैसीडा डाइमोडीस के हवाले कर दी गई।

जिस समय क्रैसीडा यूनानी कैम्प में पहुँची, वे लोग बहुत ख़ुश हुए और उसका बड़ा आदर किया गया। कालकस अपनी

पुत्री को देख कर बड़ा आनन्दित हुआ और क्रैसीडा डाइमो-डीस के संरक्षण में रहने लगी।

हम ऊपर कह चुके हैं कि अजाक्ष और हैक्टर का मल्लयुद्ध होनेवाला था। अब उसका समय निकट आ गया और नियत स्थान पर अखाड़े में वे दोनों योद्धा कवच धारण किये हुए आ गये। इनके अतिरिक्त दोनों दलों के प्रसिद्ध वीर पुरुष तमाशा देखने के लिए वहाँ उपस्थित हुए। अखाड़े में आते ही दोनों की मुठभेड़ हुई और दोनों एक दूसरे पर झपट करने लगे। परन्तु युद्ध समान रहा और अन्त में दोनों एक दूसरे का आलिङ्गन करके अलग हुए।

इसके पश्चात् हैक्टर ने यूनानी कैम्प में भोजन किया और सब लोगों से भेंट की। हैक्टर के साथ उसका छोटा भाई ट्रोइलस भी था, जिसने अपनी प्रियतमा क्रैसीडा से भेंट करने का प्रण कर रक्खा था। जब अन्य ट्रोय-निवासी वहाँ से चले आये तो ट्रोइलस रह गया और उलीसिस से कहने लगा—

"श्रीमन् उलीसिस! कृपा करके मुझे बतलाइए कि काल्कस कहाँ रहता है।"

उलीसिस—राजकुमार ट्रोइलस! काल्कस इस समय मैनीलस के डेरे में रहता है। डाइमीडिस भी आज कल वहीं है जिसकी दृष्टि न आकाश की ओर उठती

है और न भूमि पर पड़ती है, किन्तु निरन्तर रूपवती क्रैसीडा के ही मुख पर लगी रहती है।

ट्रोइलस—क्या श्रीमान् मेरे ऊपर इतनी दया करेंगे कि मुझे कालकस के स्थान तक पहुँचा दें।

उलीसिस—मैं सब तरह आपका सेवक हूँ। परन्तु यह तो बताइए कि आपके ट्रोय में क्रैसीडा का कैसा सम्मान होता था? क्या वहाँ उसका कोई ऐसा प्यारा नहीं है जो उसकी अनुपस्थिति पर आज शोक कर रहा हो?

ट्रोइलस—कृपा करके मुझे ले चलिए। उसके प्यारे थे जिन से वह भी प्यार करती थी और वे अब भी हैं, वह अब भी उनको प्यार करती है। परन्तु बात यह है कि सुख वही भोगता है जिसका भाग्य हो!

अब वे दोनों कालकस के स्थान को चल दिये। ट्रोइलस का हृदय धीरे धीरे धड़क रहा था, जिस प्रकार किसी बड़े उत्सुक पुरुष की दशा होती है जब कि उसकी अभीष्ट वस्तु प्राप्त होने वाली हो! ट्रोइलस को आशा थी कि जिस प्रियतमा का वह बहुत दिनों से चिन्तन कर रहा था उससे अब भेंट होगी। परन्तु मनुष्य सोचता कुछ है और होता कुछ और है। दैवगति विचित्र है। भावी को किसी ने नहीं देखा।

जिस समय ट्रोइलस कालकस के डेरे से थोडी दूर पर पहुँचा, उसने देखा कि क्रैसीडा और डाइमोडीस अगाध प्रेम के

साथ मुँह पर मुँह रक्खे हुए बातें कर रहे हैं। ट्रोइलस ने दूर से इतनी बात सुनी—

डाइमोडिस—कहो प्यारी क्रैसीडा!

क्रैसीडा—प्यारे संरक्षक! एकान्त में एक बात सुनिए।

यह गुप्त वार्तालाप ट्रोइलस के कानों तक न पहुँच सका, परन्तु उसे मालूम हो गया कि जिस क्रैसीडा पर पहले उसे शंका होती थी और जिससे वियोग के समय उसने न भूलने और सच्ची रहने के लिए प्रतिज्ञा कराई थी वही क्रैसीडा उस शत्रु से ऐसा व्यवहार करने लगी मानों ट्रोइलर [illegible] सामने कुछ भी न था अथवा ट्रोइलस को उसने कभी नहीं देखा था। उसके मन को बड़ी चोट लगी। फिर उसने सुना—

डाइमोडीस—याद रखना।

क्रैसीडा—याद? अवश्य! अवश्य!

डाइमोडीस—याद रखना और अब भी बात का पालन करना।

क्रैसीडा—प्यारे यूनानी! इससे अधिक मुझे न फुसला।

डाइमोडीस—तो नहीं—

क्रैसीडा—मेरी बात तो सुनो।

डाइमोडीस—तुम झूठी हुई जाती हो!

क्रैसीडा—कदापि नहीं! तुम मुझ से क्या चाहते हो?

डाइमोडीस—तुमने मुझे क्या देने के लिए कहा था?

क्रैसीडा—उस बात को जाने दो, और जो चाहो सो करूँ।

डाइमोडीस—अच्छा! प्रणाम!

क्रैसीडा—डाइमोडीस!

डाइमोडीस—नहीं! नहीं! अब मैं जाता हूँ। मैं तुम्हारी चालों में न आऊँगा!

क्रैसीडा—कान में एक बात सुन लो!

अब उसने कुछ कान में कहा। इस पर डाइमोडीस क्रुद्ध होकर चलने लगा। तब क्रैसीडा बोली—

“तुम [illegible] से जाते हो। एक बात और सुनते जाओ।”

डाइमोडीस—तो क्या तुम अपने वचन को पालोगी?

क्रैसीडा—न पालूँ तो कभी विश्वास न करना।

डाइमोडीस—अच्छा कुछ चिह्न दो।

क्रैसीडा—(ट्राइलस का दिया दस्ताना देकर) लो इस दस्ताने को रक्खो!

अब क्रैसीडा को ट्राइलस का ख़्याल आ गया और दस्ताने को पीछे हटा कर कहने लगी—

“वह मुझे प्यार करता था। मैं अब इसको न दूँगी।”

डाइमोडीस—यह किसका है?

क्रैसीडा—इससे क्या प्रयोजन! अब मेरे पास न आना! यहाँ से चले जाओ!

डाइमोडीस—मैं इसे लेकर जाऊँगा।

क्रैसीडा—क्या इसे ?

डाइमोडीस—हाँ इसे !

क्रैसीडा०—(दस्ताने को चूमकर)—तेरा स्वामी आज अकेला पलँग पर पड़ा हुआ मेरी और तेरी याद कर रहा होगा ! और मेरे दस्ताने को इसी प्रकार चूम रहा होगा जैसे मैं तुझे ! (डाइमोडीस से) इसे मत लो ! मैं तुमको और चीज़ दूँगी ।

डाइमोडीस—मन तो दे चुकीं अब इसको भी देदो ।

क्रैसीडा—नहीं दूँगी ।

डाइमो—मैं तो लूँगा । यह किस का है ?

क्रैसीडा०—मैं नहीं कहूँगी ।

इस झंझट के बाद क्रैसीडा ने दस्ताना दे दिया और ट्रोइलस का हृदय जो इस दुःखदायी दृश्य को दूर से देख रहा था टूक टूक हो गया और बिना प्रिया से भेंट किये ही वह वहाँ से चल दिया । सच बात तो यह थी कि क्रैसीडा अब ट्रोइलस की प्रिया ही नहीं थी ; किन्तु उसका चित्त डाइमोडीस की ओर लग गया था ।

ट्रोइलस के वहाँ से चले आने पर कुछ दिनों पीछे यूनानी और ट्रोय के दलों में बड़ा भारी युद्ध हुआ । हैक्टर मारा गया । ट्रोय वालों के बहुत से आदमी काम आये और यूनानियों की विजय हुई ! ट्रोय का नाश हो गया !

॥ इति ॥